मैथिली कथा संग्रह

ओ मौहि रातिक भोर

अशोक

भाखा प्रकाशन
पटना

ओहि रातिक भोर

[मैथिली कथा संग्रह]

अशोक

भाखा प्रकाशन
पटना

भाखा प्रकाशनक दसम् पोथी

प्रकाशक :

भाखा प्रकाशन
श्री राम भवन
एक्जीविशन रोड
पटना-800 001

प्रकाशन वर्ष : अप्रील 1991

मूल्य : बीस टाका

संस्करण : पहिल

मुद्रक :
मित्रम् प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स
नयाटोला, भिखना पहाड़ी,
पटना—800 004

A COLLECTION OF MAITHILI SHORT STORIES

OHI RAATIK BHOR

By

ASHOK

PRICE Rs. 20/- ONLY

समर्पण



स्व० सुशोल झा
(पूर्व प्रधानाचार्य एल० एन० जनता महाविद्यालय
झंझारपुर, मधुबनी)

भाइ,

अहींके ई पोथी

'ओहि रातिक भोर'

—अशोक

प्रकाशकीय

मैथिली साहित्य भरल-पुरल रहय एहि लेल आवश्यक छैक विभिन्न बिधामे नीक-नीक पोथी अबैत रहैक। कोनो भाषाक प्रियता तखने बढ़तैक जखन ओकरा लोक पढ़तैक। 'भाखा प्रकाशन' एहि दिशामे पूर्वतीन वर्षसँ कार्यशील अछि।

एखन तक प्रकाशन जे कोनो पोथी बहार कयलक अछि ओकर एकटा फराक महत्व रहलैक अछि। एही क्रममे आइ आठम दशकक कथाकार अशोकक 'ओहि रातिक भोर' कथा-संग्रह प्रकाशित करैत हर्षित अछि।

मैथिली साहित्यक आठम दशकक पीढ़ीमे अशोक अपन कथा शिल्प ओ शब्दक सहज प्रयोगक कारणे एकटा बेछप नाम रहल अछि। कोनो विषयकेँ नव परिधि मे रखबामे ओ माहिर रहलाह अछि, संगहि हुनक कथाक विशेषता थिक सुरुचिता जे कथाकेँ लोक-लोक तक जयबामे सुगम कयलक अछि।

भाखा प्रकाशनक सभसँ पैघ सबल छैक पाठकक अपार स्नेह। ओकरे बलें एकर पुष्प फुलाइत रहलैक अछि। एही स्नेहक आशासँ पुनः पुनः आबि रहल छी आ भविष्योमे आयब।

— अमिय कुमार झा

प्रसंगवश

हमरा सभक ई महान देश लगभग डेढ़ सौ बरख धरि पराधीन रहि वर्ष १९४७मे राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त कयलं। हम सभ ई खूबे जनैत छी जे कोन-कोन आ कतेक कारणसँ आर्थिक स्वाधीनताक गप्प करबाक उपयुक्त समय अखनो नहि आयल अछि। स्वतन्त्रता-प्राप्तिक बाद स्वतंत्रता-संग्राममे सर्वाधिक सक्रिय आ समादृत राजनीतिक दल शासनक सिंहासनपर आरुढ़ भेल। व्यवस्था-व्यापारमे लगिते एहि दलकेँ अपन पूर्वक कतोक सस्कारकेँ त्यागि देब सुविधाजनक लगलै, तथापि अपन पूर्व-अर्जित विश्वसनीयताक बलपर यथार्थत: सामान्य-जन-विरोधी शासकीय चेतनाक अछैतो ई दल बीस बरखक अवधि निरापद ढंगसँ काटि देल। सातम दशकमे पहिल बेर विक्षुब्ध जन समूहक आंतरिक आक्रोशक व्यापक रूपसँ सामूहिक प्रदर्शन भेल जकर धक्का नेहरू-विहीन शासक दल लेल बर्दास्त करब कठिन भऽ गेलैक। क्रमे-क्रमे असफल होइत योजना, विकासक नामपर दिन-प्रतिदिन विदेशमे बिकाइत देश आ रोज-रोज बढ़ल जाइत दरिद्रक पाँति, छोट-छोट स्वार्थक डोरिसँ बान्हायल राजनीतिक दल सभक बीच विभक्त जनमानस आ संघर्षक आकांक्षा रखितो कुंठित भेल जाइत जन-चेतना सातम दशकक किछु एहन सत्य छल जे एहि दशकक कथाकेँ सचेष्ट किंतु उद्विग्न चेतना आ उत्तेजित स्वर प्रदान करबामे समर्थ भेल। एहि दशकक एकटा आर रेखांकित करबा जोगर सत्य छल आर्थिक स्वाधीनता लेल एहि देशक औनाइत जन-चेतनाक नक्सल बाड़ी बनि मूर्त हैब आ आर्थिक पराभवकेँ शाश्वत बनौनिहार समुदाय द्वारा आवश्यकतासँ अधिके सतर्क हैब।

सातम दशकक भारतीय कथा-साहित्यमे सामाजिक सम्बोधन आ संगे-संग आत्मनिरीक्षणक काज गंभीरतापूर्वक आरम्भ भेल। वैचारिक दिशाहीनताक कारण लौकिक विवादक वैयक्तिक आ मनोवैज्ञानिक व्याख्या संग प्रस्तुतियो कम नहि भेल। मुदा प्रकट संघर्षक कतोक शर्त्तपूर रहितो वास्तविक संघर्षक आक्रामक चेतना कतौ साकांक्ष ढंगसँ देखार नहि भेल। बुझा पड़त जे सातम दशकक भारतीय कथा कि मैथिली-कथाकेँ युगीन विचारक प्रौढ़ि तऽ हासिल भेलैक, मुदा निश्चित सामाजिक-राजनीतिक दृष्टिक अभावमे व्यवस्थाक कोनो व्यवस्थित एवं विश्वसनीय प्रतिरोध लेल उचित आधारभूमि दिस संकेत करब ओकरा लेल संभव नहि भेलैक।

परिवर्त्तनक प्रबल आकांक्षा रखितो विरोधमे हाथ उठा लेबाक मनःस्थिति ओहि कालक कथामे परिलक्षित नहि होइछ। लोकक मौन घोर अवश्य भऽ गेल रहैक। तथापि ओ कतोक मूल्यगत अनुशासन तथा दृष्टित छद्मशालीनताक आवश्यकताकेँ नकारि नहि सकल।

आठम दशकमे लोक-चिंताक प्रकृत चरित्र बदलय लागल। लोकक सामाजिक बोध सङ आर्थिक-राजनीतिक दृष्टि पर्याप्त स्फीत भेलैक आ ओ अपन हित-अहितक सङ अपन आनक बीच स्थापित सम्बन्ध द्वैधकेँ फरिछा कऽ बूझि सकल। ओकरा लग ई स्पष्ट भऽ गेलैक जे भुखायल पेट आ नाङट देह लेल रोटी आ वस्त्रक जोगाड़ आ ओहि जोगाड़मे बाधक बनैत वर्गक वास्तविक परिचय सर्वोच्च प्राथमिकता रखैत छैक। सूत्र रूपमे एना कहल जा सकैछ जे लोकमे आ लोक चिंतामे वर्गीय दृष्टि नीक जकाँ देखार भेलैक आ लोक लग ई स्पष्ट भऽ गेलैक जे ओ रास्ता राजप्रासाद दिस नहि जाइछ जाहि रस्तामे सामान्य लोकक चौपाल पड़ैत छैक। लोकक आगाँ ईहो फड़ीछ भऽ गेलैक जे वर्ग-विरोधमे काँखि देखार कऽ हाथ उठायब अनिवार्य होइत छैक। ओ ई सेहो जानि गेल जे नाना देश, नाना धर्म आ जातिमे बाँटल मनुक्खक वस्तुतः दुइयेटा समाज होइछ अर्थवानक आ अर्थ-हीनक।

नवम दशक धरि अबैत-अबैत लोककेँ ई तथ्य आत्मसात् करबामे भाङठ नहि रहलैक जे एहि दुनियामे जे ओकर मित्र नहि छैक से निश्चित रूपसँ ओकर शत्रु छैक—चाहे ओ विचार हो किंवा विचारक। लोककेँ एहि तथ्यक प्रत्यक्ष ज्ञान भेलैक जे विश्व शांति आ सामाजिक शांतिक गप्प कोन तरहेँ अधिक काल वर्ग-विशेषक वर्ग विरोधक तात्कालिक चिंतासँ उत्पन्न भेल रहैछ। कोना आ किया ओ वर्ग अपना शाँतिक चिंता करैत काल अपनासँ इतर वर्गक जीवनक अहर्निश अशांतिक गप्प सुगमतापूर्वक बिसरि जाइछ, ई सामान्य लोकक नजरिसँ नुकायल नहि रहैछ।

आन समकालीन कतोक भारतीय भाषाक कथा-साहित्य जकाँ आठम-नवम दशकक मैथिली कथामे पूर्वोलिखित लोक-बोध आ जन-चिंताकेँ सुविधापूर्वक रेखांकित कयल जा सकैछ। एहि कालक कथामे देशक संग विश्वक स्तरपर प्रचलित सामाजिक आ राजनीतिक व्यवस्थाक प्रति व्यापक आक्रोशेटा देखबामे नहि आओत पर्याप्त आ समर्थ विरोधोक स्पष्ट स्वर सुनबामे आओत। हम सभ ईहो देखब जे किया आ कोना जे सभ हाथमे मशाल लऽ रस्ता तकबा लेल बहरायल रहथि, हाथमे बन्दूक थाम्हि रस्ता बनयबामे लागि गेलाह।

परम्परागत मूल्यबोधक क्रमिक ह्रास, सामाजिक आ पारिवारिक सम्बन्ध विघटनक यथार्थ बोध, टुटैत-बनैत सम्बन्धक पीड़ा एवं उल्लास, अपरिहार्य वर्ग-विरोधक फड़ीछ ज्ञान, आक्रामक हेबाक लोक-विवशता, अपरिमित आग्नेय तथा जैविक शस्त्रास्त्रक ढेरीपर बैसि बारूदी भाषामे गप्प करैत दुनिआक संत्रास आ

संगहि एवटा नव दुनिया गढ़बाक नव चिंता संग जीबैत लोकक चेष्टा-कुचेष्टा—ई सभ किछु एहन विशिष्ट बिन्दु थीक जकरा केन्द्रमे राखि विगत तीन दशकक कथा-साहित्य रूपाकार ग्रहण करैत आयल अछि।

श्री अशोकक पहिल प्रकाश्य कथा-संकलन 'ओहि रातिक भोर'मे संकलित पन्द्रह कथाक (जे विगत दू दशकक—दिसम्बर 71 सँ मई 89 धरिक कथा थीक) एकसंग पाठ आ ओहिपर विचार करबाक क्रममे विगत तीन दशकक मुख्य विचार चिन्ता आ कथा-प्रवृत्ति हमरा ध्यानमे आयल। हिन्दीक पितामह-कथाकार प्रेमचन्द एकठाम कहने छथि—"हम जे चाहैत छी ओ ई थीक जे कथाक प्लॉट जीवनसँ लेल जाए आ ओ जीवनक समस्याकेँ हल करय। कथासँ कविताक काज लेब हमरा पसिन्न नहि।" प्रेमचंद लेल आ यथार्थोमे कथा-वस्तु काव्य-वस्तुसँ अधिक जीवनोन्मुख आ यथार्थपरक होइछ। कथामे कविताक अपेक्षा जीवनक स्वर अधिक मुखर आ स्पष्ट होइछ। तेँ कोनो काल खण्डक कथा-साहित्यपर ओहि काल-खण्डक सामाजिक जीवन आ युग-चिंताकेँ कात कऽ सार्थक विचार आ संतुलित मूल्यांङ्कन संभव नहि। तखन हमर-अहाँक सामाजिक जीवन-बोध आ युग-चिंतामे अंतर भऽ सकैछ आ यथार्थमे ओ होइते टा अछि आ अही अन्तरमे वर्गीय चिंताक भिन्न-भिन्न स्वरूपकेँ रेखाङ्कित कयल जा सकैछ।

'ओहि रातिक भोर'मे संकलित पन्द्रह कथामे आरंभक किछु कथा एहन थीक जाहिमे कथाकार लेल अपन कथा-वस्तुकेँ सतुलित स्वर आ उपयुक्त शिल्प संग प्रस्तुत करब संभव नहि भेलनि अछि। एहन-सन लागत जे कथाकार लग जे कहबाक गप्प छनि तकरा ओ प्रभावशाली ढगसँ अभिव्यक्ति देबामे, तकर व्यवस्थित रूप-विधानमे समर्थ नहि भऽ सकलाह अछि। हुनक एतद्विषयक असामर्थ्य क्रमशः दूर होइत गेलनि अछि आ बादमे ओ अपन कथ्यक प्रस्तुति संग यथासंभव उपर्युक्त शिल्पक संधानोमे अपेक्षित सफलता अर्जित कयलनि अछि। एहि तथ्यकेँ, अशोक जीक वर्ष 77क कथा 'बौका चुप छल' आ हुनक वर्ष 89क कथा 'सरिसवक साग'केँ एक संग पढ़ि बूझल जा सकैछ। कथाकारक ई प्रथम कथा-संकलन हुनक कथा कहब आरंभ करबासँ लऽ कऽ कथा कहब जानि लेब पर्यन्तक प्रयास आ सफलताक कथा कहैत अछि।

समूहक सत्य समूहक चितामे तथा व्यक्तिगत सत्य व्यक्तिगत चितामे सुविधा-पूर्वक उद्घाटित होइत अछि। हमरा लगैत अछि जे कथाकार अशोक लेल व्यक्ति-सत्य सामूहिक सत्यसँ अधिक आकर्षक एवं अन्तरंग छनि। ओ युग-सत्योकेँ समूहक नजरिसँ अधिक व्यक्तिक नजरिसँ देखब अधिक सार्थक बुझैत छथि। तेँ हिनक कथामे युगीन संघर्षक बात प्रत्यक्षसँ अधिक परोक्ष रूपसँ लक्षित होइछ। तेँ हिनक कथामे समूह सत्यमे व्यक्ति-सत्यकेँ ताकबासँ अधिक व्यक्ति-सत्यक समूह-सत्यमे साधरणीकरणक प्रयास भेटत। व्यक्ति-सत्येसँ समूह-सत्य बनैत अछि, परञ्च सभ समयमे व्यक्ति-सत्य समूह-सत्यक मात्र भागफल नहि होइछ।

जेना-जेना साहित्यमे लोक-चिंता आ युग-चिंता बढ़ैत गेल अछि, तेना-तेना ओकर तानी-भरनी अधिक संश्लिष्ट होइत गेलैक अछि। कथा-साहित्यमे ई बात आर फरीछ ढंगसँ देखल जा सकैत अछि। ओना अशोक जीक कथा-शिल्प बड़ सोझ आ ओझरा-रहित छनि—कथा सोझे-सोझ पाठककेँ सम्बोधित रहैत छनि। जेँ अशोक कोनो कथ्यक उपस्थापनमे लोक-दृष्टिसँ अधिक वैयक्तिक दृष्टिपर ध्यान दैत छथि, हुनक कथामे बिचार आ संवेदनाक स्तरपर नाना भावक मिश्रण नहि भेटत—सभ किछु अभिधामे कहल, कोनो व्यंग्यार्थ नहि। ओ अपन बात अपना तरहेँ सुगमतासँ कहि पबैत छथि, आनक दुनियाक बात आन तरहेँ राखबाक कोनो सदिच्छा कि सार्थकता हुनका लग नहि छनि। ओ व्यक्तिगत रूपसँ सामूहिक चिंतामे सम्मिलित तऽ होबय चाहैत छथि, मुदा सामूहिक चिंताक नामपर हुनक वैयक्तिक अनुभूति सभठाम तत्वत: प्रभावित नहि होइछ।

'ओहि रातिक भोर'मे संकलित कथा सभमे युग-सत्य तऽ प्रस्तुत भेल अछि परञ्च ओहिमे सामूहिक सोच कम देखबामे आओत। मैथिली कथामे अखन युग सत्यकेँ सामूहिक सोच संग प्रस्तुत करबाक प्रवृत्ति अधिक प्रबल लगैछ आ एहनामे अशोक जीक कथा सभक प्रवृत्ति आ प्रकृति समकालीन बहुतो कथाकारसँ हमरा भिन्न लगैत अछि। ई तथ्य जतऽ एक दिस अशोक जीक कथाकेँ व्यक्तिगत चरित्र प्रदान करैछ, दोसर दिस ओ हुनक कथाकारक सीमोकेँ रेखाङ्कित करैत अछि।

युगक सामान्य चिंतामे प्रत्यक्ष ढंगसँ सम्मिलित नहि रहितो अशोक अपन कथामे भाषाक सामान्य प्रयोगमे बहुत दूर धरि सफल भेलाह अछि। विशिष्ट चिंता संग अपन कथा कहबामे ओ कतौ भाषाक असामान्यतापर अबलम्बित नहि छथि। एहि बातसँ हम आशान्वित छी जे भविष्यमे एहि कथाकारक विशिष्ट सोचकेँ युगक सामान्य सोच प्रभावित कऽ सकत। हमर ई कामना थीक जे ई कथाकार युग-चिंताक ओझरासँ बचबाक प्रवृत्तिकेँ नकारि ओहिमे प्रत्यक्ष रूपसँ सहभागी बनबाक प्रकृति अर्जित करथि आ खण्ड सत्यकेँ अपर्याप्त बूझि सम्पूर्ण सत्यकेँ अङ्गीकार करथि।

कोनो ठाम आ कोनो रूपमे भेल नवारम्भ हमरा लेल स्वागत योग्य होइछ। नव कलिकाक प्रस्फुटन कोनो गमलामे हो कि कोनो वाटिका कि जंगलमे हो, ओ मनोरम होइछ। गंतव्य निश्चित हो तऽ यात्राक सार्थकता निश्चिते बढ़ि जाइछ, मुदा अनिश्चित गंतव्यो संग कयल यात्रामे लोककेँ ढेग उसारहि पड़ैत छैक। आ नव-नव उठैत डेगकेँ देखि हमरा मोनमे बारंबारि ई शुभकामना जगैत अछि जे—शुभास्ते पंथान:।

कुलानन्द मिश्र
पटना
22-4-91

कथा सँ पूर्व......

● 'ओहि रातिक भोर'क संग अपने लोकनिक समक्ष पुनः उपस्थित भऽ रहल छी। वर्त्तमानमे ओहि भोरक खांहिस आर बढ़ि गेलए। राजनीतिक कारी हाथ लोक कें खण्ड-पखण्ड कऽ देबा पर उतारू अछि। लोकक आस्था पर पुरजोर आघात चलि रहलए। एहना स्थितिमे नीच विचार बला पैघ लोकक विरुद्ध उच्च विचार बला छोट लोक सभक एकजुटता अपेक्षित अछि। विडम्बना अछि जे उच्च विचार बला छोट लोक सभ बहुमतमे अछि, मुदा मौन अछि। एहि बहुमतक सक्रियता एवं मौन भंगे सँ लोक साबूत बचि सकत।

● एहि सँ पूर्व हम अपन दू संगी शिवशंकर श्रीनिवास एवं शैलेन्द्र आनन्दक संग 'त्रिकोण' कथा संग्रह लऽ कए अपने लोकनिक समक्ष आएल रही। 'त्रिकोण'क स्वागत हमरा लोकनिक उत्साह बढ़ेलक। एहि हेतु अपन सभ पाठक, आलोचकक प्रति आभार प्रकट करब आवश्यक बुझैत छ।

● सितम्बर १९९० मे प्रेरणाक स्रोत एवं मार्गदर्शक अग्रज सुशील झाजी (प्रधानाचार्य ल० ना० जनता महाविद्यालय, झंझारपुर)क असामयिक देहावसान कुटुम्ब-परिवारक संग समस्त इलाका के मर्माहत कऽ गेल। आब तऽ मात्र स्मृति शेष अछि। ओहि समस्त स्मृति कें श्रद्धान्जलि स्वरूप सेहो ओहि रातिक भोर......।

● भाइ रहितथि तऽ संग्रह देखि गद्‌गद् होइतथि। हर्षक संग सभक लग एकर चर्च करितथि। खैर, अग्रज विहीन तऽ ई संसार नहिए भेलैए।

● एहि सग्रहक आयोजन ओ प्रकाशनमे भाइ मोहन भारद्वाज, शिवशंकर श्रीनिवास, कुमार शैलेन्द्र, किशोर केशवक योगदान बिसरल नहि जा सकैए। प्रखर कवि आ समालोचक कुलानन्द मिश्र एहि सग्रहक भूमिका लीखि हमरा उल्लसित केलन्हि। आभारी छी हुनक। अमियजी एवं अरुण आचार्यक प्रति सेहो आभार व्यक्त करैत छी। त्रुटिक लेल क्षमा याचना अपने सभसँ। बेस, तऽ आब कथा शुरूह..........

अशोक

कथा-क्रम

विरामसँ पहिने

ई बात समीरकेँ रहि-रहि मोन पड़ि जाइत छलैक जे परीक्षा छोड़ि कऽ नीक नहि कयलक। जाहि परीक्षाक लेल लोकवेद दु बरखसँ टकटकी लगाकऽ दिन गनि रहल छलैक आ जाहिपर ओकर भविष्य निर्भर करितैक, ओहि परीक्षाकेँ समीर छनेमे छोड़ि देलक। काँट जकाँ मोनकेँ सैह बात बेधि रहल छलैक। एक बरखक अमूल्य समय नष्ट भऽ गेलैक एहिसँ। फेर ओही ठामसँ चलऽ पड़तैक जतऽसँ ओ चलि चुकल अछि। भलेँ ओ फेल भऽ जाइत, परंच परीक्षा नहि छोड़ितय। कतेक गोटे ओकरा कहनो रहैक जे 'परीक्षा जुनि छोड़, फेले होयब कि ने?' ओहि दिन समीर एहि बातकेँ नहि मानने रहय। आइ ओकरा भऽ रहल छैक जे ओकरासँ भयंकर अपराध कयना गेलैक अछि आ ओहि अपराधसँ मुक्त नै भऽ सकैत अछि। अपन चारू कातक वातावरण एकदम रूक्ख बुझाइत छलैक। रहि-रहि ओ एहिसँ उबिया जाइत छल। जखन ओकर पहिल पत्र खराब भेलैक तँ ओ सोचलक जे दोसर सम्हारि लेब। दोसर पत्र सेहो बिगड़ि गेलापर ओ चिन्तित नहि भेल रहय। ई बुझियो कऽ जे ओकरा आब परीक्षा छोड़ने बिना कोनो उपाय नहि छैक। नहि जानि ओकरा मुँहपर मिसियो मालिन्य नहि आयल रहैक, अंहिना सभ दिन जकाँ गीत गबैत रस्ता महक पुल पार कयने रहय।

समीर डेरापर आबियो कऽ खाली खराबे टा भेल, सैह कहि सकल, क्योई नहि बुझि सकलैक जे समीर काल्हिसँ परीक्षा नहि देत। परंच जखन ओ खा-पीबि कऽ बिछानपर पड़ल, तखन जा कऽ मोन कोनादन करऽ लगलैक, एकदम कछमछ करऽ लागल रहय। निन्न लग पहुँचियो कऽ सूति नहि सकल रहय, जेना सौंसे बिछान काँटे-काँट भऽ गेल होइक आ पूरा घर पथर-कोइलाक धुआसँ भरि गेल होइक। ओकर साँस रुकऽ लागल छलैक आ कहि देलकैक सभसँ जे काल्हिसँ ओ परीक्षा नहि देत।

ई बात सभकेँ कहि एक प्रकारक शांतिक अनुभव कयलक आ फेरसँ भाव होबऽ लगलैक जे परीक्षाकेँ एखन एक मास देरी छैक। फेरसँ दोस सभक संग

समीरक ठहक्का ओहिना गूँजय लगलैक, मने किछु भेले नहि होइक, जुलाइये होइक एखन। परंच जखन साँझमे अपन बाबूकेँ एकदम मौन चुपचाप कोठलीमे बैसल देखलक तँ फेरसँ मोन पड़ि अयलैक जेना ओकर शरीरक हवा एके बेर निकलि पड़लैक अछि, एकदम पंचर भऽ गेल अछि, नहि जानि किएक टगऽ लागल रहय। देवालकेँ पकड़ऽ पड़ल रहैक।

ओकर बाबू परीक्षा छोड़बाक समाचार सुनि सन्न भऽ गेल छलथिन। एको शब्द नहि निकलल रहनि, एहि अप्रत्याशित दुर्घटनापर। एकदम मौन भऽ देवालसँ सटल बड़ी काल धरि बैसले रहि गेलथिन आ हुनक एहि रूपकेँ देखबाक लेल समीर कैक बेर खिड़कीसँ देखने छल। समीर अपन बाबूक चुप्पी नहि सहि सकल। ओकर इच्छा होबऽ लगलैक जे बाबू किछु बजितथि, सान्त्वनाक लेल किछु शब्द कहितथि। आ ई इच्छा तीव्रतर भेल गेलैक, परंच बाबू चुप्पे रहलथिन। समीर सान्त्वनाक शब्द सुनबाक लेल बेर-बेर अपन बाबूक कोठलीमे जा कऽ बैसि जाइत छल। मुदा ओकरा कोठलीमे प्रवेश करिते बाबू एकदम चुप्प भऽ जाइत छलथिन आ हुनका संग ओहि ठाम बैसल सभ व्यक्ति सेहो। तखन समीर अप्रतिभ जकाँ भऽ जाइत छल। ओकरा होबऽ लगैत छलैक जेना ओकर सार्थकता लुप्त भऽ रहल छैक, असार्थक बनि रहल अछि ओ। ई विचार ओहि बीचसँ ओकरा उठा दैत छलैक।

समीर एहि लेल खूब प्रयत्न कयलक जे ओकर बाबू किछु बजथिन, परंच केवल ओ 'हुँ', 'हँ'क अतिरिक्त किछु नहि बाजल छलथिन। एक गोटेकेँ कहबो कयलकैक समीर एहि लेल मने अपन बाबू लग सिफारिश पहुँचयबाक लेल, परंच ओहो घुरिया देने रहैक बातकेँ, कहि जे, "अहाँक परीक्षा छोड़लासँ हुनका बड्ड 'सौक' लगलनि अछि।" आ ओकरा भेल रहैक जेना ओकरो 'सौक' लागि गेलैक अछि। एक विचित्र प्रकारक द्वन्द्व ओकर मोनमे शुरू भऽ गेल छलैक जे तीव्र मानसिक संघर्षक रूप धारण कऽ लेने रहैक। समीर बेचैनीक अनुभव करऽ लागल छल आ ओकर पयर अनायास गंगा कात दिस बढ़ि गेल छलैक। गंगा सेहो ओकरा एक्को रत्ती शांति नहि दऽ सकल छलथिन। गंगाक निर्मल जल दिस निर्निमेष दृष्टिसँ तकैत ओकर मोन जेना दुखिताह भऽ गेल छलैक। समीर जल्दीये चल आयल रहय डेरापर आ ओछाओनपर पड़ि रहल रहय। भरि राति ओ सूति नहि सकल आ भिनसरो मोन ओहिना रहैक उबडुब करैत जेना भयंकर झंझावातमे पड़ि गेल होइक। आ जखन सात बाजल रहैक; मने परीक्षा शुरू होयबाक समय— तखन लागल रहैक जेना केन्द्रक घंटा टनाटन बाजि रहल छैक, घंटाक स्वर तीव्र

होइत गेलैक टन-टन-टन······आ ओ जोरसँ अपन कान मूनि लेने रहय। तखने भेल रहैक जेना ओकर शरीरमे किछु पैसि गेलैक। एक विचित्र सनसनाहटि ! ओकर देह सन-सन करऽ लागल रहैक आ ओहो समय थर्मामीटरमे पारा १०२ पर जाकऽ अटकि गेल रहैक। समीर बेहोश जकाँ भऽ गेल छल। किदन-कहाँदन बड़बड़ाइत रहल छल जे बादमे दोस्त ओकरा कहने रहैक। आँखि खुललापर देखने रहय जे बाबू ओकर कपारकेँ हँसोथि रहल छलथिन। हुनक आँखि ओहि दिन ओ नहि सहन कऽ सकल रहय आ अनायास ओकर अपन आँखि मुना गेल रहैक।

समीर ज्वरमे तीन दिन पड़ल रहल छल। ओना ज्वरके सिनेहो छैक ओकरासँ बेसी। किएक तँ बेर-बेर खोज-पुछारी करऽ पहिनो अबैत छलैक आ दस-पाँच दिन रहि चल जाइत छलैक। ज्वर कम भेलापर जखन समीर होशमे अबैत छल तँ पश्चात्तापक बहुत रास विचार ओकर मोनमे औनाय लगैत छलैक जे ओ अपन अट्ठारहे बरखक जिनगीमे बहुत गलती सभ कयलक अछि। जिनगीके जिनगी नहि, धूरा-माटिक खेल बुझलक अछि। ई सभ बात ओकर मोनकेँ फेरसँ अशान्त कऽ दैत छलैक आ फेरसँ ओ बेहोश जकाँ भऽ जाइत छल।

तीन दिनक उपरांत जखन समीर बिछान छोड़लक तँ ओकरा ओहने कमजोरीक अनुभव भेलैक जतबा छौ मास पहिने मसदिना टायफाइडमे भेल रहैक। ओकरा सौंसे अन्हार लागऽ लगलैक, जेना आइ राति किछु पहिने आबि गेल होइक। ओ बत्तीक 'स्वीच' दिस हाथ बढ़बऽ लागल रहय कि अपन बाबूक आवाज सुनाइ पड़ल रहैक आ फेरसँ बिछानपर पड़ि रहल रहय। ओकर बाबू गामसँ आयल भाइक चिट्ठी देने छलथिन आ पुछने छलथिन स्नेहसँ, "केहन मोन छह ?" समीर 'बढ़ियाँ' कहि चुप्प भऽ गेल रहय। इच्छा नहि रहितो ओकरा अपन भाइक चिट्ठी पढ़ऽ पड़ल रहैक आ अपन भाइक पहिले वाक्यपर जेना ओ ठमकि गेल रहय। लिखल छलैक— "बड्ड महत्वाकांक्षा छल, परन्तु सभ टा···" एहिसँ आगाँ ओ चिट्ठी नहि पढ़ि सकल रहय मने अक्षरे नहि नहि सुझाइत छलैक ओकरा। पन्ना सभ सादा लागल रहैक ! एकदम सादा !!

तखन पड़ल बिछानपर ओकर मानस पटलपर उतरि आयल रहैक अपन भाइक सौम्य मुखमण्डल !! आ मोन पड़ि आयल रहैक भाइक कोठलीमे देवालपर लिखलाहा बहुत रास वाक्य सभ, "महत्वाकांक्षाक मोती निष्ठुरताक सीपीमे रहैत

छैक''……'संघर्षं तँ जीवन थिक', आदि आदि ! समीर ओहि वाक्य सभकेँ मिलाकऽ अपना सन बनबऽ लागल रहय आ ओकरा भेल रहैक जेना अपन वाक्य बनबाक काल पूर्णविरामसँ पहिने बेर-बेर लागल कामा वाक्यकेँ अस्पष्ट ओ पैघ कयने जा रहल छैक ! एकदम पैघ !! आ तेँ समीरकेँ ई बात रहि-रहि मोन पड़ि जाइत छलैक जे……।

●

मिथिला मिहिर

२६-१२-७१

बौका चुप छल

ओहि दिन पुनिमक राति रहैक। चाँनीक पातर-पातर झिल्ली जकाँ पसरल छलैक इजोरिया। डाकदरकेँ गुलाबक गाछपर जेना क्यो भरल बल्टी दूध ढारि देने होइक, धप्प-धप्प उज्जर आ मह-मह गमकैत। डाकदर जखन खूब जोरसँ नाक, मुँहमे भरि लेलक वातावरणकेँ तँ करीब एक बजे रातिमे केबाड़ बन्न कऽ बिछानपर पड़ि रहल। भरि दिनक हरारतिसँ ओकर अंग-अंग टूटि रहल छलैक। ओ माथकेँ तकियामे घोँसिया लेलक, मुदा निन्न नहि भऽ रहल छलैक, इजोरिया काँट जकाँ गरऽ लगै छै। बगलमे पड़ल दोसर तकियाकेँ देखलक—तकिया खाली-खाली छैक, ओहिपर सीमाक केश नहि छिड़ियायल छैक। 'हुँह, एखने नैहर जयबाक छलैक, रहैत तँ ई इजोरिया तँ नहि गड़ितै ?' डाकदर मोने-मोन सोचैत अछि। डाकदरकेँ इच्छा होबऽ लगलैक जे दोसर तकियापर छिड़िया जाइक केशपाश आ ओ ओहिमे मूड़ी नुका लेअय, तखने एहि इजोरियासँ छुट्टी पाबि सकैत अछि। ताबत ओकरा लगलैक जेना क्यो दौड़ल आबि रहल छैक। ओकर केबाड़पर शब्द शुरू भऽ गेलै—खट्खट्-खट्खट्। 'ओह एतेक रातिकेँ ?....फेर झंझटि !'—ओ बिदबिदाइत अछि। उठिकऽ केबाड़ खोलि दैत छैक। सामने बतहा हाँफि रहल छलैक।

'की छियह हौ, एतेक रातिकेँ ?'—डाकदर ओकर नोर भरल आँखि देखि पुछलकैक।

"जुलूम भऽ गेलै डाकदर बाबू ! बौकाकेँ साँप काटि लेलकैए। ओ छटपटा रहलैए। विष चढ़ल जाइ छै। ओकरा बचा लियौ साहेब ! बतहा एके साँसमे सभटा उगीलि दै छै।"

"के बौका ? रधियाक घरवाला ?"—डाकदर तुरन्ते पुछि उठै छैक।

'हँ, डाकदर साहेब, जल्दी चलियौ।' —बतहा अगुता कऽ बजैत छै। डाकदर सकदम भऽ जाइत अछि। किछु नहि फुरा रहलैए। की करय ? ओ एक

क्षण बतहा दिस तकैत छैक आ बेग लऽ विदा भऽ जाइत अछि। आब दूध-भरल इजोरिया ओकरा अलकतरा पोतल अन्हरिया लगैत छैक। बेस भयानक लगैत छै वातावरण। डर भऽ उठैत छैक, ओ पाछू दिस तकैत अछि—बतहा ओहिना मूड़ी गाड़ने आबि रहलैए।

रधियाक आङनमे पहुँचलापर ओ देखैत अछि, बौका परतीपर पड़ल छैक, छटपटा रहलैक अछि, गणेशवा भगता चाटी चला रहल छै—हाँहि-हाँहि.......फटाफट....। माँटि फेकि रहलैक अछि। डाकदर एकत्रित भीड़ दिस तकैत अछि, सभ पाथरक मुरूत जकाँ मौन ठाढ़ छैक। ओ लोक सभकेँ हँटा बौका लग अबैत अछि आ जल्दीसँ तैयार कऽ एकटा इन्जेक्शन बौकाक बाँहिमे भोँकि दै छै। बाँहि कनेक सुगबुगाइत छैक, आँखि कनेक खुजैत छैक, मुदा फेर सभ शांत....। नाड़ी क्षीण भऽ रहलैक अछि, देह स्याह भऽ रहल छै। डाकदरकेँ इंजेक्शन देनाइ व्यर्थ बुझाइत छैक, 'जानि नहि कोन साँप कटने छलैक ?'—आब भगता पड़ा रहल छलैक आ बौका मरि जाइत छैक। डाकदर ओकर हाथकेँ नीचाँ राखि दैत छैक। रधिया चिकरि उठैत अछि, बौकाक भौजी हाकरोस करऽ लगैत अछि। सभक झौहरिक बीच डाकदरक पयर मोन भरिक भऽ जाइत छैक ओ दलानपर जाकऽ बैसि रहैत अछि। बौकाक दलानपर, जतऽ गामक लोक सभ जमा भऽ रहलैक अछि। रामधन कहि रहल छै—"अहा ....हा, बेचारा भरल जुआनीमे चल गेलैक, महादेव कोन विपत्ति खसौलिऐक एहि रधियापर। बेचारी विधवा भऽ गेलै।'—डाकदरकेँ होइत छैक जे रामधनकेँ बौकाक मरवासँ बेसी रधियाक विधवा होयबाक सोच छैक। ओकर ठोरक एक कोन पसरि जाइत छैक—हुँह, बौका तँ कहिया ने मरि गेलैक, ओ कि जीबै छलैक जे फेरसँ मरतै ?

रधिया माने बौकाक स्त्री, बौका 'वहुरिया' कहै ओकरा नेहसँ। आइ हाकरोस कऽ रहलैक अछि, लाशपर कपार पटकि रहल छैक। ओकरा सभसँ बेसी स्नेह करऽवला आइ मरि गेल छैक ने ? बौका जे रधियाकेँ कहियो किछु नहि कहलकैक, कहियो ने टोकलकैक जे ओ हबेली-महल किए बेसी जाइत अछि ? किए मालिकक बर्त्तन माँजिकऽ रातिमे देरीसँ आपस अबैत अछि ? किएक रमाकान्त बाबू, जीबछ बाबू बौका घरक लगपास अहुरिया कटैत रहैत छैक ? बौका लगमे जखन रधिया थाकि-हारिकऽ पड़ि रहैक तँ ओकर बड़की टा केशकेँ छूबि कहै बौका. "लोक सभ कहै छै जे तोँ बड़ सुन्नर छेँ, किरिन फुटै छौ तोहर देहसँ, से सत्ते ! हमर भाग जे तोरा सन बहु भेटल बहुरिया !'—आ रधिया मुसकिया दैक, बौकाक

छातीकेँ अपन हाथसँ ससारऽ लगैक। छाती दर्दक बीमारी धऽ लेने रहैक दू बरखसँ। जखन दर्द करैक तँ पसेना-पसेना भऽ जाइक, एकदम मौला जाइक गाछसँ टूटल तीराक फूल जकाँ। कतेक दवाइ-दारू भेलैक मुदा दर्दकेँ नहि छुटबाक छलैक, नहिएँ छुटलैक। रधिया पन्द्रह दिनपर डाकदरक दवाइ आनय आ दिनमे तीन बेरकऽ अपने हाथे खुआबैक। बौका देखय जे पन्द्रहमा दिनपर रधिया डाकदरकेँ ओहिठाम जाइ छै आ बड़ी कालक बाद दबाइ लऽ कऽ अबै छै, बड़े प्रेमसँ दवाइ बौकाक हाथमे दऽ कऽ कहैक—'आब दर्द छुटि जायत, डाकदर बाबू एहि बेर जुलमी दवाइ देलखिन अछि।' मुदा दर्द नहिए छुटलैक, बौका दवाइ खाइत रहल, रधिया डाकदरक ओहिठाम जाइत रहल आ रातिकेँ देरीसँ काज कऽ अबैत रहल।

जाधरि दर्द नहि शुरू भेल छलैक, बोनिपर मजूरी सेहो कऽ लैत छल बौका। माँटि काटऽमे पक्का ओस्ताद! मुदा जहियासँ ई बीमारी धऽ लेलकैक, ओकर देहकेँ तोड़ि कऽ राखि देलकै। भरिगर काज नहि कऽ पावय। भरिदिन दलानपर बैसिकऽ सोनक डोरी बाँटय आ अङना मँहक झगड़ा सुनैत रहय। ओकर भाउज झरझर रधियापर बजैत रहै—'खाली सिंगार-पटारमे लागल रहती, देखू ने, सऽख केहन! बड़ स्नो-पाउडरकेँ सऽख छौ तँ अपन यार सभसँ माङि ले। हम खटैत नूड़ी भेल रहू आ ई सौंसे गाम टहलान देती।' आ बौका, रधियाक कानब-बाजब सुनय। सुनैत-सुनैत अकच्छ भऽ जाय तँ डोरी बाँटब छोड़ि चल जाय दलानपरसँ पड़ाकऽ बाधे-बोने बौआइत रहय। एम्हर सोनक डोरी ओझराइत रहैत छलैक। बौकाक भाय मधवा कलकत्ता कमाइ छलैक, दशमीमे गाम आबय तँ बूट पहीरिकऽ घड़ी लगाकऽ। थोड़ेक दिन खूब रमन-चमन रहैक फेर सभ शान्त....। ओहिना झगड़ा, हल्ला-गुल्ला, ओकर भौजीक चिकरब, रधियाक हिचुकब आ बौकाक पड़ायब चालि पड़ैक।

रातिकेँ जखन रधिया ओकरा लगमे अबैक तँ सभ वस्तु बिसरि जाइत छल, सभ दर्द, सभ ठेस! खाली मोन रहैक तँ रधियाक कजरैल आँखि आ नूआसँ अबैत कोनो सेंटक गमक। बौकाकेँ होइक, पूछय जे ई सेंट कतऽसँ लगौलक अछि, मुदा नहि पूछि सकय, तकैत रहय खाली, सूघैत रहय खाली। कौखन कऽ रधिया बिगड़ि उठैक—'किएक तकैत छी एना? बजै किएक ने छी'? बिगड़ल छी तँ मारू हमरा—मुदा बौका मुसकिया दैक चुपचाप! ओकर केश पकड़ि कऽ ओझरायल ने लटकेँ सोझराबऽ लागय। रधिया खींचि लैक केशकेँ आ मूड़ी झमारि कऽ कहैक—"अहाँक चुप्पा नहि सोहाइत अछि हमरा। हम जँ गलती करै छी तँ किएक ने रोकैत छी। थापड़े—मुक्के हमरा अधमिरूत कऽ दियऽ।' आ रधिया हिचुकऽ

लागय। केशके नोचऽ लागय। मुदा बौकाके किछु ने कयल होइक, खाली कौखन कऽ कहैक—'बड़ नीक लगै छै हमरा। हम तोरापर कोना बिगड़ि सकब।'—आ स्नेहसँ ओकरा पाँजमे लऽ लैक।

बौका ने रधियाके किछु कहि सकलैक आ ने अपन भाउजके, जकर साँय परदेश कमाइ छैक। ओ तँ हरदम चुप्पे रहल आ चुप्पेसँ साँप ओकरा काटि लेलकैक। डाकदरके ठकमूड़ी लागि गेल छलैक। ओकरा भेलैक जे ओ गाले रहल अछि एहिठाम, बरफ भऽ रहल अछि। भीड़ बढ़ल जाइत छलैक, लोक सभ परस्पर फुसुर-फुसुर गप्प कऽ रहल छलैक। डाकदरक माथ एहि हल्लासँ फाटऽ लगलैक। ओ एक पेरिया धऽ लेलक मुदा आँखिक आगूमे बौकाक लाश नाचि गेलैक। बौका मरि गेल छल ने!

जीबैत छल तँ रधिया जे एखन कपार फोड़ि रहल छल, मुदा बौकाक जीवनमे सदैव कठपुतरी जकाँ नचैत रहल। कनैत छल तँ ओकर भाउज, जे सदिखन रधियाके देखि जरैत रहल, बजैत रहल। चिकरैत छल तँ ई भीड़ जे सभ दिन हँसैत रहल। डाकदरके भेलैक जे मरैत अछि मात्र ओ, किएक तँ रधियाक खूजल पँघ-पँघ केशके देखि ओकरा अपन बिछानपर राखल दोसर तकिया मोन पड़ि आयल छलैक मुदा डाकदर चुप्पे रहल जेना बौका चुप्प छल।

●

मिथिला मिहिर
२७-३-७७

एक टा दोसर ब्रह्मा

'दुर ! फूसि बजैए छीतन। बड़ भारी ठक अछि। हम नेनेसँ एकरा चिन्हैत छिऐक।'—रामलाल बाजल।

'मुदा लोकोकेँ तँ दू पाइ बुद्धि छै। मङनीमे कोना ठकि लेथिन ?'

राधे मने दोसर शह देलकै। हरेकान्त बाबूक ओहिठाम शतरंज खेलायब गुन कऽ रहल छैक। मिडिल पास राधे थोड़ेक दिन विराटनगरमे नोकरी कऽ आयल अछि। गामसँ बाहरोक संसार देखने छैक। ओ एहि दू पाइक बुद्धिक बदौलति हरेकान्त बाबूक संग साँझकेँ शतरंज ठनैत रहलैक अछि। "हँ, से तँ ठीके कहलह। सुच्चा गप्प बनाकऽ लोककेँ ठकब असान नहि छै। आब पहिलुका जमाना नहि रहलै।"—रामलालकेँ अपन जमाना मोन पड़ि अयलै जहिया लोक 'सुद्ध' होइत छलैक। गोरा पलटनक जमानाक गप्प !

"छीतन तँ अपने चलवलवलाक आदमी अछि, तखन क्यो एना ओकरा ठकि लेतैक से नहि भऽ सकैत छैक।"—राधे बाजल। जहियासँ छीतन ओकर चरिकठबा जमीन कीनि लेने छैक, तहियासँ राधे ओकरा चलवल-चलाकमे गिनती करऽ लगलैक।

"एहनो कतहु भेलैए। तेजूक भायकेँ की ओ नहि चिन्हैत छैक ? आन क्यो तेजूक भाइ बनि ओकरासँ रुपैया ठकि लेतैक से कोना भऽ सकैत।"—रामलालक दावा छैक जे ओ गामक सभ लोककेँ चिन्हैत अछि। भरि जीवन गाममे गुजरि गेलैक अछि रामलालकेँ।

सुनै छी, छीतन कहैत छलैक जे ओहि समयमे जेना अन्हरजाली लागि गेल। गामक बहुत गोटेक नाम ठकक मुँहसँ सुनि ओकरा विश्वास भऽ गेलैक जे ओ ठीके तेजूक भाइ थिकैक। ताहिपर रुपैया निकालिकऽ दऽ देलकै। मुदा एहि गामक दस गोटेक नाम तँ कतेक लोककेँ बुझल छैक। क्यो कहि देतैक जे हम फल्लाँक भाइ छी आ टोल-पड़ोसक दू-चारि गोटेक नाम लऽ लेतैक तँ लोक मानि जयतैक ?"—राधे अपन तर्क देलक।

"अरे, हमरा तँ सभटा ओकर बहाना बुझा रहल अछि, बहाना। छोट भायक गरामे उतरी पड़ल छैक आ जेठ भाय रंगताल देखा रहल छैक।" रामलालक आँखि आर गहींर भऽ गेलैक।

"सोरह आना सत कहलहुँ काका! छीतन बापक श्राद्धमे खपटा फोड़ि निमहि जाय चाहैत अछि। बापक जीबैत तँ कहियो सुख नहि देलक, मरलोपर क्रिया-करम नहि करऽ चाहैत अछि"—राधे जेना आगिमे घी ढारि देलकैक। राम लाल ललकि उठल।

"से कोना भऽ सकैत छैक? ओहुन धर्मात्माक क्रिया-करम नीक जकाँ नहि करतैक, से ओकरे दिन छिऐक? सौंसे गामके नोत नहि देतैक तँ समाज दुर-दुर नहि करतैक? एहन सपरतीब वेह भेलए?"—रामलालके क्रोध भऽ अयलैक। ऊकासी शुरू भऽ गेल रहैक। दलानपरसँ उठि पानि पीबाक लेल आङन दिस बिदा भेल। रामलालक दलान गामक आकाशवाणीक भूमिका निर्वाह करैत रहलैक अछि। रामलालक प्रभुत्व एहिपर निर्विवाद रूपसँ स्वीकृत होइत आयल छैक। ओ चाहे तँ कोनो समाचारके 'सेन्सर' कऽ सकैत अछि आ ककरो 'ब्राडकास्ट' करबा सकैत अछि। राधेक सहयोग एहिमे ओकरा सभ दिन भेटैत रहलैए। आब राधे, रामलालक दलानपरसँ विदा भऽ गेल छल। निश्चित छै जे कालिह सौंसे गाममे ई बात पसरि जयतैक जे छीतनके दरभंगामे क्यो ठक तेजूक भाइ बनि जो रुपैया ठकि लेलकै से फूसि गप्प थिकैक। छीतन अपन मोनसँ गढ़ि ठकैतीक गप्प कहि रहलए। बापक श्राद्धमे खपटा फोड़ऽ चाहैत अछि। आ तखन लोक सभ अपन-अपन मुट्ठीमे गप्पके लऽ अपने हवा बनाओत आ एक आँजुर गप्प उड़िया देतैक। गामक उड़ियाइत गप्पमे आ राखमे कोनो फरक नहि होइत छैक। ई उड़ियाइत राख ककरो आँखि नाक, कानमे पड़ि जयतैक। चेहरा धूरा-धूरा भऽ जयतैक, ओकर दम घुटऽ लगतैक। दम घुटैत लोकके खसायब कतेक सुलभ छैक? एक धक्कामे एकदम चित!

छीतन आइ दस बरखसँ धनबाद कोलियरीमे काज कऽ रहल अछि। मैट्रिकक बाद आगू नहि पढ़ि सकल रहय। बाप रिटायर भऽ गेल रहैक पोस्ट आफिसक नोकरीसँ। 'मेल पिउन' भऽ कऽ रिटायर कयने छलैक। रिटायर भेलाक बाद जे पाइ पोस्ट आफिसक बेदाग सर्भिसक बदौलत भेटल रहैक से छीतनक छोटकी बहिनक बियाहमे खर्च भऽ गेलैक। जमीन-जालक नामपर तँ दस कट्ठा बाड़ी-झाड़ी छोड़ि आर किछु छलैक नहि। बापक नोकरी छुटलाक बाद लोक-वेदके नोनो रोटीपर आफत आबि गेलैक। जेठ भाइ होयबाक कारणे छीतनपर परिवारक भार आब

आबि गेल रहैक। थोड़ेक दिन एम्हर-ओम्हर भटकलाक बाद धनबाद चल गेल रहय छीतन, जतऽ ओकर मौसा कलर्की करैत छलथिन। किछु दिनक बाद छीतनकेँ कोलियरीमे जगह भेटि गेल छलैक। सवा सय टाकासँ दरमाहा शुरू भेल रहैक, आब तँ तीन सय रुपैया भेटैत छैक ओकरा। महीने-महीने ठीक समयपर गाम रुपैया मनिआर्डर करैत रहलए छीतन। मुदा गामक लोक कहियो मोजर नहि देलकै। "की कमाइ अछि छीतन? एको रत्ती स्थिति-पात नहि बना सकल। एहन कमयनाइसँ तँ खेतमे माटि कोड़ितय से नीक।" —लोक कहैत छैक। गाम आबय तँ सभटा सुनय। लोक सभक अंदाज छैक जे छीतन धनबादक बैंकमे अपना नामे जमा करैत अछि। "अरे, आइ कालहुक कमयनिहार सभक तरीघट्टी नहि बुझबहक, डूबिकऽ सभ पानि पीबैत अछि। सिखबौ गय बापके छीतन जे सुक्खे दरमाहापर खटै छी। ऊपरी कमाइ, की नहि होइत होयतैक?'—छीतनकेँ सुनिकऽ हँसी लगैक। एहिसँ बेसी ओ किछु कैयो ने सकैत छल। लोकक मुँह बन्न कऽ देबाक सामर्थ्य ओकरामे नहि छलैक। स्त्रीक गहना बेचिकऽ राधेसँ चारि कट्ठा जमीन किनने रहय छीतन। "गहना तँ कहियो चोर चोरा कऽ लऽ जा सकैत अछि। मुदा जमीन रहत ओकर उपजसँ परिबारकेँ किछुओ आसरा तँ भेटि जयतैक।"—ओ सोचने छल। छीतनक छोट भाय परभू पढ़ि-लिखि नहि सकलैक। गामक लोअर प्राइमरीक बाद ठेहुन रोपि देने रहैक। स्वभावसँ थोड़ेक उग्र छैक परभू। हरदम पित्त चढ़ले रहैत छैक। नेनामे जखन बाप कोनो बातपर बिगड़ै तँ पड़ा जाय। दु-दू, तीन-तीन दिन कतऽ कहाँदन बौआइत रहैत छल। एम्हर, माय पेटकान देने रहैक। "कहीं किछु भऽ तँ ने गेलैक। गाड़ीमे तँ ने कटि गेलैक?"—अशुभ कल्पनासँ मायक हृदय भालरि जकाँ काँपऽ लगैक। मुदा फेर चुपचाप परभू आबि जाइत छल। एहिना कतेक दिन धरि क्रम बनल रहलैक। अन्तमे बाप आजिज भऽ कऽ कहनाइ छोड़ि देलकै। आब परभू गामेपर रहैत छल। अपन जमीनक संग हरेकान्त बाबूक जमीन सेहो बटाइ करैत छल। किछुकऽ अन्न भऽ जाइत छलैक। उग्र स्वभावक कारणेँ गाममे बेसी गोटेसँ झगड़े छैक ओकरा। मुदा छीतनक बात भिन्न छै, लोक ओकरा पित्तमरू बुझैत छैक।

जखन छीतनकेँ तार पहुँचलैक जे 'बाबू मरि गेलाह, जल्दी आउ', तँ तत्काल ओकरा कोनो दुख नहि भेल रहैक। जेना एहि तारक प्रतीक्षा कऽ रहल छल। छुट्टी लेल दरखास्त दऽ कऽ ओ डेरा दिस विदा भऽ गेल रहय। सभ दिन जकाँ आइयो चौधरी होटलमे चाह पीलक। मुदा जखन कोठली खोलि बिछानपर बैसल

रहय तँ आँखिमे नोर भरि आयल रहैक। एहि दुआरे नहि जे बूढ़ बाप मरि गेल छैक। ने एहू दुआरे गामसँ एतेक दूर रहबाक कारणेँ अन्तिम समयमे ओ बाप लग नहि रहि सकल। ओकरा भेलैक जे ओ पघिलि रहल अछि, अन्तमे कतहु बड़का-बड़का बरफक चट्टान सभ टुटि रहल छैक, पघिलि रहल छैक। तेँ पानि आँखि दऽ कऽ निकलि गेलैक, ठंडा पानि! आइ धरि सभ काजकेँ ओ 'ड्यूटी' बुझि करैत आयल अछि। मुदा आब ई सभ 'ड्यूटी' ओकरा भरिगर अनुभव होबऽ लागल छैक। ओकरा तँ एतबे मोन रहैत छलैक जे भिनसरसँ साँझ धरि खटबाक अछि, खाली खटबाक अछि, आ मास पूरा भेलापर पेट भरऽ जोगर रुपैया राखि सभटा गाम पठेबाक अछि। मुदा एकाएक बापक मृत्युक समाचार सुनि थोड़ेक कालक बाद ओकरा पैघ झटका लगलैक, पटरी बदलबाक झटका। मोन पड़लैक जे ओ मनुक्ख थिक, एकटा निरीह सामाजिक प्राणी! मुइल बूढ़ बापक प्रति ओकर किछु कर्त्तव्य छैक। मुदा कर्त्तव्य कोना पार लगतैक? मुखर्जी साहेबसँ थोड़ेक रुपैया पैंच ओ लऽ सकैत अछि, मुदा ओतबेसँ तँ किछु ने होयतैक। ओ मोने-मोन हिसाब लगबैत अछि। छीतनकेँ होइत छैक गाममे ओकरा करजा लेबऽ पड़तैक। मुदा जमीनपर करजा उठा ओ भोज-भात नहि करत। लोकवेदक मुँहक आहार कोना छीनि लेतैक? छीतनक मोनक एक कोनसँ एकटा बिहाड़ि उठैत छैक। लगैत छैक जेना सभ घर-द्वार गाछ-वृक्ष उजड़ि रहल छैक, उखड़ि रहल छैक। छीतन पड़ा रहल अछि, एको बेर घुरिकऽ पाछू नहि तकैत अछि। मुदा तखने दोसर कोनसँ बरखा झहरऽ लागल छैक। रस्ता,-पेड़ा पिच्छड़ भऽ रहलैक अछि। सुखल माँटि कादो भऽ रहल छैक। छीतन बेर-बेर आब पिछड़ि रहल अछि, कादोमे ओकर पयर धँसि रहल छैक। छीतन अपन मोनकेँ मनबऽ लगैत अछि।

गामक नवतुरिया सभ पोखरिक मोहारपर जमा छलैक। साँझकेँ पानिक हिलकोर देखैत गप्प करबामे बड़ मोन लगैत छैक। कालिहसँ सौंसे गाममे गप्पक 'टारजेट' छीतन भऽ गेल अछि। सभ धाँय-धांय फायर कऽ रहल छैक। सतीश बाजि रहल छल, 'परसू जखन छीतन भाइ साँझमे धनबादसँ आयल तँ हमहूँ ओकरे दरबज्जापर रही। ओकर चेहरा किछु हताश सन बुझायल रहय। भेल रहय जे दुखसँ एना भऽ गेलैक अछि।' कनेकालक बाद हमरे तँ पुछने रहय, 'अयँ हौ सतीश! तेजूक छोटका भाइ पम्पिग सेट खरीद कऽ दरभंगासँ घुरलै की नहि? तोरा तँ बुझल होयतह?' हम तँ अवाक् रहि गेल रही। भरि दुपहरिया ताँ ओ हमरा संग ताश खेलाइत छल तखन कखन ओ दरभंगा गेलैक। दोसर पम्पिग सेट खरीदबाक

आइ धरि चर्चो नहि कयलक अछि। हमर जवाबपर लागल छीतन भाइक चेहराक रोशनी बिला गेलैक, मने स्वीच ऑफ कऽ देने होइक। तखन ओ कहलक जे दरभंगामे ओकरा एक गोटा बस स्टैंडपर भेटलैक आ पयर छूबि गोड़ लागि कहलकै जे ओ बैजूक छोट भाइ छिऐक, पम्पिंग सेट खरीदऽ आयल अछि। चारि सय रुपैया घटि गेलैक अछि तेँ जँ छीतनकेँ होइक तँ आइये ओ खरीद कऽ गाम घुरि जायत। साँझमे गामेपर तेजसँ रुपैया लऽ कऽ दऽ देतैक। छीतन भाइ ओहि व्यक्तिकेँ कहलकै जे ओ ओकरा ठीकसँ नहि चिन्हैत छै, ताहिपर टोल-पड़ोसक अनेक लोकक नाम ओ सुना देने रहैक। आ कहने रहैक जे परभू ओकरा नीक जकाँ चीन्हैत छैक। छीतन भाइकेँ विश्वास भऽ गेल रहैक जे ठीके ओ तेजूक भाइ छिऐक आ रुपैया निकालि कऽ दऽ देने रहैक। साँझमे गामपर जखन रुपैया भेटिए जयतैक तँ किएक ने गौआँक उपकार कऽ दैक। मुदा गौआँक उपकार करैत ठका गेल रहय ओ।'

"एहिमे हमरा कतहु नहि लागि रहल अछि जे छीतन भाइ फूसि बाजि रहल अछि। केहन-केहन चलाक लोक सभ ठका जाइत अछि।"—सतीश अपन मत रखने रहय। ताहिपर चन्द्रू फनकि उठलैक।

"से तँ बुझलियह। मुदा ई परभूआ जे गराम उतरी पहिरि चिकरने फिरैत अछि। ओकर भायकेँ जो ठक कहतैक, तकर जीह पकड़िकऽ खींचि लेतैक से ओकरे दिन छिऐक?"—चन्द्रूकेँ एही बीचमे कोनो बातपर परभूसँ झगड़ा बजरि गेल रहैक तेँ ओ परभूपर कनखड़ल छल।

"हँ एना नहि बजबाक चाही परभूकेँ। जखन ओकर भाय ठक नहि छैक तँ किएक लगैत छै ओकरा? एहिसँ तऽ लोककेँ आरो क्रोधे होयतैक।"—राधेक भातिज बीनूक कहब छलैक। एहिपर सतीश कहलकै—'परभू क्रोधी स्वभावक अछि, एहनमे क्रोध भऽ जायब स्वाभाविक छैक। तेँ ओकर बातपर ध्यान नहि दही।"
एहि बातपर मोती भड़कि गेलैक।

'एहने जो तोँ बातपर नहि ध्यान देनिहार छे तँ ककरो बातपर नहि ध्यान दही। तखन खाली छीतनेक कहल बात सभ टा ठीक छै, ध्यान देबा जोगर छैक आ दोसर जे कहै छैक से 'मोटीभेटेड' भऽ कऽ कहि रहल छैक। अनकर बातमे तोरा 'कम्प्लेक्स' देखाइ छौ आ छीतनक बात एकदम सोझ-साझ ठीक बुझाइ छौ, से किएक?' सतीशके भेलैक जे मोती सोझे-सोझ ओकरा दोषी बना रहल छक, "मडनीमे विवाद आगू बढ़ि रहल अछि।"—ओ सोचलक। कहि देलकै—"हमरा कोन गरज अछि जे ककरो पक्ष लेबैक। जे बात मोनमे जँचल से कहलियौ। छीतन

सत बाजि रहल अछि, तकर कोनो ठोस प्रमाण तँ हमरा लग अछि नहि ज हम देखा देबौक ।"

मोतीकेँ भेलैक जो एहि 'प्रमाण'पर कोनो बात कहैक मुदा ताबत चन्दू बाजि उठलै —"तोहर प्रमाणक कोन मोजर होयतौक, जखन छीतन अपने अपन कोनो प्रमाण नहि दऽ रहल छैक । लोक कहबे करतौक जे ओ फूसि कहि रहल अछि ।"

सतीशकेँ भेलैक जो सभ बलधकेल कऽ रहलए । अपनाकेँ एहि क्षण बहुत असगर अनुभव कयलक । आ ओ सोचलक जो सभ पूर्वग्रहक बाटीपर फूसि-साँचक ओहार लगा लेने अछि । एहि ओहारसँ बाहर आबि खसैत मनुक्खकेँ देखब एकरा सभ लेल असम्भव छैक । तावत देखलक जो पश्चिम भरसँ धनेसरीक गाछ लग छीतन आबि रहल अछि । लग अयलापर सतीशकेँ बुझयलैक जेना छीतन श्मशानसँ उठि सोझे एहिठाम आबि रहल अछि । ओ पुछि देलकै—'कतऽसँ आबि रहल छ, छीतन भाइ ?'

"हरेकान्त बाबूक ओहिठामसँ ।" —छीतन उत्तर देलकै ।

—'की भेलह ?'

—"जमीनपर करजा देबा लेल तैयार भेलाह अछि ।"

—"तों गछि लेलहक ?"

"गछबै नहि ? हम की सऽर-समाजसँ बाहर छी ? जो सभहक विचार भेलै ......" कहि छीतन घर दिस विदा भेल ।

सतीशकेँ भेलैक जे छीतन एकटा जीबैत प्रेत थिक । एकटा ब्रह्मा आकाशमे बैसल हेँजक हेँज मनुक्खकेँ जीबऽ लेल धरतीपर पठा रहल छैक । मुदा धरतीपर एकटा दोसर ब्रह्मा समाजक रेशमी तौनी ओढ़ि जीबैत ममुक्खकेँ प्रेत बना रहल अछि । "लोक अहू दोसर ब्राह्मकेँ डाली झाड़ि बचल-खुचल फल लऽ पूजा करबापर विवश अछि ।"—ओ सोचलक ।

●

मिथिला मिहिर
६-११-७७

जहलमे टाङल मोन

साँझमे जखन किशोर गामक चौकपर गेल रहय तँ डाकपिउन असितक बाबूजीक पत्र ओकरा देने रहैक। पत्रमे लिखल रहैक जे मीनाक विवाह पचीस तारीखकेँ निश्चित भेलैक अछि। हमर तँ एखन असितक जहलमे रहबाक कारणेँ एकोरत्ती इच्छा नहि छल मुदा बराइतक जोरपर विवश भऽ गेल छी। कतहु कथा ने टूटि ताय तेँ चुपचाप स्वीकार कऽ लेबऽ पड़ल। जाबत इमरजेंसी रहतैक ताबत असितक जहलसँ छूटब असम्भवे छैक। तोहर उपस्थिति एकदम अनिवार्य छह। असित नहि अछि एहि शुभ घड़ीमे। ओकर अभावकेँ तोरा देखि सन्तोष कऽ लेब। मीना सेहो तोहर बड़ चर्चा करैत रहैत छह। पत्र पढ़ि किशोरक मोनमे अनेक हिलकोर उठि जाइत छैक। तँ मीनाक विवाह भऽ रहल छैक? ओ बिदबिदाइत अछि। दस दिन पहिलुका मीनाक चिट्ठी ओकरा मोन पड़ि अबैत छैक। मीना बेस बिगड़िकऽ लिखने छलैक ओकर चुप्पीपर। किशोरक स्वभावेमे जेना आलस्य मीलि गेल होइक—'एहन तँ नहि छल ओ।' ओकरा होइत छैक। मात्र एकटा पत्रक जबाब दऽ सकलैक अछि एहि तीन महीनाक भीतरमे। 'भरिसक अहाँ बिसरि गेलहुँ हमरालोकनिकेँ। अहाँसँ एहन आशा नहि छल। असित भैया नहि छथि तेँ की हम सभ आन भऽ गेलहुँ?' मीनाक चिट्ठीक शब्द सभ किशोरक मस्तिष्कमे घड़ी-घंटा जकाँ ठोकर मारैत छैक—'टन-टन-टन'। किशोर एक क्षण लेल अपराधी अनुभव करैत अछि अपनाकेँ। ओकरा मोन पड़ैत छैक असितक छोटछीन गोर मुँह आ कारी चमकैत आँखि! किशोरक आँखि मुना जाइत छैक। ओकर मोन असितक चारू कात औनाय लगैत छैक। रामनवमी दिन। जानकी मन्दिरक सामने ठसाठस भीड़मे धक्कम-धुक्काक बीच कोनो बातपर असित एकटा पुलिस जमादारकेँ कालर पकड़ि लेने रहैक आ लागल रहैक गारि पढ़ऽ। किशोरकेँ अनेक गारि मुँहमे चल अबैत छैक, थूक जकाँ आ थ्थू। मुदा ओहि दिन कतेक डेरा गेल छल ओ! भेल रहैक जे अबस्से आइ जमादार जहलमे बंद कऽ देतैक असितकेँ। क्रोधो भेल रहैक असितपर—'सभठाम कोनो-ने-कोनो उपद्रव ठाढ़ कऽ दैत अछि, ई

असितबा, भोगऽ आब जहल। मुदा अपन जीवनमे पहिले-पहिल पुलिसके माफी मङैत देखने रहय ओ। ओकरा तँ बुझल रहैक जे खाहे कतबो पुलिसक गलती रहौक, ओ कतहु पब्लिकसँ माफी नहि माङि सकैत अछि। जमादार आ दू टा सिपाही असितक दाढ़ी पकड़ि-पकड़ि माफी माङि रहल छलैक—"हमरा से गलती हो गइल बचवा! माफी माँगत हती। हम अपने के नाही चिन्हली।' मुदा असित छल जे लगातार जमादारके झाड़ने जा रहल छल—'नहि तोरा सभके बड़ शेखी भऽ गेलह अछि अधिकारक। बिना कोनो दोषक गारि पढ़ि देलह। हम जाइत छी इन्सपेक्टर लग।' ओकर छोटछीन मुँह बड़ भयानक भऽ उठल रहैक ओहि क्षण। किशोरके भेल रहैक जे कहीं बिगड़िकऽ जमादार एहि भीड़मे लाठी चार्ज ने कऽ दैक। जोशमे आबिकऽ कहीं असित ने मारि बैसय जमादारके। जो भरि पाँजकऽ पकड़ि लेने रहैक आ जबरदस्ती असितक मुँहमे जानकीजीक चढ़ाओल प्रसाद ठूसि देने छलैक। "छोड़ह भाइ आब झगड़ा। जमादार साहेब माफी माङि लेलथुन, छोड़ि दैह आब।" किशोर ओकरा शांत करबाक चेष्टा कयने छल। मुदा बड़ी कालक बाद शांत भेल रहय असित, जखन बहुत दूर धरि पकड़ने लऽ गेल रहैक ओकरा। एहि तरहक अनेक घटन मोनमे धुआँ जकाँ पसरि जाइत छैक। खाहे 'बोटेनिकल टूर' लेल प्रिंसपल संग झगड़ाक प्रसंग हो वा रास्ता-पेड़ामे कोनो व्यक्तिक थोड़बो गलतीपर असितक बिगड़नाइ होइक, किशोरके सभ ठाम ओकरा शांत करबा लेल बेस प्रयत्न करऽ पड़ल छैक। असितके जेना क्रोधक बीमारी होइक मने। जखन ओकरा क्रोध होइत छलैक तँ लगैत छलैक जेना ओ दुखिताह भऽ गेल हो आ बेसी ज्वरमे तपैत बिदबिदा रहल हो।

किशोर ओना डरपोक नहि अछि, मुदा ओकरा क्रोधे ने होइत छलैक। ककरो गलती वा उकठपर ओकरा हँसि लागि जाइत छैक। कतेक दिन चाहैत अछि जे खूब जोरसँ नाक मुँह जाँतिकऽ आँखि अड़हूल जकाँ लाल कऽ ककरोपर बिगड़य मुदा भेल बेरपर ओकर चेहरा धोखा दऽ दैत छैक। सभ टा क्रोध भर-भर कऽ खसि पड़ैत छैक भुरभुरी माँटि जकाँ। सैह कारण छैक जे यदि किशोर हरदम असितक संग नहि रहितैक आ ओकरा रोकबाक चेष्टा नहि करैत रहितैक तँ कतेको बेर असितके ककरो संग मारि बजरि गेल रहितैक। किशोरक एहि स्वभावपर कहियो कऽ असित बिगड़ि जाइत छलैक—"तों बड़ डरपोक छें किशोर! हरदम मुर्दा जकाँ शान्त! जेना तोहर देहमे गरम शोणित नहि छौ, एकदम ठंढा आदमी, हुँह!" अनेक घृणा आ क्रोधसँ देखैत छलैक असित ओहि क्षण ओकरा।

मुदा किशोर एक मुसकी संग चुप्पे रहैत छल। ओकरा बुझल रहैक जे कनेक कालक बाद येह असित ओकर खुसामद करतै। आ कोनो रेस्तराँमे चाहक गिलास संग माफी माङि लेतैक।— 'भाइ, तों तें बुझिते छह, हम ककरो आँखि नहि सहि सकैत छी, अन्याय नहि देखि सकैत छी। पता नहि, ओहि समयमे हमर देहमे कोनो प्रकारक सनसनी पैसि जाइत अछि आ हम होशमे नहि रहैत छी। असित मारते रास अपन सफाइ देबऽ लगितैक आ ओकरा किशोरकें मनबऽ लेल ओतबे मेहनति करऽ पड़ैक जतबा किशोरकें असितक क्रोध शांत करबामे।

चौकसँ आबि कऽ किशोर फेरसँ मीनक चिट्ठी उनटाबऽ लगैत अछि। अनायासे अनेक केबाड़ खुजि जाइ छैक आ भीषण बसातमे ओ अपनाकें आहत अनुभव करैत अछि। परीक्षा समाप्त भेलाक बादसँ गाममे बैसल-बैसल ओकर मोन एकदम 'इथेर इज्ड भऽ गेल छैक। भौजी द्वारा तुरते राखल गेल चाहक कपसँ उठैत भाफमे ओकरा होइत छैक जेना मीनाक नोर ओकर चारू कात भाफ भऽ उड़ि रहलैक अछि। ओकर चेहराकें भिजा रहलैक अछि। अपन गालपर अनेक जलकणक अनुभव होइत छैक किशोरकें। 'मीनाक विवाहक तिथि बड़ नजदीक आबि गेलैक अछि! —ओ सोचैत अछि। मीना! असितक बहिन। पहिल दिन किशोर ओकरा कालेजमे आमक गाछसँ लपकि-लपकि कऽ टिकुला तोड़ैत देखने रहय, मारते रास छौंड़ी सभ मुस्कुराइत गाछक नीचामे ठाढ़ि रहैक। अपन डिपार्टमेंटक बरामदासँ किशोर देखने रहय, मीना सभकें टिकुला बाँटि रहलैक अछि आ सभ खोंइचा दाँतसँ सोहि-सोहि खा रहल छैक। किशोरक मोन अम्मत-कोत भऽ गेल रहैक ओहि क्षण। 'केहेन हिम्मतिबाली छौंड़ी अछि। सभक बीचमे कूदि-कूदि टिकुला तोड़ैत अछि? कतेक अल्हड़! आ किशोर चोराकऽ मुसकुरा देने रहय। मुदा जखन असित संग पहिले बेर ओकर डेरापर गेल छल तें ड्राइंग रूममे ओही हिम्मतिबाली छौंड़ीकें कुर्सीपर बैसि किछु लिखैत देखने रहय ओ। असित परिचय करौने रहैक, 'किशोर ई हमर बहिन मीना थिक। फर्स्ट इयरमे अछि, एकर सबसँ पैघ गुण ई छैक जे-जे ई बड़ बदमास अछि। थोड़ेक दिनमे नीक जकाँ परिचय भेटिए जयतह। आ असित भभाकऽ हँसि देने रहैक। मीना किशोरकें अभिवादन कऽ बेस जोरसँ असित दिस आँखि गुड़ारने रहैक जेना काँचे चिबा जयतैक। ताहिपर एक ठहाका जमलैक। किशोरकें कूदि-कूदि मीनाक टिकुला तोड़ब मोन पड़ि आयल छलैक ओहि क्षण! तावत असित चाह लेल मीनाकें कहलकै आ मीना चल गेल छलि भीतर। किशोरकें बड़ पसिन्न पड़लैक मीना। ओह! कतेक चंचल! एकदम मुँह असित सनक मुदा पैघ-पैघ तरस आँखि सहजें ककरो आकर्षित करबाक सामर्थ्य रखैत छलैक। किशोरक मोनमे एक प्रकारक हुलास भरि आयल रहैक आ कहियो लगौल 'कान्ता

सेंटक गमक फेरसँ अनुभव करऽ लागल छल ओ। कनेक फेरसँ देखबाक इच्छा भऽ उठल रहैक, तावत मीना चाह, बिस्कुट लऽ चलि आयल रहय। चाहक संग चलि पड़ल छलैकक गप्प जाहिमे संजीव कुमारक एक्टिंगसँ लऽ कऽ मैथिली उपन्यासक मोडर्न पेंटिंग, आइ-कालहुक कविताक बाद देशक वर्तमान व्यवस्थापर आक्रमण शुरू भऽ गेल रहैक। असित खूब जोर-जोरसँ हाथ हिलाकऽ भाषण जकाँ देबऽ लागल छल। किशोर मुसकुराइत कखनोकऽ बीचमे टोक-टाक कऽ दैत छलैक ताहिपर असित उत्तेजित भऽ कऽ आर जोर-जोरसँ बाजऽ लगैत छल। एकाएक मीना बीचमे बाजि उठल रहैक, 'असित भैया, आब पूरा नेता भऽ गेल छथि। एकदम फ्री स्टाइल भाषण देबऽबला नेता! एहिपर ठहाका जमलैक मीना आ किशोरक। असित हँसिकऽ चुप्प भऽ गेल रहय। एहि बहसमे मीना बेसी काल किशोरक पक्ष लेने रहैक। किशोर गदगद भऽ उठल रहय ई सोचि जे मीना ओकरे सन विचार रखैत छैक। एकर बाद किशोर अपन लॉजमे घूरि आयल रहय। ओकरा भेल रहैक जेना कोनो प्रिय वस्तु ओ असितक डेरापर छोड़ि आयल अछि।

बहुत दिनक बाद जखन किशोर गेल रहय फेरसँ ओकरा डेरापर तँ असित नहि रहैक। ओकरा बुझल रहैक जे एखन असित डेरापर नहि भेटत। द्वारियेपर मीना ठाढ़ि रहैक। ओ दौड़िकऽ किशोरकेँ अभिवादन कयने रहय आ बड़ हुलाससँ बाजल रहय, कतेक दिनपर अहाँ अयलहुँ किशोर भैया! हम कतेक दिन भैयाकेँ अहाँ दऽ पुछैत छलियिनि। आ लऽ गेल रहैक मीना ओकरा ड्राइंग रूममे। मुदा किशोर मीनाक सम्बोधनपर चौंकि गेल रहय। एक सनसनी पैसि गेल छलैक ओकर देहमे, पसेना-पसेना भऽ उठल छल ओ। एक अल्हड़ किशोरी मीना द्वारा भैया सम्बोधन ओकरा नहि जानि किएक नीक नहि लागल रहैक। मुदा मीना छलि जे ओकरा चुप्प देखि अपनहिँ गप्प चालू कऽ देने रहय, भैया, अहाँक बड़ प्रशंसा करैत रहैत छथि। अहाँ कवितो लिखैत छिऐक ने? बहुत सुन्दर गीत सभ! कहू, हम कोना बुझि गेलहुँ? आ एक खुजल हँसी हँसि देने रहैक मीना। परन्तु किशोरकेँ किछु नहि फुराइत छलैक, की उत्तर दिऐक एहि प्रश्नक। ओकरा तँ एहि बीचमे बनाओल सभ कविता मोन पड़ि आयल छलैक। भेल रहैक जे सभ कविताकेँ फाड़िकऽ फेंकि आबय लखनदेइक किन्हेरमे। किशोरकेँ इच्छा भेलैक जे ओ एहि ठामसँ उठिकऽ चल जाय मुदा तखने असित चल आयल रहय आ किशोर नहि पड़ा सकल छल। असित संग थोड़ेक काल अनसोहाँत जकाँ गप्प कऽ ओ चल आयल रहल। ओकर भावुक मोन कहियो, कखनो एहि स्थितिसँ समझौता नहि कऽ सकल छल। बहुत किछु कल्पना किशोर कऽ लेने छल एतबे दिनमे, मुदा ओकरा कहुना बुझाबऽ पड़लैक अपन औनाइत मोनकेँ। कतेक दिन, कतेक राति मीना आ असितक संग

ओ हँसल छल, खेलायल छल, गीत गौने छल मुदा मीनाकें टकटकी लगा अपना दिस तकैत देखियो कऽ ओ कहियो ओकरासँ आँखि नहि मिला सकल। मीना रहय जे अपन चंचलता, अल्हड़तासँ कालेज वा डेरापर सभ ठाम ओकर चारू कात भैया भैया अनघोल कऽ देने छल मुदा किशोर कहियो ओकर प्रत्युत्तर नहि सोचि सकल रहय। ओकरा कखनो कऽ होइत छलैक जे ओ अपराध कऽरहल अछि, चुपचाप एहि सम्बन्धकें स्वीकार कऽ लेबाक चाही। एहि समयमे नीति वाक्य सभ ओकर मोनमे अहुरिया काटऽ लगैत छलैक। मुदा वसंती हवाक झोंकमे कल्पनाक हरियर पाँखिपर सभटा नीति उड़िया जाइत छलैक। एकदम अनैतिक भऽ उठैत छल ओ।

ओहि दिन अकस्मात् असित कालेजमे कहने रहैक जे आ आन्दोलनमे भाग लऽ रहल अछि, परसूका जुलूसमे भाग लेत।--भाइ! एहि गन्हायल सड़ल व्यवस्थाकें बदलबाक चाही। सभ दिन भ्रष्टाचार आ तानाशाहीक बिहाड़ि आबि गेलैक अछि। एकरा रोकि सकैत अछि तँ मात्र युवाशक्ति! आब भारतकें क्रान्तिक आवश्यकता छैक। असितक जोश देखि नहि जानि किएक किशोरकें हँसी लागि गेल रहैक। हँसिकऽ कहने रहैक, 'असित! एक टा काज करबह। कने जुलूसमे गनिकऽ देखि लेबहक जे कैक टा इमानदार लोक तोरा संग नारा लगा रहल छह। एहिपर असित बिगड़ि गेल रहैक। किशोर मुसकुराइत चुप्पे रहल रहय, ओ बुझैत छल जे फेर साँझमे असित ओकर डेरापर आबिकऽ क्रोध लेल पश्चाताप करतैक। मुदा असित नहि आयल रहैक ओहि दिन। दोसर दिन कालेजो नहि अयलैक। मुदा तेसर दिन मने जुलूसवला दिन किशोर बेसी बेचैन भऽ उठल रहय। 'की होयतैक से नहि जानि? ओकर मोनमे आयल रहैक। भरि दिन नारेबाजी आ हल्ला-गुल्ला सुनैत रहल। बाजार पूरा बन्द रहैक। 'मेस सेहो नहि चलल रहैक ओहि दिन। गामसँ आनल चूड़ापर निमहि जाय पड़ल रहैक ओकरा। साँझमे जखन ओ कोनो किताबमे डूबल छल तँ शर्मा हँफैत आबिकऽ कहने रहैक जे असितकें पुलिस पकड़िकऽ लऽ गेलैक अछि। ओ सभ टेलीफोन एक्सचेंजमे आगि लगा देने छलैक। तखन हड़बड़ा उठल छल किशोर आ तुरते विदा भऽ गेल छल असितक डेरा दिस। ओकर डेरापर थोड़ेक लोक सभ जमा छलैक। असितक बाबूजी ड्राइंगरूममे उदास जकाँ चुप्प बैसल रहथिन। किशोरकें बुझयलैक जेना एक भयानक मोन आइ व्याप्त छैक चारू कात। ओ सोझे अङना दिस चल गेल रहय। पहिने मीना भेटल रहैक कोठलीक द्वारि लग ठाढ़ि। किशोरकें लगलैक जेना मीनाक आँखिमे नोर हुलुक-बुलुक कऽ रहल छैक। किशोरकें देखिते मीना जेना मोनमे घुरियाइत प्रश्न पूछि बैसल रहैक, 'किशोर भैया! टेलीफोन एक्सचेंजमे आगि

लगयबाक की प्रयोजन छलैक ? मीनाकें भेल रहैक जे किशोर एकर उत्तर दऽ सकत मुदा किशोर किछु नहि थोड़ेक काल मीनाकें सान्त्वना दऽ चल आयल छल घर। ड्राइंग रूमसँ असितक बाबू जीक आवाज ओकरा सुनाइ पड़ल छलैक, 'एखन किछु नहि कयल जा सकैत छै। जमानति नहि होयतैक। किशोर जल्दी सँ बरामदा पार कऽ लेने रहय आ गेटसँ निकलि गेल छल। रस्तामे किशोरकें लागल रहैक जेना सभक नजरि ओकरेपर लागल छैक। मने पूरा शहर बुझैत छै जे ओ असितक संगी छिऐक। असित जे एखन थानामे बन्द अछि। किशोर झटकारिकऽ सड़क पार कऽ लाजमे घूरि आयल रहय। राति भरि ओ सूति नहि सकल। असितक चेहरा विभिन्न कोणसँ ओकरा समक्ष नाचि उठैत छलैक। असितक कहल गप्प सभ ओकर मोनमे चकभाउर देबऽ लगैत छलैक। कछमछ करैत राति बिता ओ भिनसरे थाना दिस बिदा भऽ गेल रहय जतऽ असित बंद रहय। मुदा थानामे ओकरा पता लगलैक जें असित सभकें जहलमे पठा देल गेलैक अछि। ओ हताश भेल। मुदा हिम्मति कऽ ओ जहल दिस विदा भेल। असितसँ भेँट करबा लेल किशोरकें बेस परिश्रम करऽ पड़लैक। कतेक अफसरकें खुशामद कयलक ओ तखन जा कऽ दुपहरियामे असितसँ भेँट भऽ सकलैक। असितक माथ आ हाथपर पट्टी बान्हल छलैक। किशोरकें भेलैक जेना शहरक जमादार दरोगा सभ नेक जकाँ अपन कबिलती देखौलक अछि। ओकर आँखिमे अपन दबंग दोसक हालत देखि नोर भरि अयलैक। असित शांत, मुसकुराइत ओकरा लग ठाढ़ छलैक। किशोरक हृदयमे बिहाड़ि उठल छलैक मुदा असित निश्चिन्त, दृढ़ बुझायल रहैक ओकरा। ओ असितकें पाँजमे लऽ लेने छल आ फुसफुसाइत सन बाजल रहय, 'ई की भऽ गेलैक, असित ? ओकर कंठ भरि आयल रहैक। असितक चेहरापर एकटा दर्द जेना उगि गेल होइ क्षण भरि ले' मुदा अपनाकें संयत राखि लेने छल ओ। 'ई तँ किछु नहि भेलै किशोर ! एखन आर बहुत किछु बाँकी छै। असित जेना शून्य दिस तकैत बाजल रहय। किशोर ओकर पट्टी दिस तकैत पुछने रहैक, 'ई चोट कोना लागि गेलह ? मुदा असित मने सुनने नहि होइ, बाजल रहैक, 'भाइ, जहिया-जहिया हम उत्तेजित होइत छलहुँ आ हमरा क्रोध होइत छन, ओहि रातिकें पश्चाताप हमरा सूतऽ नहि दैत छन। मुदा कालिह राति हमरा खूब निन्न भेल। एको टा मच्छरो नहि कटलक जेना। कहि असित हँसि देने रहैक। किशोरकें भेल रहैक, 'केहन अछि ई असित ? एखनो एकरा हँसिये सुझैत छैक। ओकरा बकोर लागि गेल रहै। ओ किछु नहि बाजि सकल, भावुकता ओकर ठोरकें जकड़ि लेने छलैक। किशोरकें भेलैक जेना असित ओकरासँ बड़ जेठ होइ। बड़की टा लोक जकर सामने ओ एकदम बच्चा अछि। सैह भावना ओकर मोनमे घुरियाइत एक टा

प्रश्नकेँ मोनेमे राखि लेबापर विवश कऽ देने रहैक। मीना द्वारा किशोरसँ पुछल गेल प्रश्न ? 'आखिर एक्सचेंजमे आगि लगाकऽ की फल भेटलैक ? मुदा ओ चुप्पे रहल। ताबत 'टाइम खतम' केर सूचना देने रहैक सिपाही। असित जाइत-जाइत कहने रहैक, 'किशोर भाइ! मीनूकेँ बुझा-सुझा दिहक। ओ 'सुपर-सेन्सेटिभ छैक। ओकरा हमर अभाव नहि खटकऽ देबहक से आशा तोरासँ अछि। कहि किशोरक हाथ दाबि ओ फेर जहलक कोठली दिस चल गेल रहय। जहलसँ बहराइत काल किशोरकेँ भेलैक जेना ओ एक टा अनुत्तरित प्रश्न एवं एक टा बड़का उत्तरदायित्व अपन कान्हपर रखने निकलि रहल अछि। ओकरा सोझाँ मीनाक गोल चेहरा एक टा बिकराल प्रश्न भऽ कऽ ठाढ़ भऽ गेल रहैक।

आइ किशोरक मोनमे ओहिना सभ बात घुरिया रहल छैक। मुदा ओकरा होइत छैक जे यदि ओ असितक स्थानपर जहलमे रहितय आ असित अपन बहिनक बियाहमे सम्मिलित भऽ सकितय तँ कतेक नीक होइतैक ? ओकर मोन जेना जहलमे टङि गेल छैक। भौजी द्वारा राखल गेल चाहक अन्तिम घोँटक बाद जखन ओ हिसाब लगबैत अछि तँ मीनाक बियाहक आइसँ दसे दिन रहि गेलैक अछि।

●

मिथिला मिहिर, 28-5-1978

एकटा चौक माने चण्डीनाथ

हमर गाममे लऽ दऽ कए एकटा चौक अछि। पूबभर आँटा चक्की मशीनसँ एकर एरिया शुरूह होइत छैक तँ पच्छिममे जयनाथक छोट-छीन सैलून तक जा खतम भऽ जाइत छैक। बीचमे एक टा फिरंगी जमानाक लोहाक पूल सेहो छैक। जकर नीचाँमे बहैत छैक कमला नदी। पूलपर दऽ कऽ आब तँ हर्र.....हर्र..... मारिते रास बस चलऽ लगलैए। पहिने बैलगाड़ी ढकर..... ढकर कऽ कए चलैक आ स्कुलिया चटिया सभ हेँज बान्हि कऽ पैदले स्कूल जाइ। आब स्कुलिया सभ तँ बससँ जाइ छै। एहि पूलपरसँ पार भऽ ओहिपार जा स्कूलमे पढ़ि हमर गामक कतेक रास चटिया आब मनुक्ख भऽ गेल छैक आ शहरमे कमाइ छै। डाक्टर, प्रोफेसर, कलक्टर भऽ गेलैए, एक दू टा पोथी लिखनिहार लेखको भऽ गेल छैक। मने जे आइ पैघ लोक कहबै छै समाजमे से कहियो 'बोल बम' कहि पूलपरसँ नदीमे चुभकऽ लेल कूदैत रहैक। बाड़ी-झाड़ीमेसँ 'प्लान' बना कऽ आम-लताम तोड़ैत रहैक।

चौकपर तीन-चारि टा चाह-पानक दोकान छैक, किरानाक दोकान सेहो छैक। पहिने तँ एकटा मारवाड़ी कतहुसँ आबि कऽ कपड़ाक दोकान सेहो खोलि देलकैए। मतलब हमर गामक चौक आब बजार सन लगैत छै—छोट-छीन बजार। भिनसर, दुपहरिया, साँझ कखनो एकर चहल-पहलमे कमी नहि अबैत छैक। साँझके तँ लग-पासक गामके बहुत रास लोक जमा भऽ जाइत अछि एहिठाम। चाहक दोकान सभपर अड्डा बेशी जमैत छै। लोक भरि दिनक थाकल-हारल मोन-देहकेँ राशि-राशिक गप्पसँ एहिठाम बहटारैत अछि। गप्पोक अजब ताल छै। हमर गाममे पहिने दरबज्जापर बैसिकऽ 'गोलैसी' होइत रहैक मुदा आब चौठियाक चाहक दोकानपर बैसिकऽ 'पोलिटिक्स' होइत छैक। 'पोलिटिक्स' शब्द आब बहुत सस्ता बजारू भऽ गेलैक अछि। हमर गामक चौकपर जहिना बीस पाइक चाहपर राजनीतिक बजार गर्म रहैत छैक तहिना टके सेर नेता सेहो तराजूपर चढ़ल भेटि सकैत छथि। नेतागिरी मने, आब एकटा पेशा भऽ गेलैक अछि। शहरक एहि रोगसँ हमरो गाम नहि बाँचल अछि। 'इनसेफलाइटिस' जकाँ इहो घरे-घरे हुलने फिरैत छै।

गाम-घरमे काजोक एकटा 'सीजन' अबैत छैक, तकर बाद बैसारी सन भऽ जाइत छैक। ई बैसारी राजनीति एकटा काज भऽ गेलैए। ओना आब तऽ 'सीजनो'मे राजनीति चलऽ लागल छैक। नेतागिरीक निशां सीजनक परवाहि कोना करतैक ? तऽ हमर चौक परहक जतऽ बहुत किछु आब बिक्री चलऽ लगलैए, वस्तु भेटऽ लगलैए, कतेक गोटे 'परमानेन्ट पेसेन्जर' भऽ गेलाह अछि। मतलब भिनसर-साँझ जँ ओ चौकपर जा चाह नहि पीताह तऽ हुनका अन्न नहि पचैत छन्हि, मोन औल-बौल करऽ लगैत छनि। एहि 'परमानेन्ट पेसेन्जर' लोकनिकें संक्षेपमे पी० पी० कहल जाइत छनि हमर गाममे। पी० पी० माने जे भिनसर, साँझ, नित्य बारहो मास चौकपर हाजिरी दैत छथि। हिनका लोकनिक कछमछी जँ देखबाक हो तऽ साओन-भादवमे देखी। कनियो बुन्नछेक भेल कि नहि, छाता लऽ कऽ ई जूमि जएताह चौकपर।

एहि पी० पी०क लिस्टमे जे सभसँ पहिल 'पोजीशन' धएने छथि हुनका लोक चण्डीनाथ कहैत छनि। चण्डीनाथ अहाँके कखनो कोनो समयमे चौकपर भेट सकैत छथि। एकर प्रकारसँ चौक मने चण्डीनाथ आ चण्डीनाथ मने चौक भऽ गेल अछि हमर गाममे। चण्डीनाथ-चौकक प्रतीक भऽ गेल छथि। हिनकर घरक लोककें कहब छनि जे चण्डीनाथ खा-पीबि कें हाथो सुखेबा लेल चौकेक रस्ता धरैत छथि। रातियो कऽ चौकसँ गामपर घुरनिहार चण्डीनाथ अन्तिम व्यक्ति होइत छथि। अहाँ कहब जे चन्डीनाथ एतेक बंधनमुक्त, बीतरागी भऽ कोना हरदम चौकेकें सेबने रहैत छथि ? तऽ एकर उत्तर हुनके मुँहसँ सुनू, "आखिर बेसी कमाइए खटा कऽ की होयत ? बड़का-बड़का तऽ लोक होइत गेलाह अछि गाममे, कोन पोखरि-इनार खुना देलनि अछि ? हुनका सभसँ तँ सात कक्षे हमही नीक। हर-हर ने खट्-खट्। भगवान मुँह चिरलनि अछि तऽ भोजनोक इंतजाम कइये दैत छथि। कोनो चिन्ता ने फिकिर।" चण्डीनाथकें ठीके कोनो फिकिर नहि छनि। माए हबेली-महरमे सपता-विपताक कथा कहि, चुल्हा-चेकी बना गूड़ा-खुद्दीक इंतजाम कऽ लैत छथिन। आब तऽ चण्डीनाथक स्त्रियो सासुक संग बहराय लगलथिन अछि। चण्डीनाथकें बाप नहि मोन छथिन। नेनेमे मरि गेल रहथिन। लऽ दऽ के तीन प्राणीक संसार। धीया-पूता एखन तक नहि भेलनि अछि। चण्डीनाथक बएस सेहो तीसकें पार कऽ रहल छनि आब। एहि लऽ कऽ चण्डीनाथक माय थोड़ेक चिन्तित रहैत छथिन। नोर आबि जाइत छनि कहुखनके आँखिमे। एहि बेर तऽ छठि-परमेशरीकें कबुलो कऽ देने छथिन। मुदा चण्डीनाथ लेल धन-सन, 'अरे, हमरा जंजाल मोल लेबाक अछि खरूहान जन्मा कऽ ? भने ठीक छी। एतेक लोक कें तँ धीया-पूता छैक, कोन सुख भेटि रहलैक अछि ? काल्हिए तऽ रमेशरकें

बेटा गाड़िए-मारिए तर कऽ देने रहैक। कोना कुहरैत रहए बुढ़बा। एहन बेटा जन्मौलासँ कोन काज? आ' चण्डीना सँ अहाँ बाप-बेटाक बिगड़ैत सम्बन्धपर धारा-प्रवाह भाषण सूनि सकैत छी। गाम-गामक उदाहरण दऽ अहाँके ओ सिद्ध कऽ देताह जे, आइ-कालिह अस्सी प्रतिशत बाप-बेटामे झगड़ा चलि रहल छैक। बेटा तंग भऽ गेल अछि बापसँ, तऽ बापके बेटा फुटलो आँखिए नहि सोहाइत छैक। एहि बीचमे जखन चण्डीनाथ अखबारमे मंत्री सभक बेटाक खिस्सा पढ़ैत छथि, कुकांड देखैत छथि तऽ हुनकर आँखि भगजोगनी जकाँ चमकऽ लगैत छनि। जाहि दिनसँ अखबारमे छपलै अछि जे आब देश के एहन प्रधानमंत्रीक आवश्यकता छैक जकर कोनो संतान नहि होइ ताहि दिनसँ चण्डीनाथ अपन पाँचो अँगुरी घीमे बूझ रहलाह अछि। एहि उल्लासमे कखन हुनक भाषण गामक सीमाके लाँघि देशपर भदबरिया मेघ जकाँ बरसि जायत तकर कोनो ठीक नहि। "अरे, एतेक लोक तऽ आबादी बढ़ाइये रहल अछि। सरकार कतबो चिचिआइत छैक, क्यो परबाहि करैत छैक? दू-तीन संतान की, आइ-कालिह तँ देशक खातिर बिना संतानके रहबाक चाही लोकके।" काहि चण्डीनाथक आँखि गौरवसँ भरि अबैत छनि। मुसकुराइत एक बेर ओ सभहक चेहराके देखि जाइत छथि मने सभक आँखिसँ हुनका लेल सम्मान चुअल जा रहल हो। ओ छाती तानि अपन गप्प चालू रखैत छथि।

मुदा 'इमरजेंसी'क समयमे गामक नवतुरिया सभ बड़का पेटकान दऽ देने रहनि चण्डीनाथके। आइयो जँ लोक मोन पाड़ि दैत छनि आ हुनक पुरुषत्वपर शंका करऽ लगैत छनि तऽ ओ नवतुरिया सभके गारि पढ़ऽ लगैत छथि। भेल ई रहैक जे चण्डीनाथ टेनसँ अपन सासुर तमुरिया जाइत रहथि। सोचने रहथि जे दू-तीन टीशन लेल किएक टिकट कटाएब, बरू घुरताकाल झंझारपुरमे सिंघाड़ा खा लेब। मुदा चेकिंगमे पकड़ा गेल रहथि चण्डीनाथ। पकड़िके मधुबनी लऽ गेल रहनि। एक सप्ताह बाद घूरिके गाम अएलाह। एम्हर गामक छौंड़ा सभ हल्ला कऽ देने रहैक जे चण्डीनाथके पकड़ि कऽ नसबन्दी कऽ देलकनि अछि। माय आ स्त्री पेटकान लऽ लेने रहथिन। जखन चण्डीनाथ जेलसँ घूरि कऽ चौकपर बससँ उतरलाह तऽ उतरिते लालककका चोट्टे पूछि देने रहथिन 'की हौ, सुनैत छियह नशबन्दी कऽ देलकऽ अछि तोरा? कहऽ तऽ क्यो बिना टिकटे टेनपर चढ़ैए।" कतेक गोटा अपना मोने सान्त्वना सेहो देबऽ लागल रहनि। मुदा चण्डीनाथके तँ एँड़ासँ टिकाशन धरि दागि देलकनि ई बात। ओ गुम्हरि उठलाह, "कथी ले हमर नशबन्दी करत क्यो। जे खबराहा सभ उड़ौलक अछि तकरा देखि लेबैक। आ दस-दस हजार गाड़ि पढ़ऽ लागल रहथि चण्डीनाथ। तामसे गाउज-पोटा चलऽ लागल रहनि। बादमे तऽ ओ लोकके धोती उघाड़ि-उघाड़ि देखबऽ लागल रहथिन।

सुनल ओहि राति स्त्री के खूब मारने रहथि चण्डीनाथ। मने सभटा क्रोध ओहि अबलापर उतारि देने रहथि। किएक तऽ ओ बेचारी सेहो नशबन्दीक सम्बन्धमे पूछि बैसल रहथिन।

एखनि धरि कतेक ठाम सफाइ दिअऽ पड़ैत छनि हुनका। लोकक मुँह बन्न करबाक हेतु एकटा संतान आवश्यक भऽ गेलनि अछि से मोने-मोन अनुभव करैत छथि चण्डीनाथ। मुदा से सौभाग्य अद्य: पर्यन्त नहि प्राप्त भेलनि अछि। ओहि घटनाक कारण चण्डीनाथ 'इमरजेंसी'क घोर विरोधी भऽ गेलाह अछि। 'इमरजेंसी' हटलाक बादसँ ओ 'इमरजेंसी'क जुलूम, जबर्दस्तीपर एकटा 'सालिड' भाषण तैयार रखने छथि। ई भाषण कखनो, कोनो घड़ी अहाँ हुनकासँ सुनि सकैत छी। हँ, भाषणक बाद एक कप चाह आ एक खिल्ली पान अवश्य लागि जाएत अहाँके। गामक समाचार, अड़ोस-पड़ोसक समाचार, देशक समाचार, मतलब तमाम समाचारक एक मात्र प्रसारक हमर गामक चौकपर अहाँकेँ सहजे भेटि सकैत छथि। कोन परिवारमे दूनू साँझ रोटिए चलैत छैक, ककर जमाय रूसि कऽ पड़ाय गेलैक अछि, ककर महींसके हेबनिएमे बच्चा भेलैक अछि, कोन अगत्ती छौंड़ाकेँ विदेशरक मेलामे करछुस मारि लगलैक अछि, ई तमाम खबरि अहाँ हमर गामक चौकपर बससँ उतरिते चण्डीनाथक सान्निध्यमे थोड़ेक कालमे जानि जाएब।

पछिला दिन गाम गेल रही तऽ सुनल चण्डीनाथ मुखियाक चुनावमे ठाढ़ भऽ रहल छथि। संयोगसँ साँझमे चौकपर भेटि गेलाह। एकान्तमे लऽ जा बेश 'सिरियसली' पूछऽ लगलाह, "मुखियाक चुनावमे ठाढ़ होयबाक लेल लोक बड़ जोर दऽ रहल अछि। अहाँक की विचार?" हमरा किछु जबाब नहि फुड़ल मुदा हुनका संतोष लेल बाजि उठलहुँ, "एकदम उत्तम विचार लोक दऽ रहल अछि। अहाँ सन लोक मुखिया नहि हुअए तऽ के हुअए?" चण्डीनाथ गद्गद् भऽ गेलाह आ फुसफुसाइत कहलनि, "माए कहैत छल जे तोँ कोनो काज नहि करैत छेँ। पहाड़ सन जिनगी पड़ल छौक, कोना गुजर होएतौक? गुजर लेल मुखियागिरी कोनो बेजाए काज छैक, भाइ साहेब? आ प्रश्नवाचक दृष्टिसँ हमरा दिस ताकऽ लगलाह। हम बौक भऽ गेल रही।

●

मिथिला मिहिर, 18-2-1979

ओ मनुक्ख भ' गेल

तों मनुक्ख भऽ गेलह, जानि बड़ दुख भेल। एहि दुआरे नहि जे तों आब हमर संग छोड़ि देलह अछि। परंच एहि दुआरे जे तोहर 'जीवन' आब समाप्त भऽ गेल छह। जीवन समाप्त भेनाइ मृत्यु नहि तँ आर की थिक ? मुदा मृत्यु कतेक वीभत्स होइत छैक से तँ तोरा बूझल छह। दोस, तोंहीं कहने रहऽ जे 'नीलिमा सुखक लेल हमरासँ फराक भऽ गेल, हमर जीवन ओकरा नहि सहि भेलैक। नीलू तऽ मरि गेलैक, भाइ।' कहि तों घृणासँ थूकि देने छलह। हमरा छगुन्ता एहि बातक नहि अछि जे कोना तों अपने कहल बातकेँ गीड़ि लेलह अछि। छगुन्ता एकर अछि जे एतेक दिनसँ सीयल दर्दक सभ सीयनिकेँ कोना तों उघाड़ि सकलह ? सभटा छिड़िया-बितिया गेलह ने ? आब सोचि लैह किछु, लीखि लैह किछुओ। किछु नहि होयतह आब तोरासँ। कतेक विश्वास छल तोहर दर्दक, तोहर संघर्षक, मुदा आब की ? आब तँ मात्र ठोरपर अनसोंहाँत मुसकी, आँखिमे दरबारी चमकी आ फुसियाह, बेमान स्वर छोड़ि की छौ तोरा लग ? सभ तेज, इमानदारी आ सत्य पर जड़ताक कनकन कुहेस पसरि गेल छौ। कोन सुर्य एहि कुहेसकेँ चीरि-फाड़ि सकैत अछि। ई कुहेस तऽ आब तोहर नियति भऽ गेल छौ। भलेँ तोहर वासना तृप्ति लेल ई एक नीक ओहारक काज करए, भले तोरा भोगमे निश्चिन्तता आबि जाउ। परंच, सत्य ई छैक जे कहियो एहि कुहेससँ बाहर तों नहि देखि सकबह।

तोरा मनुक्ख होयबासँ बचएबाक लेल ओना हम कोनो कसरि बाँकी नहि रखलहुँ, मुदा जानि नहि पूर्णतामे तोरा एतेक आनन्द किएक अबैत छह ? कतेक प्रयाससँ हम तोरामे किछु रिक्ति रखने रही जँ यैह रिक्तता तोरा गति देतह, प्रवाह देतह। ओह ! कतेक दिव्य प्रवाह छलह तोहर चिन्तनमे, लेखनमे। तोहर ओहि कथाक पाँती सभ एखनो हमरासँ बिसरल नहि जाइत अछि—'जीवन मात्र जीवनकेँ अंगीकार कएलक अछि ओ आइ धरि। जीवनसँ प्रेम छैक ने ओकरा। 'तों केवल तोंहीं छेँ आर किछु नहि' ओहि राति ठोर कोचिया कऽ कहने रहैक मीनूकेँ तँ ओ भभाकऽ हँसि देने रहैक, वाह, वाह ! की उपमा अछि ? आर किछु नहि भेटल ?'

मीनूक आँखिमे बदमासी भरल देखि ओ भड़कि गेल रहए, 'तँ की सूर्य, चन्द्रमासँ मिलान करा दियऽ अहाँ के ?' ओकरा होइत छैक जे मीनु आ जीवनमे कतेक साम्य छैक ! मीनू कहियो दोसर किछु नहि भऽ सकैत अछि, तहिना की जीवन मात्र जीवन छोड़ि आर किछु भऽ सकैत अछि ?—केहेन जीवन्त छैक ई पाँती सभ……। तोरा बूझल छलह जे जीवन आ मीनूमे कोनो अन्तर नहि छैक आ हमरा ईहो बूझल अछि जे तोहर मानस-प्रेयसी मीनू आ नीलूमे कोनो फरक नहि छलैक। नीलू तोहर जीवनमे आबि कऽ दोसरक भऽ गेलैक, जानि-बूझि कऽ किएक तँ ओकरा मनुक्खक भूख छलैक आ तों ओहि समयमे मनुखाह तृप्ति नहि दऽ सकैत छलहक। यैह, दर्द, रिक्ततासँ तोहर मानस-प्रेयसीक जन्म भेलह। तोहर 'मीनू' लोकके कतेक 'टच' कएलक तकर गवाह तोहर नामसँ आएल मारिते रास पत्र एखनो पेर्ट मे मौजूद छह।

हमरा छात्रावासमे तोरा संग घटल ओ घटना फेरसँ आइ मोन पड़ि आएल अछि। तोरा किएक आब मोन हेतह ? जाहि बरख तोहर बी०ए०क अन्तिम वर्ष रहौक, छात्रावासमे एक बहुत सुन्दर 'फर्स्ट इअर'क विद्यार्थी रहऽ लेल आएल रहए। ओकर आँखिमे एक विचित्र प्रकारक आमंत्रण भरल रहैक सदिखन। जेना सुनसान अन्हार रातिमे दूरसँ थरथराइत माटिक दीपक इजोत यात्रीके अपना दिस खीँचि लैत छैक, एहने सनक आकर्षण तोहर भावुक मोनमे ओकर आँखिके देखि उपजल रहए। तों ओकरासँ मित्रता कऽ बैसल छलह। ओ जखन तोहर कोठलीमे आबए तँ तोहर कलेजा धक्-धक् करऽ लगैत छलौ। इच्छा होउ जे ओ हरदम तोरे लग बैसल रहए आ तों ओकर आँखिके देखल करएँ। मुदा ओ तँ तोरा कहियो अपन मित्र नहि मानलकौ, सभ दिन एक जेठ भाइ जकाँ 'रिसपेक्ट' दैत रहलौ। ओना, तोरा मोनमे कहियो कऽ ई बात उठए जे एहने जँ तोहर एक छोट भाए रहितए। वास्तवमे छोट भाइक सेहन्ता तोरा बड़ा रहौ किएक तँ एको टा छोट भाइ तोरा नहि छौ ने ? भरिसक एही कारणसँ तों ओकरापर अपन अधिकार बूझऽ लगलें, जे ने ओकरा कहियो रूचलै आ ने छात्रावासक ओकर आन संगी सभके। हमरा नीक जकाँ मोन अछि तोहर ओ बलात् हँसी जे तोरापर ओकरा संग नाजायज सम्बन्धक आरोपक समय निकलल रहए। कोनो अस्वस्थ मस्तिष्कक उपज थिक ई, तों सोचने रहें ओहि क्षण ! मुदा बाजि नहि सकलें कहियो जे ई आरोप एकदम फूसि थिक, निराधार थिक। तोहर हँसी तोरा लेल भले कोनो शब्द गढ़ैत हो, मुदा अनका लेल मात्र एके टा अर्थ रखैत छलैक। ओही अर्थक मूल्यपर तोहर ओ 'अधिकार' बन्हकी रहि गेल रहए ओहिठाम ! चुप्पीक एक देबाल ठाढ़ भऽ गेल रहए तोरा दुनूक बीचमे। ककरोसँ बाजा-भुक्की बन्द भऽ गेनाइ कतेक गति दैत

छैक चिन्तनकें, से तोरा नीक जकाँ बुझल छौ। मोनमे भावना मोम सन पिघलैत
रहल, मुदा ठोरक बन्द कपाट लग आबि मोनक ठंढसँ जमैत रहल, पाथर होइत
रहल। ओहि पाथरकें तराशि कऽ एक शाश्वत मूर्तिक निर्माण कएने रहें जे सभ
दिन तोरा विश्वास दैत रहलौक जे, 'हम अपन लिखल पाँतीक प्रति बेमान
नहि छी।'

मुदा आब हमरा हँसी एहि दृश्यकें देखि लागि रहल अछि जे तों पड़ा रहल
छें, तोहर वेह अपन पाँती तोहर शत्रु भऽ गेल छौ आ तोहर मनुखाह कंठ के मोंकऽ
लेल तत्पर अछि। ओना, तोरा आब एहि सभक कोनो परबाहि नहि रहि गेलहु,
किएक तँ तों ओहि प्रवाहकें छोड़ि भसिएबाक डरसँ कछेड़ धऽ लेने छें। मुदा,
जानि ले, तोहर लिखल ओ गतिशील पाँती सभ जे लोकक मोनमे एखनो चकभाउर
दऽ रहल छैक, तोरासँ प्रतिशोध लेबाक ओरियाओन कऽ रहल अछि। ओना हम
इहो जनैत छी जे तों स्पन्दनहीन भऽ गेल छें, कोनो दर्दक अनुभव आब कहियो ने
होयतौक तोरा........। कहियो भोगल के चुभनि आब महसूस नहि होयतौक। ओह,
'इथेराइज्ड' कऽ देलको तोरा ई मनुक्ख होयबाक वासना। ओह, हम किछु पहिनहि
बुझितियैक जे तोहर भावनाक स्खलन भऽ रहल अछि. तों जड़ता दिस भागल जा
रहल छें। आब तऽ बीतल अतीत मात्र हमरे टा लेल सुरक्षित रहि गेल अछि।
वर्तमानमे कछमछाइत हम तोहर भविष्यक आराधनाक मर्म आब बूझि रहल छी।
ओना मोनकें परतारबाक लेल बहुत रास साधन तोरा लग जूटि गेल अछि—कतेक
रास वस्तु, व्यस्तता, सम्मान, स्नेह आ एही कारणसँ तों अपनाकें भाग्यशाली बूझऽ
लागल छें। मुदा, दोस, आनन्द सेहो कतेक प्रकारक होइत छैक। सोनाक पिंजड़ामे
सुख भोग करैत पक्षीक आनन्दमे आ उन्मुक्त आकाशक मध्य विचरण करैत, बरखासँ
भीजैत पक्षीक आनन्दमे की अन्तर छैक से आब तों नहि बूझि सकैत छें। चानक
शीतल चान्दनीसँ स्नान कऽ रंग-बिरंगक फूलपर पएर रखैत, सतत् नृत्यक मुद्रामे
गति, तालसँ झूमैत निशा सुन्दरीक आलिंगनमे आ शीशमहलक अन्हार अस्पष्ट
चित्कारक ध्वनिमे भेद करब आब तोहर सामर्थ्यक बाहरक गप्प भऽ गेल अछि।
तों कहबें जे अनिश्चितता, अस्थायित्व, संत्राससँ तोरा कोनो उपलब्धि नहि भऽ
रहल छलौक, मुदा अपन उपलब्धिक गणना कएनिहार तों के?

ओहि साँझ जहिया अपन सिप्टीपीन भोंकैत हवाइ चप्पल पहीरि भरि दिन
कोलतारक घमैत सड़ककें नापि तों घूमल रहें, तऽ तोहर मुँहक तेज देखबा जोगर
रहए। मोड़ल अखबारक बीच राखल 'सर्टिफिकेट'सँ अपन कपारक पसेना पोछैत
तोहर स्वर कतेक इमानदार भऽ उठल रहए, 'हमरा ककरोसँ शिकाइत नहि अछि।

आखिर क्यो हमरा लेल कइए की सकैत अछि ? ककरा सामर्थ्य रहि गेल छैक हमर भीतरक ज्वालामुखी देखबाक। सभकें तऽ हमर देहक एक-एक टुकड़ी मासु नोचबाक, एक-एक बुन्न लहू खिचबाक बेगरता छैक। सभटा आशा हमरेपर किएक थोपि देल गेल अछि ? यदि हम कमएनिहार, खटिनिहार, बान्हल-छेकल तथाकथित मनुक्ख नहिएँ बनब तँ संसारकें की बिगड़ि जएतैक ? हम उपलब्धि कहियो ने होबऽ चाहैत छी।' तोहर दर्दसँ ओहि दिनुका राति कतेक गढ़गर भऽ गेल रहैक, मने सभ अभिव्यक्ति लस्सा जकाँ ओहिमे सटि गेल होइक। दर्द अभिव्यक्ति मँगैत रहलैक अछि सभ दिन। आ' यैह अभिव्यक्ति तँ संसारकें दिशा दैत छैक, गति दैत छैक। अपनाकें कोइला आ छाउर किछु नहि बना सकनाइ सेहो एक कला थिकैक दोस! कलाक ओहि लीकपर चलैत-चलैत तोहर पएर डगमगा गेलौक। हमरा दुख तँ मात्र तकरे अछि।

हमरा यदि तोहर चलनाइ मोन अछि तँ खसनाइ सेहो ओहिना मोन अछि। अन्हरिया रातिक ओहि अलकतराएल अन्हारमे शराबक निशांमे डगमग करैत तोहर देह जखन भसिया रहल छलौ तँ हमरा पहिल दिन सत्यपर शक भेल रहए। आखिर, तोरा निशांकें आवाहन करबाक आवश्यकता किएक पड़लौ से हम ओहि क्षण नहि सोचि सकल रही। होशकें गुम कऽ लेनाइ कमजोर हाेयबाक लक्षण नहि थिक तँ आर की थिक ? तोहर ई बेहोशी आश्रय ताकऽ लागल रहए। आखिर तों कोनो लतरबेल तँ नहि रहें जे तोरा फुलएबाक लेल कोनो मचानक काज पड़ितैक ? 'हमरा होशक काज नहि अछि। बेहोशीसँ हमरा शान्ति भेटि रहल अछि। चैन भेटि रहल अछि। हम आब नहि सहि सकै छी..........हमरा घर चाही.......रुपैया चाही.......स्त्री चाही.......। हम आब सभ वस्तुसं, सुखसँ पूर्ण होबऽ चाहैत छी।' ओहि क्षण तोहर मृत्यु भऽ रहल छलौक आ एक मनुक्खक जन्म भऽ रहल छल। तों टूटि रहल छलें। खण्ड-खण्ड भऽ तोहर सभ दर्प, तेज, विश्वास छिड़िया-बितिया रहल छलौक। गलि रहल छल तोहर ओ पाथरक शाश्वत मूर्ति, भरि रहल छल ओ रिक्तता जे मानस-प्रेयसी मीनूक जन्म देने छल। ठंढा भऽ रहल छल ज्वालामुखी जकरा देखबाक सामर्थ्य ककरो नहि रहैक। बनि रहल छल एक मचान जाहिपर तों लतरि रहल छलें।

आइ तोरा सभ किछु छौ, जे तोरा लतरबाक लेल आवश्यक अछि—स्त्री, घर, रुपैया.......सभ किछु.......। मुदा, तों कमजोर भऽ गेल छें, बेबश भऽ गेल छें। आब ओ उन्मुक्तता कतऽ ? आब तोहर दर्द ककरो मलहम नहि बनि सकैत अछि। आखिर कोनो दर्द बाँकी रहौक तोरा तखन ने। तोरा सन, एक मनुक्ख

सन कमजोर आर के भेटत ? नीलू आ तोरामे आब की फरक रहि गेल अछि ? 'नीलू तँ मरि गेलैक'—कहनिहार सेहो आब मरि गेल अछि। तोहर मृत्यु मात्र हमहीँ टा देखि रहल छी, किएक तँ हम नहि मरल छी, आ कहियो मरबो नहि करब। हम एखनो चिचिया कऽ कहि सकैत छियैक जे—हमर लेखक मरि गेल अछि। ओ तँ आब मनुक्ख भऽ गेल। आब ककरो दिशा नहि दऽ सकैत अछि, ककरो हृदयकेँ आब 'टच' नहि कऽ सकैत अछि........।

●

मिथिला मिहिर, 2 सितम्बर 1979

तेसर प्रश्न

दस बरस पहिने कृष्णकान्त चौधरीक बाप राम प्रवेश चौधरी जखन रेलवेक नोकरीसँ रिटायर भऽ कऽ गाम आएल रहथि तऽ गामक नवयुवक हुनका नीक जकाँ नहि चिन्हैत रहनि। पच्चीसे बरखक बएससँ ओ गामसँ बाहर भऽ गेल रहथि। तैंतीस-चौंतीस बरस नौकरी कएलाक बाद पुनः ओ गाम घुरलाह। कोनो काज-करतेबताकें छोड़ि ओ एहि अवधिमे कमे गाम आएल होयताह। तखन गामक नवयुवक जकर बएसे बीस-पच्चीसक रहैक, कोना हुनका नीक जकाँ चीन्हि सकितनि। ई बात चौधरी नीक जकाँ बुझैत रहथीन। मुदा असल दुख तऽ एहि बातक रहनि जे गामक बूढ़ पुरनियाँ सेहो हुनका पहिलुके राम प्रवेश बूझैत रहनि। भरि जुआनी ओ गाममे चौधरी बाबू कहबऽ लेल शहरमे खटैत रहलाह, खून-पसीना एक करैत रहलाह। शहरमे भले ओ चौधरी साहेब बनि गेल रहथि मुदा गामक लोक लेल धन्न सन.......। ई बात नहि रहैक जे राम प्रवेश चौधरी नहि जनैत रहथि जे गामक लोक हुनका मोजर किएक नहि देलकनि। ओ सभटा बढ़ियाँ जकाँ बूझैत रहथीन। तैंतीस बरख नोकरी कएलाक बादो ओ एकोटा इंटाक मकान नहि बना सकल रहथि। बेटीक बियाहमे डंकाक चोटपर रुपैया नहि गनि सकलाह। डाक लगा के गाममे बिकाइत एक्को कट्ठा जमीन नहि कीनि सकल रहथि। हुनकर लोक-वेद तहिया बेगरतामे टोल-परोससँ पैंच उधार लैत रहनि। गाममे मोजर लेल शहरमे कमेनिहारकें बहुत रास काज देखबऽ पड़ैत छैक आ काज बिना रुपैयाक नहि होइत छैक। चौधरी तैंतीस बरस नोकरी कइयो कऽ एतेक रुपैया नहि कमा सकलाह जे गाममे रामप्रवेशसँ रामप्रबेश बाबू बनि सकितथि।

रामप्रवेश बाबू नहि बनि सकबाक कुंठा अपन एक मात्र बालक कृष्णकान्तकें देखि क्रोधमे परिणत भऽ जाइनि। हुनका लेखें कृष्णकान्त नलायक निकलि गेल रहए। पँच बरखसँ बी० ए० पास कऽ के बैसल रहए गाममे। रामप्रवेश चौधरी तऽ निभरोस भऽ गेल रहथि। जतेक ओ कऽ चुकल रहथि ओहिसँ बेशी करबाक सामर्थ्य नहि रहि गेल रहनि। पेट काटि-काटि कऽ रामप्रवेश चौधरी अपन बेटाकें बी० ए० करौने रहथि। आने दूनू साँझ रोटी आ दालि खा कऽ बेटा लेल सूटक इंतजाम कएल करथि। भरि जीवन बिना परिवारक 'बैचलर' जीवन बितौने रहथि मात्र एहि दुआरे जे ई दू टा पाइ बचा कऽ बौआ के समयपर रुपैया चल जाइ।

जहिया कृष्णकान्त बी० ए० पास कएने रहए रामप्रवेश बाबूक छाती सूप सनक भऽ गेल रहनि। सत्यनारायण पूजामे भरि गाम हकार देने रहथिन्ह आ अपनहि हाथे सभ के प्रसाद- पान-सुपारी बँटने फिरथि। खुशी-खुशी सभकें कहने घुरथिन्ह, 'आब कोन बात छैक ? एकरा सँ दू कमे निहार भऽ जाएत। आब तऽ कृष्णकान्ते घर सम्हारथु, हम तऽ आब दूनू बेकती बाँचल उमेरमे तीर्थ-बर्त करब। खाली एकटा कन्यादान कपारपर रहि गेल अछि सेहो बाबा बैद्यनाथ पार लगा देबे करथिन। बुचिया के भाग्य सेहो आब कमेनिहार भऽ गेलैक। बहीन लेल कृष्णकान्ते नीक घर-वर तकताह।' संतोषक एक आभा हुनक मुँहपर पसरि गेल रहनि। मुदा बी० ए० पास कएला मातरे जँ नोकरी भेटि जइतैक तऽ कोन बात छलैक ? रामप्रवेश चौधरी कतेक बेर आन पहिलुका साहेबो सभ लग कोशिश पैरबी केलनि मुदा कृष्णकान्तकें कतहु गड़ नहि बैसि सकल रहनि। रामप्रवेश चौधरीक सभ आशा आ आस्था ढनमना कऽ खसि रहल छलनि। जे काज अपने नहि कऽ सकल रहथि से अपन बेटा कृष्णकान्तसँ चाहैत रहथि। भगवतीसँ एतबे प्रार्थना करथि जे मरैतो बेर तक गामक लोक हुनका कहि सकितनि, 'रामप्रवेश बाबू ! अहाँ सन बेटा भगवान सभ के देथुन्ह। कमा कऽ ढेर लगा देलक। आब अहाँके कोनो कमी नहि रहल। बैसि कऽ खाउ-पीबू आ पोता-पोती संग खेलाउ.......।' तँ ओ आनन्दसँ नोराएल आँखि सभ दिनक लेल मूनि लितथि। मुदा ओहेन नोर कृष्णकान्तसँ भेटबाक आशा तहिया रामप्रवेश चौधरी के नहि रहि गेल रहनि। तँ कृष्णकान्त के देखिते मातर हुनका क्रोध भऽ जाइत छलनि।

तहिया कृष्णकान्त गामे रहल करथि। गामक चौक के एक स्थायी सदस्यक रूपमे। एहि चाहक दोकानसँ ओहि पानक दोकान तक घुरियाइत भिनसर-साँझ कटि लैत रहथि। चौठियाक भाँग, सीतारामक पेड़ा संग बेस सुअदगर होइ छै। तहियासँ भजीक गुड़िया खिल्ली पानपर रंग-बिरंगक गप्प नवयुवक लोकनिक हिस्सक भऽ गेल अछि। गामक चौक आब कहुखन लोकसँ खाली नहि रहैत छैक। चारि-पाँच टा चाह-पानक दोकान, दू टा किरानाक दोकान, ठकाइ साहुक मधूर घर आ होमियोपैथी डाक्टर प्रकाश बाबूक डिसपेंशरी। यैह एखनहुँ छैक गामक चौकक एरिया। तहियो सैह रहैक। डाक्टर प्रकाश बहुत रास दुनिया देखि कऽ गाममे क्लीनिक खोलने रहथि। गामक बेरोजगार पढ़ल-लिखल युवकक अड्डा हिनके ओहिठाम जमैत रहैक ताहि दिन। महत्वाकांक्षी, स्वप्नजीवी, नवतुरिया सभकें होमियोपैथीक मिठका गोली सन मीठ-मीठ बोलीसँ दुलराबऽ हिनका खूब अबैत रहनि। टूटैत स्वप्न, कुंठा के हटा हिम्मतिक संचार करबामे माहिर रहथि डाक्टर प्रकाश। यैह कारण रहैक जे ताहि दिन डाक्टर बेरोजगार नवतुरिया सभक

'लीडर' भऽ गेल रहथि। स्वप्नजीवी कृष्णकान्तक दम तोड़ैत आस्थामे आशाक संचार करैत छलाह डाक्टर प्रकाश।

कृष्णकान्तकें नेनेसँ बड़का-बड़का सपना देखबाक हिस्सक रहनि। थोड़ेक बीचे तँ हुनका 'हीरो' बनबाक धुनि सेहो सवार भऽ गेल छलनि। देखबा-सुनबामे सेहो बेजाए नहि रहथि, ताहिपर नाटको सभमे अभिनय करथि। कालेजमे जखन रहथि तऽ खेनाइ-पिनाइसँ बेशी कपड़े लत्तेपर कृष्णकान्तक बेशी ध्यान रहल करनि। सीट-साटि कऽ अएनामे अपन मुँह देखल करथि आ बम्बइया हीरो सभसँ मिलान करथि। कतेक राति तहिया सपना देखने हेताह जे बड़का स्टार भऽ गेल छथि। हजारो लोक आगू-पाछू कऽ रहल अछि। फ्लश कैमरासँ आँखि चौंधिया रहल अछि। कैक बेर पड़ाकें बम्बई जएबाक विचार अयलन्हि मुदा हिम्मति नहि भेलन्हि, पड़ा नहि सकलाह।

मुदा एक दिन पड़ाइये पड़लन्हि गामसँ। आखिर कत्तेक दिन रहितथि? पिताक उपेक्षा, समाजक व्यंग्य, दोस महिमक हास्य एक दिन तोड़ि कऽ राखि देलकनि। गाम सभ किछु दऽ सकैत छलनि मुदा नोकरी नहि दऽ सकैत छलनि। गाम, जाहिठाम जन्म लेने छलाह, जकर माँटि-पानिसँ देह, आत्माक निर्माण भेल रहनि। गाम जाहि ठाम लोक-वेद, इष्टमित्र, अपन समाज रहनि कृष्णकान्तकें सभ दिनक लेल स्वीकार नहि कऽ सकलनि। रोजगार एक विकराल प्रश्न बनि कऽ कृष्णकान्तक समक्ष ठाढ़ भऽ गेल छलनि। एहि प्रश्नक समाधान लेल एक दिन भोरे, अनरोखे कमलाक कछेड़ छोड़ि कृष्णकान्त चौधरी बिदा भऽ गेलाह शहरक महासागर दिस.........।

कृष्णकान्त गामसँ तऽ निकलि गेलाह मुदा कतऽ जाइ से, उहापोह मोनमे लागल रहलनि। गाममे ककरो किछु कहि कऽ नहि आएल रहनि। साँझमे सभ दिन जकाँ चौकपरसँ घूमि-फिरि गामपर अएलाह तँ बाबू देखिते मातर गरजऽ लागल छलथिन। 'आबि गेलाह महराजबहादुर! कमयनाइ एक्को पाइ नहि आ भोजन भरि थाड़ी। एहि बेटासँ तऽ बिन बेटाक नीक। कतौ पड़ाइयो जायत से नहि। जानक फुर्सति हैत।' कृष्णकान्त किछु नहि बाजल रहथि मुदा भरि राति निन्न नहि भेल रहनि। बगलमे पड़ल पत्नी आ दूनू बेटा के निहारैत रहि गेलाह। अनरोखे स्त्रीक बाकससँ किछु रुपैया निकालि, निकलि गेल रहथि।

आब एहि गप्पक दस बरख बीति गेल अछि। कृष्णकान्त तहिया गामसँ पड़ा कऽ अपन ममियौत भाइ लग कलकत्ता चल आएल रहथि। किछु दिन ट्यूशन आदि कऽ काज चलौने रहथि। तकरबाद एक दबाइ फैक्ट्रीमे क्लर्कक काज भेटि गेल रहनि। समय बीतैत गेल आ कृष्णकान्त क्लर्कसँ उन्नति करैत-करैत आब

मनेजर भऽ गेल छथि। मुदा घूमि कऽ एखन तक गाम नहि अएलाह अछि। गोड़ पाँचेक बरख होइत अछि अपन ममियौत भाइक बेटा के गाम पठा स्त्री आ दूनू बालकके कलकत्ता मँगा लेने रहथि। मुदा गाम आ माय-बाप के नहि बिसरि सकलाह। गामक महादेव मन्दिर, धानक खेत, बँसवाड़ि, बड़का लोहाक पूल, दोस-महिम सभ ओहिना मोन छनि आइ तक। कमा-कमा के रुपैया बापक नामे पठवैत रहलाह।

आइ तँ कृष्णकान्त पैघ लोक भऽ गेल छथि। हजारोसँ खेलाइ छथि। कम्पनीक एक तिहाइ शेयर खरीद चुकल छथि। गाममे दुमंजिला मकान बनि गेल छनि। बहिनक विवाह दू बरख पहिने पच्चीस हजार टाका गनि एम० बी० बी० एस० वरसँ करा चुकलाह अछि। गाममे जे जमीन बिकाइ छै ताहिपर सभसँ बेशी डाक कृष्णकान्तक बाप रामप्रवेश चौधरीक रहैत छनि। रामप्रवेश चौधरीक बुढ़ारी आब नीक जकाँ कटि रहल छनि। सूतो छोड़िक आब टेरीकाटन आ पोलिस्टरक कुर्त्ता पहिरऽ लगलाह अछि। एहि बूढ़ौतीमे मने फेरसँ जुआनी घूरि अएलनि अछि। घोकचल चमड़ी सेहो आब सैइर भऽ कऽ लाल भऽ गेलनि अछि। किएक ने होइनि, खुट्टापर दू टा दूधगरि महींस बान्हल छनि। हफ्ताबारी हाटपरसँ माछ आ मासु अबिते टा छनि। हलाली कएल माँस पहिने नहि खाइत रहथि, आब खाय लगलाह अछि। पुतहु आ बेटाक प्रशंसा कियो हुनकासँ सुनय। जे चौधरी तहिया ककरो कुशल क्षेमक पहिने बेटाक दस हजार निन्दा सुनबैत छलथिन आ पुतहुकें अलच्छ खापड़ि कहैत रहथिन से आब बेटा आ पुतहुक प्रशंसा, सेवा-भावनाक खिस्सा कहैत नहि थकैत छथि। कैक बेर कलकत्ता जा कऽ बेटा-पुतहु, पौत्र-पौत्रीकें देखि अएलाह अछि। मुदा कृष्णकान्त जहियासँ गामसँ पड़यला बापक कतबो कहलापर गाम घूरि कऽ नहि अएलाह अछि। बहीनिक बियाहोमे नहि। बेटीक वियाहमे रामप्रवेश चौधरीकें एकमात्र बेटाक अभाव बेश खटकल रहनि मुदा मोन मसोसि कऽ रहि गेल रहथि। कृष्णकान्तक माए कनैत-कनैत बताहि भऽ गेल छलथिन। माएकें कतेक बेर कृष्णकान्त कलकत्ता बजा घुमा-फिरा चुकल छथि। मुदा गाम अएबाक मामलामे मायोक आग्रह नहि मानने रहथि।

मुदा अकस्मात् एक दिन कृष्णकान्त अपन लेटेस्ट मार्क फोर एम्बेसेडरपर गाम पहुँचि गेलाह? सपरिवार। रामप्रवेश चौधरी मारे खुशीसँ कानऽ लागल रहथि। खुशीक कारणे होइन जे नाचऽ लागी। खन आँगन जाथि आ खन बहरी आबथि। चौधरीक असोरापर गामक लोकक भीड़ लागि गेल रहय। सभ कृष्णकान्तकें गाम बिसरि जयबाक लेल स्नेह भरल उलहन दऽ रहल छल। लोक देखलक जे समयक चेन्ह कृष्णकान्तक शरीरपर खूब जगजियार भऽ आएल अछि।

छरहर कृष्णकान्त आब थुलथुल भऽ गेल छलाह। कनपट्टी लगक केश पाकऽ लागल रहनि। सभसँ भेंट-घाँट करैत-करैत रातिक बारह बाजि गेल रहनि तखन जा कऽ सूति सकलाह कृष्णकान्त।

दोसर दिन अनरोखे रामप्रवेश चौधरीक निन्न कोनो गाड़ीक हड़हड़ीसँ टूटि गेल रहनि। देखलनि एक टा जीप दरबाजा दिस बढ़ल आबि रहल अछि। जीपसँ पाँच आदमी उतरल। ओकर पाछू एक आर जीप आबि कऽ रुकलैक। जाहिपरसँ पुलिस इन्सपेक्टर उतरि रहल छल। रामप्रवेश चौधरी अकबका कऽ ठाढ़ भऽ गेलाह। एक व्यक्ति पुछलकनि, 'की ई कृष्णकान्त चौधरीक घर थिक?

'जी हँ, हुनके घर छियनि। हम हुनकर पिता छियनि रामप्रवेश चौधरी। अपनेकेँ कोन काज अछि हुनकासँ?' रामप्रवेश बाबू जबाब दऽ प्रश्न कएलनि।

'हम सभ सी० बी० आइ०क अफसर छी। कृष्णकान्त चौधरीक दबाइ कम्पनीमे नकली दबाइ पकड़ल गेलनि अछि। ओ पकड़ेबाक डरसँ पड़ा कऽ गाम चल अएलाह अछि। हमरा संग हुनकर 'एरेस्ट वारंट' अछि।' दोसर व्यक्ति बजलाह।

रामप्रवेश चौथरीक माथ घूमि गेलनि। कृष्णकान्तक जन्म मोन पड़लनि। ओकर जुआनी मोन पड़लनि। अपन बुढ़ारी मोन पड़लनि। अपन दुख मोन पड़लनि। अपन सुख मोन पड़लनि।

तावत् तेसर व्यक्ति तेसर प्रश्न कएलक, रामप्रवेश चौधरीसँ, 'कृष्णकान्त चौधरीकेँ दस बरखक अन्दरे एतेक धन कोना एकत्रित भऽ गेलनि? दस बरख पहिने अहाँक माली हालत की छल? की कृष्णकान्त चौधरीक एहि नाजायज कमाइक भागीदार अहाँ नहि छी?' रामप्रवेश चौधरी अवाक रहि गेलाह। किछु नहि फुड़ा रहल छलनि। की उत्तर दी एहि असामयिक प्रश्नक। ओ मौन रहि गेलाह।

भिनसर गामक लोक सुनलक, कृष्णकान्तकेँ पुलिस पकड़ि कऽ लऽ गेलनि। नकली दवाइ बनबैत छलाह अपन कम्पनीमे। फेरसँ लोक कृष्णकान्तपर व्यंग्य कसऽ लागल। फेरसँ दोस-महिम कृष्णकान्तपर हँसऽ लागल। फेरसँ रामप्रवेश चौधरी भगवानसँ मनबऽ लगलाह जे कृष्णकान्त जनमिते मरि किएक ने गेलाह।

फेरसँ एक बेर कृष्णकान्तकेँ गाम स्वीकार नहि कएलक।

●

मि० मि०, २६-९-१९८२

डेरबूक

गामक टीशनपर उतरलाक बाद एक बेर सुभाष चारूभर नजरि फिरौलक। बदलल-बदलल सन बुझेलैक। दस बरखक अन्तराल कम नहि होइ छै। बहुत रास परिवर्त्तन भऽ गेल रहैक। टीशनपर दस टा रिक्सा देखाइ देलकै। पान-चाहक दोकानके संग होटलक सख्या सेहो बढ़ि गेल छलैक। गामसँ पड़ाएल रहय जहिया ओ तहिया एके टा होटल रहैक। अजबलाल झाक होटल। मोटका उसना चाउरक भात, कमलाक माछपर नेबो आ पातर-पातर काटल अल्लूक भुजिया खूब चलै छलै। हरदम गंहिकीसँ भरल। पीढ़ीक बदलामे आब कुर्सी-टेबुल आबि गेल रहैक। ओ टीशनसँ बहराएल। एकटा चाहक दोकानपर बैग राखि कऽ बेंचपर बैसि गेल। कियो चिन्हार नहि भेटलै। ओकरा खुशी भेलै। दस बरखक बाद गाम अएबाक कौतूहल आ कोनो चिन्हार लोकसँ भेंट नहि होयबाक कामना मोनक हिलकोरके कखनहुँके बढ़ा दैक। जाहि कारणे भागल रहए गामसँ से मोन पड़ि अबै तऽ गाम अएबाक खुशी बिला जाइ। कोना सामना कऽ सकत ओ लोकक आँखि ? घृणासँ भरल आँखि ? भगबा काल पाछू पीठपर गड़ैत अनेको आँखिक चुभनि आइ मोन पड़ि अबै छै। इस्स……

'चाह पीबै मालिक ?'—चाहबला गुमसुम बैसल देखि पूछि देने रहै।

'हँ, लाबह एकटा। ओ वर्त्तमानमे घुरि आएल रहय। 'एक गिलास पानि दैह त……'—ओ चाहबलाके कहलक। एकटा छौंड़ा पानि आनिके राखि गेलै। ओ मुँह-हाथ धोलक। रूमाल निकालिकऽ मुँह पोछलक। फ्रेश बुझेलै आब। तीन दिनुका गाड़ीक झमार कम भेलै। गाम पहुँचबामे रिक्शासँ आधा घंटा लगतै। अन्हार हेबामे एखन घंटा भरि देरी रहैक। सुभाष साँझेक झलफलमे पहुँचऽ चाहैत रहय। लोकक टोका-टोकीक आदंक ओकरा पछोड़ धएनहि रहै एखन धरि। ओ भरि रस्ता सोचैत रहल। गाम जाइ की नहि जाइ। पछिला पाँच बरखसँ ओ गाम जएबाक मादे सोचैत रहय। मुदा ने गाम अएबाक हिम्मत भेल रहै आ ने कोनो चिट्ठी-पत्री लिखबाक। किछु खोज-खबरि नहि लऽ सकल छल ओ अपन परिवारक। विधवा माय, तीन बरस जेठ भाइ बेर-बेर मोन पड़ैत

रहलै। मुदा भगबा कालक घृणासँ भरल आँखि ओकरा आगू विकराल रूपमे ठाढ़ भऽ जाइ। ओ हिम्मति नहि जुटा सकल। अपराध भावना मोनकेँ मथैत रहलै। कचोटैत रहलै। एहि दस बरसमे ओ की-की ने केलक। होटलमे बेराक काजसँ लऽकै बैंकक नोकरी धरि ओ ओहिना अनभधाने करैत गेल। एकदम मशीन जकाँ...। अपन गामसँ एतेक दूर बंगलोरमे ओ अपनाकेँ नुका लेने रहय। आफिसक बाद असगर बौआइत रहय। दोसमहिमक संग समय कटैत रहय। मुदा गाम आ अपन लोकवेदक नामपर एकटा चुप्पी सटि जाइत छलैक ओकर ठोरपर।

एहिना साँझक झलफलमे सुभाष पड़ाएल रहय गामसँ। गायक धिक्कार, भायक क्रोध, सर-समाजक अपमानजनक व्यंगसँ भरल वाक्य सभ ओकरा आइयो ओहिना मोन छैक। समय स्थिर भऽकेँ चिपकि गेल छै ओकरा दिमागमे। आइयो ओहिना मोन छै ओहि दिनुका घटना। ओ सेकण्ड इअरमे पढ़ैत रहय गामक कॉलेजमे। बेरखन कॉलेजसँ घुरि कऽ आयल रहय। बेरहट खा कऽ घुमबा लेल विदा भेल रहय। अपन आमक गाछी दिस बढ़ि गेल छल। आम खूब फड़ल रहै ओहि बरख। टिकुला पँघ-पँघ भऽ गेल रहै। गाछीमे आएल तऽ जोतखी जीक बेटी मंजूकेँ टिकुला बीछि-बीछि खाइत देखलक। मंजू ओकरासँ तीनिए बरखक छोटि रहैक। ओहि बरस वियाह होयबाक लेल छलैक ओकरा। ठीक भऽ गेल रहै। सुभाष ओकरा टिकुला तोड़बा लेल ढेपा फेकैत देखि मना केने रहै। मुदा ओ नहि मानने छलै। ओ दौड़ि कऽ ओकरा लग जा हाथसँ ढेपा छीनि लेलकै। मंजू तमसा गेल छलै। किदन-कहाँदन बाजऽ लागल रहै। फेरसँ ढेपा उठा टिकुला तोड़बा लेल तैयार भऽ गेल छल। सुभाषकेँ सेहो क्रोध भऽ आयल रहैक ढेपा छिनबाक झिक्का-झोरीमे ओ मंजूकेँ भरि पाँज कऽ पकड़ि लेने छलै। अकस्मात् मंजूक शरीर ढील भऽ गेल रहै। ओ सुभाषक देहमे लपटि जकाँ गेल। सुभाषकेँ नीक लागि रहल छलै। बुझाएल रहै जेना मखमली जमीनपर ओ दौड़ल जा रहल हो। माथ घूमऽ लागल रहै। पूरा शरीर मद्धिम आँचमे तपऽ लगलै। ओहिना मंजूकेँ पकड़ने ओ सपेता आमक विशाल अढ़मे आबि गेल रहय। आन्हर भऽ गेल छल सुभाष। अकस्मात् एकटा लाठी ओकर देहपर लगलै। फेर दोसर तेसर...। माथपर पड़ल लाठीसँ लहुलहुआन भऽ गेल ओ। ऊपर तकलक। पुवारि टोलक तेजुआ आ शंकर ठाढ़ छलैक। झटकासँ उठल। मंजू पड़ाएल जा रहल छलै। शंकर ओकरा पकड़ि लेलकै। दुनू गोटा घिचने-तिरने ओकरा दुर्गा-मंदिरपर लऽ अनने रहै। तकर बादसँ तऽ सौंसे गाम जुटि गेल छलै। ओकरा ठकमूड़ी लागि गेल रहै। लोक की सभ बाजि रहल छल, ओ सुनियोकेँ नहि सुनि रहल छल।

लगैत रहैक जेना शरीरक सभ इन्द्रिय काज केनाइ बंद कऽ देने होइ। कोनो संवेदना नहि। एकदम सुन्न भऽ गेल रहै। अन्तमे खाली सुनने रहय जे गामसँ निकलि जेबाक आदेश देल जा रहल छै। अपन जेठ भाइ दिस तकने छल। घृणा आ क्रोध भाइक आँखिसँ चुअल जा रहल छलै। मंदिरक कोनटा लग माएकेँ देखलक। माएक आँखिसँ घृणा पिघलि-पिघलि मोम जकाँ खसि रहल छलै। ओ नहि सहि सकल। ओहिठामसँ अकस्मात् निछोहे पड़ाएल। किछु छौंड़ा सभ पाछू दौड़लै। मुदा ओ पकड़ऽ नहि देलकै। टीशनपर आबि कऽ दम लेने रहय। पूब भरसँ एकटा ट्रेन आबि कऽ टीशनपर लागल रहै। ओहिना बैसि रहल जा कऽ। गाड़ी विदा भऽ गेल रहैक। सुभाष कतऽ जा रहल छल। कोम्हर विदा भेलए, किछु नहि सोचि रहल छल। सोचबाक शक्ति खतम भऽ गेल छलै। गाड़ी पड़ाएल जा रहल छलै—झक··झक····झक··झक····।

ओ चाह पीबि चारू भर ताकैए। साँझक मटिआएल रंग कारी भऽ रहल छै। ओ एकटा रिक्शाबलाकेँ सोर केलक। 'पट्टी टोल चलबऽ हौ ?' रिक्शाबला सकारि लै छै। रिक्शापर बैसि ओ चद्दरिसँ अपनाकेँ नीक जकाँ झाँपि लैए। जाड़क बहाना बना ओ चिन्हार लोकसँ बचऽ चाहैए। रिक्शा चलऽ लगै छै। मायक चेहरा ओकरा मोन पड़ि अबैत छै। अपन नेनासँ जुआनी धरि मायक मोह, ममता, स्नेह मोन पड़ै छै। कत्ते तंग करै ओ मायकेँ। एहि अङनासँ ओहि अङना पड़ायल फिरै छल। माय बाटीमे दुध-रोटी लेने ओकर पछोड़ धेने रहै। दू कौर खुआबा लेल कत्ते मान-मनुहार करबै छल ओ। मुदा ओहि दिन मायक आँखिसँ···' ओह। ओ सिहरि उठैए। भाइक चेहरा मोन पड़ै छै। मास्टरीक नोकरी पकड़ने छलै ओकर भाइ। कतेक स्नेह करैत छलै सुभाषकेँ। आब तऽ वियाहो-दान भऽ गेल हेतैक भाइक। ओ सोचैत अछि। ओकर मारते रास दोस-महिम सभ कोना ओकर आगू-पाछू रहल करै, घूमल करै। मुदा ओहि दिन कियो संग नहि देलकै। सुभाषक आँखिमे नोर भरि अबैत छै। ओही झलफलाइत आँखिसँ दुर्गामंदिरक सोना पानि चढ़ल पितरिया कलश ओकरा देखाइ छै। हाथ स्वत: जुड़ि जाइ छै—प्रणामक मुद्रामे। गामक सीमान लग ओ पहुँचि गेल रहय। रिक्शा बढ़ल जा रहल छलै। आब कच्ची धऽ लेने रहै। ओ अपनाकेँ नुकौने बढ़ि रहल छल। कतहु-कतहु लोक सभ आबि जा रहल छल। मुदा केओ ध्यान नहि दैत छै। कियो-कियो तकितो छै तऽ नहि चीन्हि पबैत छै। ओकरा खुशी होइ छै। आब ओ अपन घर लग पहुँचि जाइये। सामनेमे दस बरख पहिलुका वैह फूसक घर ठाढ़ छैक। एकदम सुनमशान···। दरबाज्जापर कियो नहि देखाइ छै। रिक्शासँ उतरि ओ

दरबाज्जा दिस बढ़ैत अछि। सोझे अङना जेबाक साहस नहि होइ छै ओकरा…। हिम्मति कऽ उहापोहमे बंगलोरसँ अपन घरक दरबाज्जापर तक तऽ ओ आबि गेल छल। मुदा दरबाज्जासँ अङना दिस बढ़बामे ओ थरथरा गेल। एकाएक खोंखी भऽ एलै। एकटा पाँच बरखक नेना बहराएलैक।

के छी अहाँ ! कतऽसँ अएलौहें ?' ओ नेना पूछि रहल छलै। ओकरा किछु नहि फुराइत छै। की उत्तर दै एहि अबोधकें ? सुभाष ओकर गाल थपथपा दै छै। ताबत् ओकर भाइ अङनासँ बहराइत छै। ओ लपकि कऽ भाइकें गोड़ लगलक। भाइ एक क्षण लेल थकमका गेलै। फेर जोरसँ बाजि उठै छै, 'के ? सुभाष ? कोना ? कखनि आबि गेलह ? अकस्मात् ? जेना आश्चर्य आ प्रसन्नतासँ भाइक शब्द लटपटा रहल होइ।

'जी, भैया। मोन नहि मानलक। अहाँ सभकें देखऽ लेल चल अएलहुँ। फेर अनरोखे चल जाएब।' ओ नहुँ-नहुँ बाजल।

'से किए, अनरोखे किएक चल जेबह ? एतेक दिनक बाद अकस्मात् आइ चल अएलहऽ एखन आब गाममे किछु दिन रहऽ। बहुत गप्प करबाक अछि तोरा…सँ। तों तऽ अपन पतो ठेकाना नहि लिखलह कहियो। हम सभ कतेक औनेलौं ? दू बरख पहिने माय सेहो छोड़ि कऽ चल गेल हमरा सभकें। अन्त-अन्त धरि तोहर अएबाक आस लागल रहलै ओकरा। तोहर नाम लैत-लैत मरि गेल ओ…। मुदा तों तऽ‥।—ओकरा भाइ कहने चल जा रहल छलै। सुभाषकें ग्लानि भेलै। कानऽ लागल ओ। दहो-बहो‥ आँखिसँ नोर जाय लगलै। किछु नहि बाजल भऽ रहल छलै ओकरा…।

'नोर पोछि लैह सुभाष। एखनो धरि ओहिना डरपोक छह तों ? बहादुर बनऽ भाइ, बहादुर बनऽ‥। कानह जुनि।' —ओकर भाइ सुभाषकें पकड़ि कऽ ओसारापर चौकीपर बैसा दैत छै। बैग उतारि ओसारापर रखैए। रिक्शाबलाकें पाइ दऽ विदा कऽ दैत छै। छौंड़ा सुभाष लग सहटि अबैत छै। तकैत रहै छै टुकुर-टुकुर…। सुभाष ओकरा कोरामे खींचि लैत अछि। छौड़ा सुभाषक गालपर टघरल नोर अनायास पोछऽ लगैत छै।

ओकर भाइ आबि कऽ सुभाष लग बैसि जाइ छै। सुभाष नजरि उठा अपन भाइकें देखैए।

'अचानक तोरा पड़ा गेलाक बाद मंजू हहाएल फुफुआएल आएल रहए मंदिरपर। तोरा बताहि जकाँ ताकि रहल छलह। लोकसँ तोरा क्षमा कऽ देबाक

अनुरोध कऽ रहल छल। पूरा घटना सुना देलकै लोकके। भगवतीक शपथ लऽ कहने रहै जे ओ तोरा संग वियाह करबा लेल तैयार अछि। मंजूक साहस ओ सत्यवादितासँ पूरा गाम प्रभावित भऽ गेल रहय। स्त्रीगणक एक अभिनव रूपक दर्शन भेलै लोकके। सभके ठकमूड़ी लागि गेल रहै.... टीशन धरि लोक सभ तोरा ताकऽ लेल गेलह मुदा तों तऽ चल गेल रहऽ....बादमे मंजूक ठीक भेल वियाह टूटि गेल छलै। कतबो लोक कहलकै मुदा बर बला नहियें मानलकै। बदनामीक कलंक ओकरा आँचरमे लागिए गेल रहैक।' ओकर भाइ सुभाषक ठमकल अतीतके गति दैत छै। अदृश्य दृष्टिगोचर भऽ उठैत छै सुभाषके। ओकरा होइ छै जेना घावक खोंठी कियो ओदारि देने होइ। छर-छर शोणित बहऽ लगैत छै।

भाइ सुभाषक कन्हापर हाथ दैत कहि उठैत छै, 'अच्छा, चलह। अंगने चली। तोरा अपन भउजीसँ भेंट करा दैत छियह। अपन भातिजके तऽ देखिए लेलह।' सुभाष अपन भातिज दिस तकैए। कोरामे उठौनहि अपन भाइक पाछू-पाछू अङना दिस बढ़ि जाइत अछि।

'कतऽ गेलहुँ यै? देखू के आएल अछि? जल्दी आउ दौड़ि कऽ?'—ओकर भाइ अपन कनियाँके सोर पाड़ैत अछि। सुभाषके चूड़ीक झन-झन सुनाइ देलकै लालटेन लेने ओकर भाउज आबि रहल छलै। सुभाष आब माँझ अङनामे ठाढ़ छल।

'अरे झटकारिके आउ। दस बरखपर अहाँक दिअर अएलाहे।' सुभाष अपन भाइ दिस तकैए। भाइ मुसकिया रहल छलै। ओ सामनेमे ठाढ़ अपन भाउज दिस तकैए। लालटेनक इजोतमे सुभाषक समक्ष भाउजक रूपमे मंजू ठाढ़ि छल। सुभाषके होइ छै जेना खोंठी ओदारल, छर-छर बहैत घावपर कियो टिंचरक पूरा शीशी उझीलि देलकैए अकस्मात् अनचोके...। इस्स...! अपनाके सम्हारैत अछि ओ। एक अजीब प्रकारक शीतलताक अनुभव करैए। भातिजके कोरासँ उतारि आगू बढ़ि भाउजके पैर छूबि प्रणाम करैत अछि। अपन भाइक हँसैत स्वर सुनाइ दैत छै ओकरा, 'आब बान्हिके राखू अपन दियोरके। कहीं फेर ने पड़ा जाथि।' सुभाष भाउज दिस तकैए। हँसैत मुसकिआइत आँखिमे नोर हुलुक-बुलुक कऽ रहल छलै...।

●

भाखा
फरवरी, १९८७

नचनियाँ

पहिले बेर गेल रही नैनीताल। काठगोदामक बाद पहाड़ी रस्ता शुरू भऽ गेल छल। एहन पहाड़ी मोड़ आ टेढ़-टूढ़ रस्ता कहियो ने देखने रही। कौखन के करेज काँपि जाय। जँ बसक ब्रेक फेल कऽ गेलै ? जँ ड्राइबर चूकि गेल तऽ···· ? अखबारमे छपल बारि पांतीक खबरि रहि जायब खाली····। मोनक डर हटेबाक लेल प्रकृति सुन्दरी के देखऽ लगलहुँ। कोनो केलैण्डरमे बनल चित्रसन दृश्यपर दृश्य पाछू छूटल जाय। कखनहुँके बरखा झहरऽ लगै, तऽ कौखनकेँ कुहेश आबि बसक रस्ता घेरि लैक। बस चलायब मोश्किल। मुदा अलबत्त ओस्ताद रहय ड्राइवर ! सकुशल नैनीतालक झील लग उतारि देलक। बससँ उतरि चारूभर तकलहुँ। विस्तृत, शांत झीलक चारुकात ऊँच-ऊँच पहाड़ी। पहाड़ीपर ऊपरसँ नीचाँ धरि लटकल सन पहाड़ी घर सभ····। सम्मोहित भऽ गेलहुँ एक क्षणक लेल। फेर साकांक्ष भेलहुँ। सभसँ पहिने कतहु ठहरबाक व्यवस्था आवश्यक रहय। पानि टिपिर-टिपिर पड़ि रहल छलै। भीजि रहल छलहुँ। बसेसँ एकटा होटलक साइन-बोर्ड पढ़ने रही। ओही दिस बढ़ि गेलहुँ। होटलक 'रिसेप्शन' लग एकटा पँच-पैंच केशबला युवक ठाढ़ छल। बेरा सन बुझायल। ओ मैनेजरकेँ बजा अनलक। रजिस्टरपर अपन नाम पता लीखि कोठली दिस बिदा भेलहुँ। वैह झबरल केश बला बेरा सूटकेश लेने आगू-आगू बिदा भेल। कारीडोरमे चलैत काल अकस्मात् एकटा कोठलीक भीतर नजरि चल गेल। एकटा युवती अपन ब्लाउजक बटन बन्द कऽ रहल छलि। अझक्के देखलियै। चेहरा किछु परिचितसन बुझायल। कोठलीमे टेबुलपर राखल एक शराबक बोतल आ गिलास सेहो हमर नजरिसँ नहि बाँचि सकल। एक धक्कासन लागल। कोनो एहेन-ओहन होटलमे तँ नहि चल अयलहुँ ? कोनो खराब धन्धा····; डरो भेल। मोनमे गुदगुदियो लागल। कौतुहल जागि गेल। कोठलीमे प्रवेश कयलहुँ तँ साफ-सुथरा लागल। प्रसन्न भेलहुँ। बेरा टेबुलपर सूटकेश राखि रहल छल। नीक जकाँ ओकरा देखलियै। एकदम मौगियाह मुँह····! दाढ़ी-मोछ सफाचट ! नटुआसन औंठिया केश। पिण्डश्याम रंग। हँसी लागल। ओ मार्क कऽ गेल जेना।

चाह लेने आउ, मालिक ?'—हमरा सुखद आश्चर्य भेल। एहि ठाम अपन भाखा-भाषी ! गद्गद् भेलहुँ।

ऐं, तोंहू मैथिले छह ? कोन गाम घर छह ? एतऽ कोना आबि गेलह ? हमरा चिन्हलह कोना ?'—एक्कहि बेरमे प्रश्नक बरखा कऽ बैसलहुँ ।

'आहि, रजिस्टरमे अहाँ, नाम, पता जे लिखली । ताहीसँ बूझि गेली । हमर घर पुरैनियाँ अछि । एतऽ एबाक खिस्सा हमें बादमे कहब । पहिले चाह लेने अबै छी ।' कहि कऽ ओ जाय लागल । हम टोकि देलिऐक ।

—की नाम छह तोहर ?

—'सोहन, सोहन मण्डल !'

—'तऽ सोहन, चाहक संगे एक गिलास पानियो लेने अबि यह ! प्यास लागि गेलए । सोहन चल गेल । ओकर चलबामे; बजबामे एक प्रकारक ताल रहै । एक प्रकारक लय रहै । बगय-बानिसँ सेहो....। हो ने हो ई नटुआ रहय पहिने । हम सोचलहुँ । जुता, पैतावा खोलि, धोतीकें लुंगी बना पहिरलहुँ । ओछानपर पड़ि रहलहुँ । तावत् सोहन चाह आ पानि लऽ कें जूमि गेल ।

मालिक, लिअऽ चाह आ' पानि । पनपिआइ नै करबै ? लेने आऊ ?' कहि कऽ सोहन कपमे चाह ढारऽ लागल । हम पानि पीबि, चाह पीअऽ लगलहुँ । कहलियै, 'पनपिआइ नै करबऽ हौ । थोड़ेक कालमे खेनाइए खुआ दिअह । सोहन कोठलीमे फर्शपर बैसि रहल । हम चाहक दू चारि सिप लऽकें पुछि देलियै, 'तों कहलह नै हौ ! एते दूर नोकरी करऽ किए चल अएलह ! ओ गम्भीर भऽ गेल । बाजल, 'की कहू मालिक ! पेट जे ने कराबय ! नेनेसँ नाचमे मोन लागय । सिखबो केलों । दुखी दाससँ । बड़का नचनियाँ रहै हमरा इलाकाकें । विदापतकें नाच करय । इस्स भीड़ लागि जाय । हम्हूँ नाचऽ लगलहुँ ओकरा संग । खूम नाची, गीत गाबी । मुदा एम्हर ओ मरि गेल आ ओम्हर लोकके रंडी, पतुरियाक नाच निम्मन लागऽ लगलै । सिलेमाकें गीत पसिन्न पड़ै । हम नहि सिखने रही सिलेमाक गीत । इच्छो नइँ भेल सिखबाक । नाचब, गायब छोड़ि देलहुँ । हमर कका रहैए बीस बरखसँ एहिठाम । सरकारी आफिसमे चपरासी अइ । ओएह लगा देलक अइ होटलमे; कहिकऽ चुप्प भऽ गेल सोहन । ओकर विवशतापर दुख भेल हमरा । हम चाह खतम कऽ लेने रही । कखनहुँकें ओहि कोठरीक दृश्य घूमि जाय मोनमे । नहि रहल गेल । पूछि देलिअइ । सोहन, ओहि कोठरीमे जे युवती.......?—हमर वाक्य खतम भेलासँ पूर्वहि सोहन बाजि उठल एकदम फुसफुसाइत, 'अहाँ तऽ अप्पन लोक छी, मालिक !

अहाँके कहबामे कोन हर्ज ? किछु गड़बड़ बुझाइए हमरा। अनसोहाँत लगैए ओकर दुनूक चालि-ढालि। पुरुखके अहाँ नइँ देखलिअइ। तखन बाथरूममे रहय। जखन बाहर आइ छै तँ केबाड़ बाहरसँ बन्द कऽ दै छै। भीतरमे मौगी औनाइत रहै छै। कानैत रहै छै। अपना जरे मौगीके कखनो ने लऽ जाइ छै मनसाबा ! एक दिन खिड़कीक पर्दा हटाके देखलियै। मौगी नंगटे पड़ल रहइ बिछानपर। आँखि मुनने रहइ। नोर टघरल जाइ छलै। हमरा नइ सहाज भेल। पड़ा कऽ चल गेली। चारि टा बीड़ी एक्के साँसमे पीबि गेलिअइ। बाजि कऽ सोहन बकर-बकर हमर मुँह ताकऽ लागल। हमर मोन कोनादन करऽ लागल। अपनाके जब्त कयलहुँ। कोन मतलब अछि ओकरा सभसँ ? किछु करय। सोहन उठि कऽ चल गेल। हम फेर बिछानपर पड़ि रहलहुँ। आँखि लागि गेल।

× ×

कूमाँयू युनिभरसिटीसँ काज कऽ घुरैत साँझ भऽ गेल। पहाड़ी रस्तापर चढ़बा, उतरबामे साँस फुलऽ लागल रहय। टांग दर्द कऽ रहल छल। कहुना होटल घूरि अयलहुँ। अपन कोठली जयबाकाल फेर ओहि युवतीपर नजरि गेल। बालकनीपर बैसल रहय। ओकरा संगक पुरुखोके देखलिअइ। दुनूक बयसमे बेशी अन्तर बुझायल। युवतीके नीक जकाँ देखबाक प्रयास कयलहुँ। एकदमे चिन्हारसन लागल। कतऽ देखने छियै ? कोठलीमे जा कऽ सोचऽ लागल रही। तखने सीतामढ़ी मोन पड़ल। तऽ सीतामढ़ी....? ओह ! ई तऽ रजनी छी। रजनी शर्मा ! दस बरखक अन्तरालमे कते परिवर्त्तन भऽ गेलैए। मोन पड़ि गेल सभटा....

हम बी० एस० सी० फाइनल इयरमे रही। ओहि बरख वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता बेश धूमधामसँ भेल रहै। एकटा फर्स्ट इयरक छौड़ी कमाल केने रहय। बहुत रास प्रतियोगिता जीति कऽ ओहि बरखक चैम्पियन भऽ गेल छलि। अखबारमे फोटो छपल छलै। देखबामे सुन्दरो रहय बड़। पूरा कालेजक हिरोइन बनि गेल छल। छौंड़ा सभ अखबारमे छपल ओकर फोटोके जोगाड़ कऽ राखय। हमरो आकर्षित केने रहय छौड़ी। स्कर्ट-ब्लाउज पहीरि कालेज आबय। उघार टाँग छौड़ा सभके आकर्षित करै। बड़ सुडौल आ चिक्कन रहै टाँग ! हमर संगी महेशबा तँ खाली ओकर टाँगे देखै। टाँगक गुणगान करबामे अपन तमाम ज्ञानक उपयोग करय महेशबा। हमरा ओकर मुँहो कटगर लागय। बड़ पानि रहै मुँहमे। कुल मिलाकऽ ओहि छौड़ीक 'ग्लैमर' हमरा सभपर जादूक असर करय। सैह छौड़ी छल रजनी। रजनी शर्मा ! जे आइ एहि होटलमे कोनो जादूगरनी सन। एहन अवस्थामे। कतऽ गेलै ओकर पनिगर, कटगर मुँह ? सुडौल टांग....?

बिजली सन छहछह करैत कोमल देह ? चीन्हि लेलाक बाद बेचैन भऽ गेल रही। एत्ते दिनुका बादक भेँट अतीतक तमाम कोमल क्षणकेँ मोन पाड़ि देलक। कहियो भरि मुँह गप्प नहि भेल ओकरासँ। मुदा मोन हरदम घुरिआइत रहय ओकरे पाछाँ। बहुत दिन धरि ओ हमरा अपस्याँत कयने रहलि। जीवनक ओ पहिल स्त्री छलि जकरा देखि हृदयमे गुदगुदी भेल रहय। बादमे ओहन गुदगुदी ककरो देखिकऽ नहि भेल।

मालिक, अन्हार भऽ गेल। सूतल छी की?—सोहन कोठरीमे प्रवेश करैत पूछि देलक। हमर तंद्रा भग्न भेल। वर्त्तमानमे घूरि अयलहुँ। बिजली बारलक सोहन, राति भऽ गेल छलैक। सोहन हमरा दिस ताकि रहल छल। हम खेनाइ मंगा, खा-पीबि कऽ सुतबाक प्रयास कयलहुँ। मुदा नीन्न नहि जानि कतऽ उड़ि गेल छल। घूरि-फीरि कऽ रजनीक बारेमे सोचऽ लागी। कतबो अपनाकेँ बुझाबी। कोन सरोकार अछि ओकरासँ। किएक सोचै छी ओकरा बारेमे ; मुदा नहि। मोन औनाय लागय। कछमछ करैत राति पहाड़ सनक भऽ गेल। एही अवस्थामे कखन नीन्न भेल नहि बुझलिए। एकाएक नीन्न टूटि गेल। कियो केबाड़ खटखटा रहल छल। सोहन अछि की ? मुदा सोहन आब किए आओत ! बत्ती जरा कऽ देखलहुँ ! रातिक दू बाजि रहल छल। के भऽ सकैए एत्ते राति कऽ ? डर भऽ आयल। फेरसँ पूरा वातावरण रहस्यमय, डेराओन लागऽ लागल। केवाड़पर खट्खट् बढ़ि गेल छल। ओरिया कऽ केबार खोललहुँ। रजनी ठाढ़ि छलि। भीतर अयबा लेल उद्यत ! हमर करेज धक्क-धक्क करय लागल। घामसँ नहा गेलहुँ। रजनी मुसकुरा रहलि छलि। रहस्यमयी मुस्कान !

'भीतर आबऽ लेल नहि कहब आनन्द बाबू ? हम अहांके देखिते चीन्हि गेलहुँ। अहाँ हमरा चिन्हलौं की नहि ?' रजनी पूछि रहलि छलि। हमर बिना किछु बजनहि ओ भीतर चलि आयलि। बिछानपर आबि बैसि रहलि। हम ठाढ़े रहलहुँ। कहुनाके बकार फूटल, 'अहाँ रजनी छी। रजनी शर्मा ! चीन्हि गेलहुँ। किएक अयलहुँ एते राति कऽ ? की बात छै ?' हम आगू किछु नहि बाजि सकलहुँ। कुर्सीपर धम्मसँ बैसि गेलहुँ। 'अहाँ डेराउ नहि। नीन्न नहि भऽ रहल छल। पतिदेव शराबक निशांमे धुत्त बेहोश छथि। आब भोरे जा कऽ उठताह। अहांकेँ देखि रोकि नहि सकलहुँ अपनाकेँ। सीतामढ़ीक स्मृति जागि उठल। कोना घुरिआइत रही अहाँ हमर चारूकात। हमरो अहाँ नीक लागी तहिया। कत्ते बेर कोशिशो कयलहुँ। गप्प करबाक ; मुदा हिम्मति नहि भेल। यैह हिम्मति तँ हमर सभसँ भारी दुश्मन अछि। तहियासँ एखन धरि डरपोक बनल छी।' कहि कऽ चुप्प भऽ गेलि रजनी। मुड़ी झुका लेलक। हम फेरमे पड़ि गेलहुँ। की

कहियै ? की पुछियै ? पुछबाक, सभ किछु जनबाक इच्छा प्रबल भऽ आयल रहय। मुदा ? मध्यमवर्गीय डेरबुक ! मध्य रातिक वातावरण। असगर कोटलीमे हमर अतीत। प्रेमक प्रथम अंकुरण। कोमल, सुकुमार बीआ जे डेराओन गाछ भऽ कऽ हमरा स्तब्ध कऽ देने छल।

'एखन चल जाउ अहाँ रजनी। लोक देखत तँ की कहत ? कालिह दिनमे गप्प करब।' कहि कऽ हम मुड़ी झुका लेने रही।

की तखने कानऽ लागलि रजनी। सिसकी बढ़ि गेलै। हम चौंकि गेलहुँ। ओकरा दिस ताकऽ लगलहुँ टुकुर-टुकुर। ओ कनैत बाजऽ लागलि रहय, 'कालिहक कोनो भरोस नहि अछि, आनन्द बाबू। एहि जीवनसँ हम तंग भऽ गेल छी। भऽ सकैए कहियो बिख खाके मरि जाइ। अहाँ संग भेंटो ने भऽ सकय। भऽ सकैये हमर पतिये कोनो ऊँच पहाड़ीपरसँ हमरा धकेलि देथि। बिख दऽ देथि। एही लेल तँ एहिठाम अनलनिहेँ। मुदा हुनको हिम्मति नहि भऽ रहल छनि। तेँ भरि दिन शराब पीबैत रहैत छथि।' कहि कऽ रजनी हबोढकार कानऽ लागलि। हम अप्रतिभ भऽ गेलहुँ। कोना कऽ एकरा चुप कराबी ? कोना बोल-भरोस दिअइ ? किछु करब जरूरी बुझना गेल। अनायासे बाजि उठलहुँ, 'एना नहि सोची रजनी ! दुख ककरा नहि रहै छै। मुदा कहाँ सभकियो बिख खा लैए। हिम्मति राखू। भगवान बड़ पैघ छथि। हुनकापर भरोस करू।' हमर बात पूरा भेलासँ पूर्वहि जेना रजनी फुफकारि उठलि, आक्रोशक छाप ओकर पिरौछ मुँहपर पसरि गेलै।

दुख ! दुखक गप्प कहै छी अहाँ ? तहिया कतऽ छलाह भगवान जखन दहेजक अभावमे हमर विवाह हिनका संग भेल छल। एहि पुरुखक संग जिनका पुरुखो कहबामे लाज होइए। हमरासँ बयसमे दोबर। पढ़ला-लिखलासँ की भेल हमरा ? पढ़ब तँ आर काल भऽ गेल। हमर गरीब बापके पेड़ि देलक समाज। हारि कऽ अन्तमे हिनका संग वियाह करा देलनि। एहि नपुंसक वरसँ....। खाली धने सभ किछु होइ छै ? धनसँ पेट भरि सकै छै। देह झँपि सकै छै। मुदा जखन मौगी देह उघारैए तखन....? हमर पति देह तऽ उघार कऽ दै छथि। सम्पूर्ण शरीरमे बिजली तऽ दौड़ा दैत छथि। मुदा तकर बाद, तकर बाद सिसकऽ लगै छथि। बर्फ सन ठढ़ा भऽ जाइ छथि। अहाँके विश्वास नहि हैत, आनन्द बाबू ! आइ धरि हम कुमारिए छी। एकदम अक्षत....। तैपरसँ शराब पीबि एकदम राक्षस भऽ जाइत छथि। जरैत सिगरेट हमर देहपर फेकि दैत छथि। रातिमे सूतल रहै छी तँ जरैत सिगरेटसँ हमर देह दागि दैत छथि। देखू, देखू ! सिगरेटसँ दागल हमर देह....।' कहि कऽ रजनी अपन दुनू टाँग, जाँघ धरि उघारि देलक। देखि कऽ रोमांचित भऽ उठलहुँ। चारि-पाँच ठाम जरल चाम आ कारी चेन्ह ! आह !

जाहि टाँग के देखि कालेजक छौड़ा सभ दिवाना भऽ गेल रहय, तकर ई दशा ? एहन अत्याचार। हम चित्कार कऽ उठलहुँ। 'हे भगवान ! ई की देखा रहल छी ? की सुना रहल छी। ई दारुण कष्ट.....।' 'हमरा नहि' देखल भेल। उठि कऽ रजनीक टाँगके झपसन नुआसँ झाँपि देलियै। बड़ क्रोध भऽ आयल। क्रोधमे बड़बड़ाय लगलहुँ।

'अहाँ छोड़ि किए नहि दैत छियनि हिनका। दोसर वियाह कऽ लिअ। अहाँक पति तँ जानवर छथि। जंगली जानवर ! जानवर संगे कते दिन समय बिता सकब ? हिम्मति करू !' अकस्मात हमर बातपर जोरसँ हँसि पड़लि रजनी। हँसिते रहलि। हँसिते बाजलि, के करत बियाह हमरासँ ! जकरा दिस तकै छी। सभ खाली हमरा भोगऽ चाहैए। खाली शरीरसँ खेलाय चाहैए। कियो आगू बढ़ि हमर हाथ नहि पकड़ए चाहैए। हमही ककर हाथ पकड़ि लिअ; अहाँ करब बियाह ? अहाँ पकड़ब हाथ हमर ! अहाँ तँ प्रेम करैत छलहुँ हमरासँ ? बाजू ! कही तँ कालिहए हम हिनका छोड़ि देबनि। कहि कऽ रजनी आर जोरसँ हँसऽ लागलि। ओकर हँसी हमरा वज्र सन लागल। की जबाब दियै ? हमर बियाह तँ भऽ गेल अछि। एकटा बेटा अछि। सुन्दर पत्नी छथि। सुखी छी हम ! हम चुप्पे रहलहुँ।

रजनी अकस्मात् उठि कऽ कोठलीसँ पड़ा गेलि। हमरा घृणा भरल आँखिसँ देखैत। हम कोठलीक बाहर अयलहुँ। सोहन ठाढ़ छल। टुकुर-टुकुर हमरा तकैत। हम ओकरो आँखि नहि सहि सकलहुँ। कोनो मदति नहि कऽ सकलियै रजनीक। नैनीतालसँ घूरि कऽ पटना चल अयलहुँ चुपचाप !

× × ×

रजनीक खिस्सा ककरो कहबो ने करितहुँ। एहन गप्प ककरो कहल जाय ! मुदा नैनीताल यात्राक करीब एक बरखक बाद रजनी अकस्मात् हमर डेरापर पहुँचि गेलि। सोहनक संग। दुनू विवाह कऽ लेने रहय। पुछलियै तँ कहलक जे ओ सुखी अछि। नोकरी करैए। सोहन नृत्य सिखै छल।



मिथिला मिहिर, सितम्बर, 1987

मिर्जा साहेब

समूचा आकाशमे लाल, पीयर, हरियर रोशनी। रंग-विरंगी रोशनीसँ बनल फूल। रोशनी संग झहरैत रंगीन फुहार। जगमग करैत रस्तापर उज्जर घोड़ापर चढ़ल मिर्जा मुजफ्फर आलम। माथपर राखल सेहराक फूल गालपर डोलि जाइ छनि। फूलकेँ हटाकेँ देखैत छथि—सजल-धजल मकानक आगू रशनचौकी बाजि रहलय। मारितेरास चूड़ी आ हँसीक स्वर····। ठहरैत स्वर, दौड़ैत स्वर····। एकाएक सभ दृश्य बदलि जाइए। स्वर ठहरि जाइए। चारूकात एक अजीब प्रकारक सुगंधि पसरि जाइए। फूलक अम्बार····। फूलक झालरि, फूलक बिछान। ताहिपर कमलक फूल सन बैसल बेगम। मारितेरास गेंदा, जूही, गुलाब, चमेली फूलक ढेरपर उगि आयल कमलक फूल। पानिक हिलकोर सन बढ़ैत मिर्जा। ठेहून तक नमरल घोघकेँ उठबैत मिर्जा। घोघ उठाक' झूकल आँखिकेँ तकैत मिर्जा···। उठैत, खसैत एक जोड़ी आँखि। दू जोड़ीं आँखि····। एक जोड़ा ठोर, दु जोड़ा ठोर····। ठोड़पर ठोर····। हाथपर हाथ····। जकड़ल हाथ। फेर···बदलैत दृश्य····। विस्तृत रेगिस्तान····उड़ैत बालु····। ढहैत बालु····। पड़ाइत बेगम ! । दौड़ैत मिर्जा। खसैत मिर्जा। गायब होइत बेगम। पानि लेल चिचियाइत, हताश मिर्जा ।। पानि ! पानि ! पानि ! ! ठक | ठक | ठक |। मिर्जाक निन्न टूटि जाइ छनि। केवाड़ किओ ठकठका रहल छलनि। समूचा घामसँ भीजि गेल रहथि मिर्जा साहेब। माथपर हाथ दैत छथि त' घामक टघार गर्दनि तक बुझाइ छनि। एतेक जाड़मे एत्ते घाम ! मोन पड़ैत छनि सपना। ओह ! फेर बएह सपना ! चादरि फेकि उठि बैसैत छथि। केबाड़पर ठकठक भ' रहल छलनि।—'मिर्जा साहेब, मिर्जा साहेब ! सूतल छी की ? केबाड़ खोलू ! खुशखबरी अछि।'—सुनाइ दैत छनि स्वर। ओह, ई त' हेडमास्टर साहेब छथि। जल्दीसँ उठि केबाड़ खोलैत छथि। ठीके, हेडमास्टर साहेब सामनेमे ठाढ़ मुसकिया रहल छथि।

—'सूतल रही की ? घामसँ नहायल छी ? की बात छै ?'—हेडमास्टर गिरिजा चौधरी पूछि बैसलथिन। लजा गेला मिर्जा साहेब। नहुँयेसँ कहलनि—'अरे, बैह ख्वाब। बीस बरखसँ ई परीशान क' रहल हे। की कहू ? अहांके त' सभ बात बूझल हे।' फेर हेड मास्टर दिस ताकिक' पूछि बैसलाह—'कओन खबर के तास

करै रही ! एतना जाड़मे काहे परेशान भेली ?' कहिक' मिर्जा बकर-बकर मुँह ताक' लगलाह। गिरिजा चौधरी हँसिक' एकटा चिट्ठी जेबीसँ निकालि बढ़ा देलथिन मिर्जा दिस।

—'लिअ, यैह अहि खुशखबरी ! चिट्ठी अयलय पाकिस्तानसँ। जरूर एहिमे प्रसन्नताक समाचार होयत !' मोने-मोन अंदाज लगौलनि हेडमास्टर। मिर्जा साहेबक चेहरापर ठीके प्रसन्नताक भाव उमड़ि अयलनि। कँपैत हाथसँ चिट्ठी ल' लेलनि। अपनाकेँ रोकि नहि सकलाह। हेडमास्टर साहेबक सोझहिमे लिफाफकेँ फाड़ि चिट्ठी पढ़' लगलाह।

रावलपिंडी

८-५-८५

सलाम,

इहाँ के समाचार ठीके हे। जब से खत मिलल हे जे बिमारी बढ़ गेल हे, तब से चैन नहीं हे मन मे। सलीम भी बेचैन हो गेल हे। आरजू खुदा से जो जल्दी मुलकात हो। हुजूर तो इहां आने से रहे। अब हमहीं हार मान लेली। सलीम हिन्दोस्तान जाए के बंदोबस्तमे लागल हे। दुनू माँ, बेटाके अगिला माह तक हिन्दोस्तान जरूर पहुँचे के आरजू हे। अब हम वोहीं हजूर के साथ रहब। पान, मखाना और मछरी के बहुत याद आबैत हे। इंतजाम होलापर से खबर देब। खुदा हाफिज—सलीम के अम्मा।

चिट्ठी पढ़िक' झूमि उठलाह मिर्जा साहेब। आँखिसँ नोर बह' लगलनि अनायास। हेडमास्टर साहेब देखि रहल छलाह। बूझि गेलाह, ई खुशीक नोर छी। प्रसन्न होइत पुछलथिन :

'की बेगम के चिट्ठी आयल अछि मिर्जा साहेब ? एहिठाम आबि रहली हय की ? मानि गेलीह अहाँक बात ?'

हँ', सर ओ आ रहली हे ! अब हमरे जौरे रहती। बीस बरिस के बाद शौहर आ इलाका के याद क' रहल छत।' मिर्जा प्रसन्नतामे फेरसँ नहा उठलाह घाममे। थरथरा गेल रहथि। पचपन बरखक उम्र भेलनि आब। बीस बरखक एकाकी जीवन फेरसँ आँखिमे भरि अयलनि।

× × × ×

सन चौसठि इसवीक गप्प छी। सलीम दस बरखक रहय ताहिया। सलीम, मिर्जा साहेबक बेटा। मिर्जा मुजफ्फर आलम अपन गामक अपनहि हाइ स्कूलमे मास्टर भ' गेल रहथि। नोकरी देरीसँ शुरुह केने छलाह। समाज-सेवाक लति

विद्यार्थीए अवस्थासँ लागि गेल रहनि। फारसीमे एम० ए० कयलाक बाद घरक मुव्यस्त मिर्जा अपन बापक नामपर गाममे हाइस्कूल खोललनि। अपने सेक्रेटरी भेलाह। गामक गरीब छात्र-छात्राकेँ बड़का अबलम्ब भेलै एहिसँ। स्कूलक पाछाँ बेहाल भ' गेलाह मिर्जा मुजफ्फर आलम। एहि धुनिमे पत्नीकेँ सेहो बिसरि जाथि। बेटाक सुधि नहि रहनि। हरदम पटनाक दौड़। इलाकाक भ्रमण। स्कूलक अतिरिक्त कोनो सार्वजनिक काज होइ त' मिर्जा आगाँ। आइ सड़क बनि रहलय त' मिर्जा ओहि पाछाँ व्यस्त छथि। काल्हि बान्ह लेल ब्लाक आफिसमे दौड़ि रहलाहय। ओना अपन बेगम जुनेजासँ सेहो कम स्नेह नहि रहनि हुनका। मुदा बेगम रहथिन नबाब परिवारक। पूरा अभिजात संस्कार रहनि। बेगमक नाना-नानी पाकिस्तानमे बड़ पैघ लोक। मामा, मामी, ममियौत, आब सभ पाकिस्तानमे रहनि। बेगमक माय मरि गेल रहथिन। बापे पोसलथिन। जयनगर लग घर रहनि बापक। एक्केटा बेटी बापक। बियाहक दू बरखक बाद बाप हैजासँ मरि गेलथिन। आब बेगमकेँ हिन्दुस्तानमे कियो नहि रहि गेलनि। जे रहनि से सभ पाकिस्तानमे। रावलपिंडीमे। एहि कारण पाकिस्तान एकतरहेँ हुनकर नैहर भ' गेल छलनि। चिट्ठी-पत्री चलनि मामी संग, ममियौत बहीन सभक संग। मोनमे बसि गेल रहनि तेँ पाकिस्तान। हरदम ओही देशक चर्चा करथि। सपना देखथि। ई क्रम बढ़ले गेलनि बियाहक बादसँ। मिर्जाक व्यस्ता बेगमकेँ एकाकी बनब' लगलनि। आ एकाकी क्षणमे खाली नानी घर! रावलपिंडी। पाकिस्तान। मिर्जाकेँ नहि सोहानि ई सभ...। कोनो बातपर पाकिस्तानक उदाहरण नहि नीक लागनि। एहीठामक लोक, एहीठामक आचार, अपन देश, अपन माटिसँ मोह रहनि हुनका। मुदा बेगमक मोनमे बसल पाकिस्तान, ओहिठामक लोकवेदकेँ नहि हटा सकलाह। व्यवहार पसिन्न रहनि। बेगमसँ बड़ स्नेह करथि।

एही अबस्थामे रावलपिंडीसँ एक चिट्ठी अयलनि। ममियौत बहीनक बियाहमे अयबाक, नोंत...। अयबाक सभ व्यबस्थाक' देबाक आश्वासन। बियाहक बहानासँ पाकिस्तान देखबाक, घुमबाक निमंत्रण। बेगम खुशीसँ झूमि उठल रहथि। पाकिस्तान अयबाक निमंत्रण त' पहिनो अबनि, मुदा एहिबेर आग्रह जबर्दस्त रहनि। जिद्द ध' लेने रहथि बेगम। जेना होयत, जयबे करब। कतबो बुझौलथिन मिर्जा नहियेँ मानलथिन बेगम। मिर्जाकेँ बड़ काज सभ रहनि। बड़ समस्या सभ रहनि। सभसँ उपर, हुनका कोनो रुचि नहि रहनि पाकिस्तान जयबाक लेल। मुदा हारि गेलाह बेगमक आगू मिर्जा। ओ सलीमक संग बिदा भ' गेलीह। बम्बइ तक पहुँचयबाक लेल गेलाह मिर्जा। हवाइ जहाजपर बेगम आ सलीमकेँ चढ़ा अयलाह। बेगमक मामाक प्रयाससँ 'भीसा' भेटबामे कोनो दिक्कति नहि भेलनि। बेगम त' नाचल

घूरथि। मुदा मिर्जा उदास भ' गेल रहथि। जयबाकाल नोर भरि आयल रहनि। सलीमकें छातीसँ लगा लेने रहथि। गालकें चूमि बाजल छलाह—'सलीम! अयबा के भूल न जइह'। इयाद रखब' न'?'—कहिक' चोराकें आँखिमे उमड़ि आयल नोरकें पोछि लेने छलाह। बेगमो मिर्जाक संग नहि चलबाक कारण अन्तमे उदास भ' गेल छलीह।

—'अकेले जाएमे जरा भी मन न लागै हे। साथे चलती त' केतना निम्मन रहित। हरदम इयाद पड़त रही।' बेगम हवाइ जहाजपर चढ़ैत काल हिचुकि पड़ल रहथि। मिर्जा किछु नहि बाजि सकलाह। खाली 'सलीमकें ख्याल रखिह' टा कहि सकलथिन। आ चल गेलीह बेगम। मिर्जा बेचारे असगर भ' गेलाह। घूरि अयलाह गाम। फेरसँ व्यस्त भ' गेलाह।

निकाहक बाद किछु दिन आर पाकिस्तान घुमबाक लेल रहि गेलीह बेगम। मिर्जा जल्दी चल अयबाक लेल लिखथिन। मुदा बेगमकें त' मोने ने भरनि। मामा-मामीक आदर-सत्कार आ वैभवक आगू सभटा बिसरि गेलीह बेगम। समय बीतल गेलनि। एही अवस्थामे अकस्मात् भारत आ पाकिस्तानक सम्बन्ध खराब भ' गेलैक। आयब-जायब बन्दक' देल गेलैक। मिर्जा कतबो प्रयास कयलनि, मिनिस्टर सभ लग दौड़लाह, मुदा सभ व्यर्थ।

तकर बाद त' दुनू देशमे लड़ाइए शुरुह भ' गेलैक। लड़ाइ की भेलैक, दुनू देशक लोक एक-दोसरासँ घृणा कर' लागल। एक-दोसराक शत्रु भ' गेल। भाइ, भाइक दुश्मन भ' गेल। दोस नहि रहल। खूनक पियासल भ' गेल। चिट्ठी-पत्री जायब सेहो बन्द भ' गेल रहै।

एहो अवस्थामे दू बरख बीति गेल। मिर्जा एहिठाम औनाइत रहलाह। दू बरखक बाद अकस्मात् एक चिट्ठी भेटलनि बेगमक हुनका। ई चिट्ठी काल भ' गेल। दुनू दम्पत्तिक सम्बन्धक काल। चिट्ठी पढ़ि क्रोधसँ भरि उठलाह मिर्जा। चिट्ठीमे हिन्दुस्तानक खिलाफ बहुत बात कहल गेल रहय। एहिठामक गरीबी, तंगी, मुसलमानक प्रति घृणाक गप्प, बढ़ा-चढ़ाक' लिखने रहथि बेगम। संगहि इहो लिखने रहथि जे, 'हम आब कब्बो हिन्दोस्तान न आइब। जे देश के सिपाही हमर बहिनकें शौहरकें मारलक, ओ देशमे हम पयर ना रख सकै छी। वइसे सलीमकें अब्बा चाहथ त' ऐ जग आ सकत हे। सब बंदोबस्त हो जेतै।'

मिर्जा घृणासँ थूकि देने रहथि। भेलनि जे चोट्टे ओहो एहिना चिट्ठी लीखिक' बेगमक मुँहपर मारि बैसथि। मुदा जब्त कयलनि अपनाकें। चिट्ठीक उत्तर नहि द' सकलाह। तकर बादसँ कोनो चिट्ठियो नहि लिखलनि। बादमे देशक बीच सम्बन्ध सुधरबो कयलै, तैयो मिर्जा आ बेगमक नहि सुधरलनि। एकाकी

जीवन बितब' लगलाह मिर्जा। पूरा गामकेँ, पूरा इलाकाकेँ अपन बूझ' लागलाह। मोन नहि लगलनि त' मास्टरी कर' लगलाह अपने स्कूलमे। मुदा आधा दरमाहा गरीब विद्यार्थी सभकेँ द' देथिन। कतेककेँ पढ़ा-लिखा मनुक्ख बनौलनि। सभक बेटा हुनका अपने बेटा सन लागनि। सभमे सलीमेक रूप देखथि। लोकोक अथाह स्नेह, सम्मान भेटलनि मिर्जाकेँ।

एम्हर चारि-पाँच बरखसँ मिर्जाकेँ सलीमक बड़ याद अबैत छलनि। सलीमकेँ देखबाक लेल मोन छटपट करनि। कोनो डेलीगेशनमे हुनकर ममियौत सार दिल्ली अयलथिन तँ विशेष रूपेँ हुनका पटना बजाक' भेट कयलथिन। सलीमक मादे कहलथिन। बेगमक मादे कहलथिन। बेगमक पश्चातापक मादे कहलथिन। सलीमकेँ, अब्बाक देखबाक इच्छा मादे कहलथिन।

सलीम आब पढ़ि-लीखिक' ओहीठाम डाक्टर भ' गेल छल। तहियासँ मिर्जा बेगमकेँ चिट्ठी लिख' लगलाह। आ ओम्हरोसँ चिट्ठी आबs लगलनि। मुदा कियो ककरो अयबाक लेल नहि लीखि सकल रहथि। मुदा अन्तमे मिर्जाक बिमारीक समाचार सुनिक' बेगमकेँ नहि रहि भेलनि। अयबाक मादे लीखि बैसलीह।

मिर्जाक खुशीक गप्प सौंसे गाममे पसरि गेलनि। सभ भेंट करै लेल आबय। बेगम आ सलीमक स्वागतक गप्प करय। पूरा गाम मिर्जाक संग प्रसन्न आ सुखी भs गेल छल। जहिया तार अयलनि मिर्जाकेँ जे दस तारीखकेँ हम बम्बइ पहुँचि रहल छी, तहिया मिर्जा खुशीसँ खन बाहर आबथि, खन भीतर जाथि। लोक सभ बम्बइ तक संग ल' जायबाक लेल अनुनय-विनय कर' लगलनि। मुदा सभकेँ मना कयलथिन। ओ मात्र मुखियाजीकेँ संगक' बेगम आ सलीमक स्वागतमे बिदा भेल रहथि। पूरा गाम मिर्जा परिवारकेँ गाम आपस होयबाक प्रतीक्षाक' रहल छल।

आयबाक दिन पूरा गाम भिनसरेसँ मिर्जाक दरबज्जापर जुट' लागल छल। शामियाना टाँगल गेल। मंच बनाओल गेल। स्वागतक ठोस व्यवस्था कयल गेल। चौकपरसँ अरिआइत क' अनबाक लेल तासा आ रसनचौकी भिनसरेसँ तैयार छल।

मुदा सभ अकस्मात् झमाक' खसल। मुखियाजी संग बेगम आ सलीम तँ आयल मुदा मिर्जाक कत्तहु पता नहि। सभक दुख भरल चेहरा देखि तासा नहि गड़गड़ा सकल। सभ अधीर भ' रहल छल। कत' गेलाह मिर्जा? की भेलनि मिर्जाकेँ?

'बम्बइमे मिर्जा कहलनि जे एक घंटामे घूमिक' अबैत छी। मुदा घूमिक' नहि अयलाह। बहुत खोज केलहुँ। बेगम आ सलीमो पहुँचि गेलाह। सभ मिलि

बड़ खोज-पुछारी कयल, मुदा सभ व्यर्थ। मिर्जाकें जेना जमीन गीड़ि लेलकनि। बादमे पता चलल जे बम्बइक थाना-क्षेत्रमे अकस्मात् दंगा भड़कि गेल छलै। चारि गोटा मरि गेलै दुइये घंटामे। बादमे प्रशासनक तत्परतासँ दंगा रुकि गेलैक। मुदा मिर्जा····भरिसक···!' कहिक' मुखयाजी हबोढकार भ' कान' लगलाह।

बादमे अखबारसँ मिर्जा मुजफ्फर आलमक दंगामे हत्याक समाचारक पुष्टि भ' गेल। मृतकक सूचीमे मिर्जाक नाम रहय: नाम—मिर्जा मुजफ्फर आलम, पता—खजौली, मधुबनी (बिहार)। उम्र—करीब पचपन साल। राष्ट्रीयता—भारतीय।

मैथिली अकादमी पत्रिका
नवम्बर-दिसम्बर, १९८७



सरोकार

आफिससँ अबितहि पूनम एकटा लिफाफ आगू बढ़ा देलनि। लिफाफपर भागलपुर जेलक मोहर लागल छलै। के जेलसँ हमरा चिट्ठी लिखलक अछि? हड़बड़ा गेल रही। लिफाफपर पठौनिहारक नाम नहि रहै। तेँ जल्दीसँ चिट्ठी खोलि पढ़बाक प्रयास कयलहुँ। पहिने लिखिनिहारक नाम पढ़लहुँ। सुरेश सिंह ..!!! के थिक ई? तत्काल मोन नहि पड़ल। चिट्ठी पढ़ऽ लगलहुँ।

भागलपुर जेल

३-५-८४

प्रिय भाइ अमित,

चारूकातसँ जखन लोक निराश भऽ जाइए तखन किछु नहि फुड़ाइ छै जे की करी। के छैक ओकर? के नहि छैक। खास कऽ के जखन ककरोपर हत्याक आरोप होइ। ताहूमे एक पैघ नेताक हत्याक आरोप! ओकरा संग के सरोकार रखतै? समाजक नजरिमे सेहो नीचा खसि पड़ैए ओ। एहना स्थितिमे ओ व्यक्ति ककरा अपन बूझि किछु कहउ। किछु लिखउ। किछु भार दउ।

हमर हालत एहने अछि। अखबारमे पढ़ने होयबह। भागलपुरमे बयो भरल सभामे एम० पी०क उम्मीदवार एक नेताकेँ गोलीसँ उड़ा देलकै। चुनाव रूकि गेल रहै। ओ व्यक्ति हमहीं छी। सुरेश सिंह हमरे नाम छी। आब तऽ ओहि घटनाक तीन बरख बीति गेलैए। तहियासँ जेलेमे बन्द छी। आब तऽ फाँसियोक बेसी दिन नहि रहि गेलए। ६ जूनकेँ हमरा फाँसी दऽ देल जायत। आइसँ मासे दिन तऽ रहि गेलैए आब।

फाँसीक कोनो दुख नहि अछि हमरा। जीवनक प्रति कोनो मोह नहि रहि गेलए। हत्या करबा लेल कोनो पश्चातापो नहि अछि। खाली एकटा बातक दुःख अछि। हमर बेटा परेशक की हैत? जकर बापपर हत्याक आरोप होइ, ओहि बेटाक मनःस्थिति तों सोचि सकैत छह। चारूकातसँ लोक ओकरा की की ने

कहैत हेतै। ओहि अबोधपर की बितैत हेतै भाइ ! मात्र साते बरखक तऽ अछि ओ। ओकरे चिन्ता हमरा खाली चैनसँ नहि मरऽ देत।

भाइ अमित, हमर लंगोटिया यार ! शान्तिसँ चैनसँ मरबाक लेल हमरा तोहर सहायता चाही। तोहर दया चाही, दोस। विश्वास अछि मृत्युक सम्मुख ठाढ़ अपन मित्रक अन्तिम इच्छाक आदर तों जरूर करबह।

तोहर

सुरेश

चिट्ठी पढ़ि ठकमुड़ी लागि गेल। तऽ ई वैह सुरेश सिंह छी जे दरभंगामे स्कूलमे हमर संग छल। हमर सभसँ पैघ दोस्त रहय ओ। अखबारमे हत्याक समाचार पढ़ने रही। हत्याराक नामो पढ़ने रही। मुदा ई नहि बुझलियै जे ओ हमरे संगी सुरेशबा छल। आह ! ई की केलक ओ ? ओकरा संग बिताओल एक-एक क्षण हमरा आगू ससरऽ लागल। स्कूलक दिन...।

× × ×

हमरा संग छठमासँ मैट्रिक धरि पढ़ने छल ओ। अपनाकेँ काकन क्षत्रिय कहय। क्षत्रियत्वक गौरव जखन ओकर कामेडियन मुँहपर हुलुक-बुलुक करऽ लगै तऽ बड़ नीक लागय ओ। कतेक लोकके बूड़ि कहायब पसिन्न पड़ै छै। सुरेशोकेँ पसिन्न रहै। बड़ हँसमुख रहय ओ। हरदम ठहक्का। एहन एहन क्रिया करय, गप्प छोड़य जे लोक हँसि पड़य। कुँवरजी सन कड़ा आ अनुशासन प्रिय प्रिंसपल सेहो कतेक दिन चश्मा तरसँ मुसकुरा उठथि। ओकरा कहियो ने बिगड़ल रहथि। ओना कुँवरजीक नामे सुनि कऽ कतेक छौंड़ाके लगही भऽ जाइत छलै पैंटमे।

गामक स्कूलसँ पचमा पास कऽ के दरभंगामे नाम लिखौने रही। पहिले दिन भेंट भेल रहय एहन सहपाठीसँ जे अपन नवका किताबक पन्ना फाड़ि-फाड़ि सभके सीट बाँटि रहल छल। पन्ना फाड़ि कऽ उड़ा दैक। जतऽ पन्ना उड़ि कऽ चल जाय सैह भेल बैसबाक स्थान। मंगला यादवकेँ छोड़ि सभ ओकर बात मानि लेने रहै। के अपने झगड़ा करय ? मुदा मंगला नहि मानलकै। लड़ि गेलै। कागज पाछूए दिस उड़ि गेलै। मंगलाक कहब रहै जे सुरेशबा बैमानी केलकए। जानि कऽ कागज पाछू दिस उड़ा देनहैए। बैमानीक नामपर सुरेश सिंह भड़कि गेल रहय, रौ, तोरा बड़ दाबी छौ ? हम बैमानी केलिऔए ? अनका संग बैमानिए ने कलियैक। ई हमर दुश्मन छथि। सुनि ले, कागज जतऽ गेलौए, तत्तहि तोरा बैसऽ पड़तौ। मुदा मंगला अड़ि गेल रहै। अपन बस्ता उठा अगुलका सीट लग

चल आयल । सुरेश तामसे माहुर भऽ गेल रहय । 'सार, तोरा कहै छियौ पाछू बैसऽ लेल आ तों आगूमे बैसबें ? तोरा बेसी दम भऽ गेलौए की ? सभटा झाड़ि देबौ । दूनू पटका-पटकी करय लागल रहय । तखन क्यो मास्टर साहेबकें बजा अनने रहनि । दुनूक हाथपर पच्चीस टा के छौंकी बजरल रहै करबीरक । मुदा मंगलाकें आगूएमे सीट भेटि गेलैक । मास्टर साहेब पंचैती कयने रहथिन ।

पहिल दिन एकदम झगड़ाउ आ उदंड बुझायल रहय ओ । मुदा बात दोसरे दिन, पलटि गेल रहै । अंग्रेजीक घन्टी रहै । चौधरी जी 'टेन्स' पढ़बैत रहथिन । सुरेश सिंह बेर-बेर खिड़की दिस तकैत रहय । मास्टर साहेब एक बेर देखि लेलथिन ।

'ऐ ? कहाँ देख रहे हो ? पढ़नेमे मन नहीं लगता है ? भैंस-बैंस घरपर है क्या ? पढ़नेमे मन नहीं लगे तो जाओ घरपर भैंस चराना । चले आते है पढ़ने । सुरेश सिंह चौधरीजीक गप्प सुनि उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल रहय ।

'ऐ ? क्या बात है ? भैंस चराने जाओगे ?

—'मास्टर साहेब, हमर बाप भैंइस चरबै छै । भोरे दूध पिया कऽ पढ़ऽ लेल पठबै छै । हम तऽ अपन बापक बेटा छियै । पढ़बो करबै आ भैंइसो चरेबै ।' सुरेशक एहि जवबपर सभ ठहक्का देलकै । चौधरीयो जीकें हँसी लागि गेलनि मुदा ओकरा एक्को मिसिया हँसी नहि लगलै । हमरा सुरेश पहिल बेर नीक लागल छल ओहि क्षण । फेरसँ मास्टर साहेब पढ़बऽ लागल छलथिन । सुरेश सिंह फेरसँ बाहर ताकऽ लागल छल । चौधरीजी बुझाइए देखियोकें अनठा देने रहथिन । आ कि एक्कहि बेर सभ देखलक जे सुरेश सिंह क्लास चलि रहल छलैक । आ कि एक्कहि बेर सभ देखलक जे सुरेश सिंह कोठलीसँ निकलि मैदान दिस दौड़ल जा रहल अछि । सभक नजरि ओम्हर घुमलै तँ करेज धक्कसँ रहि गेलै । एकटा बच्चा धूरामे खेला रहल छल आ एक पैघ साँढ़ बच्चा दिस दौड़ल आबि रहल छलै । सभ देखलक जे सुरेश बच्चाकें फुर्तीसँ उठा कऽ पड़ा गेल । जँ सेकेण्डक देरी होइतै तऽ । सभहक शरीर रोमांचित भऽ उठलै । भीड़ लागि गेल रहै । सभ सुरेश सिंहक साहस आ फुर्तीक प्रशंसा कऽ रहल छल । एक्कहि क्षणमे सुरेश समूचा स्कूलमे प्रसिद्ध भऽ गेल । प्रशंसापर प्रशंसा···। मुदा ओ मूड़ी झुकौने क्लासक भीतर··। सभ सहपाठीक मोनमे सुरेश सिंहक प्रति श्रद्धा आ सहज स्नेह उपजलै ओहि दिन । सुरेश सिंह स्कूलक हीरो भऽ गेल छल ।

ओकरासँ दोस्ती भेल रहय किछु बादमे जा कऽ । स्कूलक वार्षिकोत्सवमे एकटा एकांकी भेल रहै ओहि बरख । 'अंगुलीमाल' । हम बुद्ध बनल रही आ

सुरेश सिंह अँगुलीमालक पार्ट खेलायल रहय। ओही एकांकीक रिहर्सलक बीच हम सभ दोस्त भऽ गेल छलहुँ। तकर बादसँ तऽ एक्के संग स्कूल आयब-जायब घूमब-टहलब शुरू भऽ गेल छल। हमर डेराक छत बेस पैघ रहय। दुनू गोटा खूब गुड्डी उड़ाबी छतपर। मैट्रिक धरि एक प्राण आ दू शरीर बनल रहलहुँ दुनू गोटा। लोक सभ, संगी सभ चौलो करय। सभक इर्ष्याक पात्र बनि गेल रही हम दुनू गोटा।

मुदा मैट्रिकक बाद हम बनारस चल गेलहुँ बाबूजी लग। आगू ओतहि पढ़लहुँ। सुरेशक संग छूटि गेल। अपन वियाहमे चिट्ठी लिखने छल ओ। मुदा अस्वस्थ रहबाक कारण हम नहि जा सकलहुँ। कहियोकें मोन पड़य तऽ मोन कोनादन करऽ लागय। हुअय जे यदि कतहु भीड़-भाड़मे भेंट हैत तऽ पकड़िकें चारि 'फैट' मारबै। आ कहबै, 'साला, एकदम्मे से भूल गया हमको। कभी हमारी याद आती थी की नहीं ?' मुदा ओ दिन कहियो ने आयल। आयल अछि तऽ ई चिट्ठी···। एतेक दिनक बाद···। एक्कहि बेर हमर सम्पूर्ण शरीर आ मोनके झकझोरि कऽ राखि देलक अछि। की करी किछु ने फुराइए···।

× × ×

एक विचित्र धर्मसंकटमे फँसि गेलहुँ हम। एक दिस आन लंगोटिया यार सुरेश सिंहक अन्तिम इच्छा तऽ दोसर दिस अपन नोकरी, स्टेटस, समाज। सब पूछि सकैत छथ जे एक हत्यारासँ तोरा कोन सहानुभूति छह ! एक निर्दय, अपराधीक चिट्ठीपर दौड़िकें चल जायब तऽ लोक की कहत ? यदि ओतऽ गेलापर सुरेश अपन बेटाकें कहीं हमरा संग लगा देलक तऽ परिवारकें, समाजकें की जबाव देबै ? के थीक ई ? की कहबै ! नोकरियोपर खतरा आबि सकैए। मुदा··· ! ओ एतेक विश्वासक संग चिट्ठी लिखलक अछि तऽ कोना नहि जायब। अपन आत्मा कोना स्वीकार करत एहि बातकें ? एक मृत्युक सन्मुख ठाढ़ लोकक इच्छाक आदर कोना नहि करबै। एक दोस्तक आग्रह कोना नहि मानियौ ? गुनधुनमे ओहिना कुर्सीपर पैंटे पहिरने बैसल रहि गेलहुँ। पूनम चाह लऽ के अयली तऽ ओ चौंकि उठलीह, 'ऐं एखन धरि ओहिना बैसल छी अहाँ ? उठि कऽ हाथो-मुँह नहि धोलहुँ अछि ? की बात छियै ! की लिखल छलै ओहि चिट्ठीमे।' ओ प्रश्नक अम्बार लगा देलनि। हम इशारासँ हुनका बैसबाक आग्रह कयलियनि। टाइक गेंठकें ढील कऽ कुर्सीपर ओंघरा जकाँ गेलहुँ।

'पूनू ! बड़ धर्म संकटमे हम पड़ि गेल छी। अहीं कोनो उपाय सुझाउ। लिअ ई चिट्ठी पढ़ू।' कहि कऽ हम चिट्ठी हुनका धरा देलियनि। ओ चाहक

कप हमरा पकड़ा कऽ चिट्ठी पढ़ऽ लगलीह। चिट्ठी पढ़िकऽ हमरासँ पूछि देलनि, 'केहन संगी छथि ई सुरेश सिंह अहाँक !'

—'एकदम लंगोटिया यार : जेना लिखलक अछि। बड़ मित्रता रहय हमरा सभकेँ स्कूलमे। तकर बादसँ कहियो भेंट नहि भेल।'

—एतेक दिनक बाद एहन परिस्थितिमे अहीं किए मोन पड़लियनि हुनका ?'

—की कहू ! ई तऽ विश्वासक गप्प छियै। अच्छा कहू तऽ ! की विचार होइए अहाँके ? जाइ कि नहि जाइ !

हम पूछि बैसैत छी। ओ कनेकाल चुप रहलीह। फेर कहलनि, 'एकदम्मे जाइ। काल्हिए चल जाउ। एहिमे कोनो तारतम्यक काज नहि। हम एकदम प्रसन्न भऽ उठलहुँ जेना।

—'यैह आशा छल अहाँसँ पूनू। अहाँक समर्थन एहि समयमे हमरा परम जरूरी रहय। ओना ओ अपना स्त्रीक मादे किछु नहि लिखलक अछि, मुदा लगैए जेना ओ आब एहि संसारमे नहि छैक। तेँ ओ विशेष चिन्तित अछि बेटाक लेल। हम काल्हिए भागलपुर चल जायब। कहि कऽ हम चाहक कप टेबुलपर राखि कपड़ा बदलऽ कोठलीमे चल गेल रही।

भागलपुर जेलमे पहुँचलापर सुरेशसँ भेंट करबामे थोड़ेक दिक्कति भेल। ओकरा सेलमे राखल गेल छलैक। जेना कोनो बड़ खुंखार अपराधी हो। कहुना कऽ भेंटक जोगार लागि गेल। पन्द्रह बरख बाद सुरेशकेँ सम्मुख ठाढ़ देखि रहल छलहुँ। सुखिक' एकदम अस्थिपंजर सन भऽ गेल छल ओ। गोर दप-दप शरीर कारी-झामर भऽ गेल छलै। ओकर चेहरापर हमरा देखि एक अजीब प्रसन्नताक भाव उमड़ि अयलै।'

हमरा होइ छल तों जरूर अयबह। हमर विश्वासक लाज राखि लेबह तों। कतेक दिनपर तोरा देखि रहल छियह। कतेक सुन्दर लगैत छह तों। वाह, एहू अवस्थामे तोरा देखि मोन गद्गद् भऽ गेल।' ओ अपन प्रसन्नता ओ उत्साहमे कन-कन कऽ रहल छल। मुदा हम ? अपन बाल-सखाक एहि रूप आ अवस्थाकेँ देखि स्तम्भित छलहुँ। किछु बकार नहि फूटि रहल छल। मुँहक थूक बिला गेल रहय। कहुना कऽ बाजि सकलहुँ।

सुरेश ! तोहर ई अवस्था ? किएक, कोना भेलह ई सभ ? किएक हत्या केलह तों ? कोन एहन विवशता छलह ? एहन उन्माद ! किए ? कहऽ हमरा।

की बात रहै। हम उत्तेजनामे थरथरा गेल रही। मुदा सुरेश एकदम गम्भीर ओ शान्त छल। सदाबहार, चिरसंगी मुसकी एखनहुँ ओहिना ओकर ठोरपर खेलि रहल छलै।

तोरा नहि कहबऽ तऽ ककरा कहबै हौ! के बुझत? आर के सुनत हमर गप्प? हमर भावना के बुझत? मुदा सभटा नऽ एहिठाम ठाढ़े-ठाढ़े नहि कहल जा सकैए। समयो भेंटक कनिए काल दैत छै। तेँ हम एहि कागजमे सभटा लीखि देने छियह। पढ़ि लिअह। आब काजक गप्प कऽ ली। एहि ठामक तिलका माँझी मोहल्लामे हमर बेटा रहैए। हमर छोट भाइक ओहिठाम। मुदा ओकर कनियाँ बड़ दुख दैत छै ओकरा। टुगर जानि कोनो दशा बाँकी नहि रखै छै। कहि कऽ सुरेश सिंहक आँखिसँ दहो-बहो नोर जाय लगलै। हम विह्वल भऽ गेलहुँ। अपनाकेँ सम्हारलहुँ।

'मुदा तोहर पत्नी कतऽ छथुन?' हम पूछि देलियै।

'आह, पत्नी! ओ तऽ आब एहि संसारमे नहि छथि। हुनकर स्मृति टा आब शेष अछि। हुनकर आत्महत्ये तऽ एहि सभ झंझट आ दुखक कारण भेल। भाइ अमित? तों हमर बेटा परेशकेँ अपना संगे लऽ जाहक। तोहर पयर पकड़ैत छियह। तोरा लग रहतह तऽ हम निश्चिन्त भऽ मरि सकब।' कहि कऽ ओ हमर पायरपर खसि पड़ल। अकस्मात्! हम हाँ, हाँ करैत भरि पाँजके ओकरा उठाकेँ ठाढ़ केलहुँ। कहलियै, 'तों एतेक चिन्तित किएक होइत छह, सुरेश। धैर्य राखह, विश्वास करह, तोहर जे इच्छा छह, वैह होयतैक। हम अपना संग लऽ जयबै तोहर बेटाकेँ, अपन बेटा जकाँ रखबै। तों निश्चिन्त रहऽ। लागल जेना सुरेशक आँखिमे पूर्णिमा रातिक इजोत भरि आयल होइ। ओ प्रसन्न भऽ उठल। गद्गद कण्ठे कहलक---

'हम आर की कहियह तोरा अमित, एहि जन्ममे कोन सम्बन्ध अछि तोरा संग नहि जानि! स्कूलमे सेहो हमर छोटो कष्ट तोरा नहि देखल जाइत छलह। हम ओहू समयमे तोरा झंझटिमे दैत रहलियह। आइयो तोंही हमर एहन अवस्थामे काज दऽ रहल छह। जाहि उदारतासँ तों हमर परेशकेँ स्वीकार कयलह अछि से जन्म-जन्मान्तर धरि हमरा तोरासँ उऋण नहि हुअऽ देत। एक दोसक खातिर तों'' कहिकऽ फेर ओकरा आँखिसँ नोर बहऽ लगलै। तावत् भेंटक समय समाप्त भऽ गेल छल। संतरी आबि कऽ कहि गेल रहय। हम सुरेशक नोर अपन हाथसँ पोछि देलियै। ओ हमर हाथ पकड़ि लेने रहय। विदा होइत कहने रहय—

अमित, परेशकेँ एहि सभ घटनाक सम्बन्धमे किछु ज्ञात नहि होइ से कोशिश करियह। बेस, विदा दोस अलविदा...।' कहि कऽ ओ एक झटकासँ मुड़ि कऽ 'सेल' दिस चल गेल। हम चोरा कऽ अपन आँखिमे उमड़ि आयल नोरकेँ पोछि लेने रही। पाछू घूरिकेँ तकलहुँ तऽ लोहाक छड़क भीतरसँ सुरेश निर्निमेष हमरे ताकि रहल छल। हम जेलसँ बाहर भऽ गेल रही।

× × ×

सुरेशक भाइ बहुत आरामसँ परेशकेँ हमरा सौंपि देलक। जेना ओकरा सभकेँ मुक्ति भेटि गेल होइ। हम अबोध परेशकेँ लऽ बिदा भऽ गेलहुँ। रास्तामे सुरेशक देल कागज निकालि पूरा पढ़ि गेलहुँ। पढ़ि कऽ अपनाकेँ रोकि नहि सकलहुँ। कानऽ लगलहुँ। परेश हमरा टुकुर-टुकुर देखि रहल छल। सुरेशक देल कागजमे लिखल रहै—

जहिया हमर बियाह भेल, हम अकाशमे उड़ि रहल छलहुँ। एहन सुन्दर स्त्री भगवान ककरो-ककरो दैत छथिन। जेहने रूप तेहने गुण! गीत गेबामे तेहने निपुण। धनुषाकार भृकुटि आ डग-डग करैत स्वप्निल आँखि! हुअय जे हरदम लगेमे रही। कतहु आनठाम मोन नहि लागय। बुझाय जेना प्रत्येक भोरमे नीलूक सुन्दरता आर बढ़ि जाइत छैक। जीवन एकदम आनन्दमय बुझा रहल छल। रिजल्ट नीक रहय तेँ भारत सरकारक एक उपक्रममे नोकरियो भेट गेल। बियाहक तेसरा बरख जाकऽ परेशक जन्म भेलैक। दूनू पति-पत्नी आनन्दसँ भरि उठलहुँ। संयोग नीक रहल जे बाबूजी पौत्रकेँ देखि लेलनि। मुदा तकरा बाद बेसी दिन ओ जीबि नहि सकलाह। परेशक जन्मक एक बरखक बाद हुनक देहान्त भऽ गेलनि। माय तऽ पहिनहि एहि संसारसँ बिदा भऽ गेल छलीह।

हमर दुनू व्यक्तिक आनन्दमे एक व्यक्ति आर सम्मिलित रहैत छल। ओ छल चन्द्रनाथ! हमर एक पड़ोसी! ओकर स्वभाव एतेक हँसमुख रहै जे सभ ओकरा पसिन्न करै। क्रमश: ओ हमर मित्र बनि गेल। हमरासँ ओना दू-चारि बरख जेठ रहल होयत मुदा नीतूकेँ भौजी-भौजी कहि एकदम मोहि लेने छल। परेशकेँ अक्सर कोरामे लऽकेँ टहलाम दैत रहय। हमरा दुनू दम्पतिक सेवा लेल एकदम तत्पर रहैत छल ओ। राजनीतिमे ओकर दखल रहै आ हमरा अभिरूचि रहय तेँ बेस पटरी बैसि गेल। शुरूहेसँ ओकरा नेता बनबाक धुनि सवार रहैक। हरदम दिल्ली, पटना करैत रहय। ओना ओ एकटा स्थानीय कालेजमे लेक्चरर छल मुदा पढ़ौनीसँ कमे मतलब रहै छलै ओकरा। हरदम राजनीतिक संगठनमे लागल रहय। 'बैचलर' रहैत छल। परिवार गाममे रहैत छलै।

कि जाने गेलियै जे ई नीक लोकक मुखौटा धारी चन्द्रनाथ मनुक्खक भेषमे राक्षस अछि। ओकर कारण हमर सभक जीवनक फुलबारी उजड़ि गेल। छहोछित भऽ गेल सम्पूर्ण परिवार……। हम एक दिन लगेक गाममे 'टूर' पर गेल रही…। साँझे घुरि जयबाक छल। मुदा दोपहरियेसँ जे बरखा शुरुह भेलै से बन्द हेबाक नामे ने लै। साँझक ६ बजे तक अनवरत बरखा होइत रहलै। अन्हार भऽ गेल छलै। रास्ता नीक नहि। जंगल पड़ै बीचमे। तेँ सभ हमरा आपस होयबासँ मना कयलक। कोनो उपाय नहि देखि हमरा ओहि गाममे ठहरि जाय पड़ल। भिनसर बिदा भऽ जखन डेरा लग अयलहुँ तँ दूरसँ थोड़ेक भीड़ देखाइ पड़ल। किछु अर्थ नहि लागल। मुदा शंका हुअऽ लागल। जल्दी-जल्दी पहुँचलहुँ। डेराक दृश्य देखि कऽ स्तम्भित रहि गेलहुँ। लागल जेना एक्कहि बेर सम्पूर्ण धरती नाचि गेल हो। ठाढ़ नहि रहि सकलहुँ, माथपर हाथ दऽ बैसि गेलहुँ। आँखिसँ दहो-बहो नोर जाय लागल। नीलूक मृत शरीर पंखासँ लटकल छल। कंठमे नुआ बान्हि कऽ आत्महत्या कऽ लेने रहथि ओ। हुनका संग ओ रक्षसवा चन्द्रनाथ आ ओकर तीनटा संगी बलात्कार कयने रहनि। आ एहि बेइज्जतीकेँ ओ बरदास्त नहि कऽ सकलीह। एक टा चिट्ठीमे ओकर कुकृत्य आ नाम लीखि अपने शरीर त्यागि देलनि। चारि बरखक हमर बेटा मातृविहीन भऽ गेल।

ओ चंडलबा चन्द्रनाथ तकर बादसँ निपत्ता भऽ गेल रहय। मोकदमो भेलै। मुदा ओकरा किछु नहि हेबाक छलै, नहिएँ भेलै। पुलिस फुसिए हमरा आश्वासन दैत रहल। चन्द्रनाथकेँ गिरफ्तार नहि कऽ सकल। पाइ आ पैरबीक जोरपर ओकर किछु नहि बिगड़लै। केसो समाप्त कऽ देल गेलै। हमर हृदय लहुलहुआन भऽ गेल रहय। चन्द्रनाथक विश्वासघात, नीलूक आत्महत्या हमरा तोड़ि देलक। विवेकशून्य भऽ गेलहुँ हम। मोनमे हरदम प्रतिहिंसाक आगि धधकैत रहल। मुदा चन्द्रनाथ कहियो हाथ नहि आबि सकल। हम हरदम अपन जेबीमे पिस्तौल राखि कऽ घुमऽ लागल रही। नरेशकेँ अपन छोट भाइ लग पठा देने रहियै। अकस्मात एम. पी.क चुनावमे चन्द्रनाथकेँ टिकट भेटि गेलै। बगलबला जिलाक संसदीय क्षेत्रसँ ओ उम्मीदवार बनाओल गेल रहय। ओ चुनाव प्रचारमे लागि गेल छल। हम अवसरक ताकमे बौआ रहल छलहुँ। एक दिन नीक अवसर भेटि गेल। एक चुनाव सभामे हम कहुना मंच लग तक पहुँचि गेलहुँ। नुकायल रहलहुँ, अवसरक खोजमे। मुख्य मंत्री चन्द्रनाथकेँ जितेबाक लेल लोकसँ अपील कऽ रहल छलाह। ओकरा कर्मठ, देशभक्त, सच्चरित्र, समाजसुधारक सिद्ध कऽ रहल छलाह। हमर खून खौलि गेल। बरदास्त नहि भेल। हड़बड़ा कऽ मंचपर जा चन्द्रनाथक छातीमे

छओ टा गोली उतारि देलिअइ। मुख्यमंत्री लग पिस्तौल फेंकि अपनाकें गिरफ्तार करा लेलहुँ। भाइ सत्तऽ कहै छियह, एक्कोरत्ती पश्चात्ताप नहि अछि एहि लेल हमरा।'

× × ×

मार्च १९८८। परेश हमर संग रहि पढ़ि रहल-ए। पूनम बेटा जकाँ मानै छथि ओकरा। सुरेश सन हँसमुख आ नटकिया अछि परेश। माय-बाप कहियोकें मोन पड़ै छै। मुदा चन्द्रनाथ पता नहि किए बेसी मोन छै। नेताक स्वांग अक्सर धरैत रहैए। जखनि कऽ स्वांग धरैए, हमरा सभकें चकविदोर लागि जाइए।

●

मिथिला मिहिर
जुलाई, १९८८

जहिया सूरुज नहि उगलै

जोगिया साते बरखक रहय, जहिया ओकरा बाप मुइलै। बाप मुइल पड़ल रहै। चचरी लेल बाँस काटऽ गेल रहथ लोक। बड़ देरी होइत रहै। बापक मुँह बड़ी काल धरि देखैत रहल ओ। सरिसबसँ कफन अयबामे देरी भेलै। उघार आङे पड़ल रहइ ओकर बाप। गिरहतक देल अंगा चर्ड़ाचोत भऽ गेल छलै। बड़का बच्चा कहने रहइ जे दशमीमे औते तँ अंगा देतै। मुदा दशमी धरि कहाँ टिकलै ओ। जोगियाकेँ एहि बेर नाच देखबऽ लेल जैतै दशमीमे।

झन् झन् न न झनाक्

गड़ गड़ ड़ ड़ गड़ाक्।

बपक कोरामे बैसिकऽ खूम देखय ओ नाच! परतापुरक नामी नटुआ आयल रहइ। इस्स, नाचइ जे···। बाँस कान्हपर रखने कक्का अयलै। कफन लऽ कऽ मौसा अयलै। सभ मीलि चचरी बनौने रहय। जउर लऽ कऽ गिरहत आयल रहइ। गिरहतकेँ देखि ओकर माय जोर-जोरसँ चिकड़ऽ लगलै। गिरहत जोगियाक गालपर हाथ फेरलकै। माथपर हाथ रखलकै। आर जोर-जोरसँ कानऽ लगलै ओकर माय। सभ जोगियाक हाथमे कोहा दऽ देलकै। चचरी उठा कऽ विदा भेलइ। आगू-आगू जोगिया कोहा लेने रहय। कोहामे आगि रहइ। सभ मीलि जरा अयलै ओकरा बापकेँ। जोगियाकेँ बाप ओहिना मोन छै। कोहा ओहिना मोन छै। कोहामे राखल आगि। कोहामे राखल चाउर। कोहामे राखल चूड़ा। कोहामे पौड़ल दही। चूड़ा···दही···घुप्प।

—अरे, जोगिया! कतऽ गेलेँ रे? सुन तऽ···।

—हँ, मालिक। की हइ?

—अँए रौ! हमर तमाकूक डिबिया की भेल? बिछानपर तऽ नहि अछि?

—बुझाइए मालिक, दरबज्जेपर भूइल गेली। रहू, हम लेने अबै छी।

—अँए रौ? बच्चा नहि अयलाहे चौकपरसँ?

—कहाँ मालिक ! बलू एखन आठे बजलइए। समाचारक टेम कहाँ भेलइए। आब अबिते हेता।

—रे, सुन ! हम ताबत पड़ै छी। खेबाक बेर होइ तऽ उठा दिहें। पड़ि रहलाह बूढ़ा गिरहत। जोगिया लालटेन लऽ कऽ दुरुक्खा बाटे अङना गेल। पछबरिया घरमे ओसारापर सोहारी पकबैत रहै सकुन्ती। सोहारी पकाओल भऽ जेतै तँ, कनियाँ बुआसीन तरकारी कटैत दूध गरम करतै। ताबत बच्चा मालिक चौकपरसँ आबि गेल रहतै। रेडियोमे समाचार सुनतै। समाचार सुनि कऽ थोड़े काल बड़ेरी दिस तकैत रहतै बच्चा मालिक, कनियाँ बुआसीन बीचमे एक-दू बेर कोठलामे घूमि-फीरि औतइ। बच्चा मालिक चाड़कें देखैत रहतै। कनियो दिस नहि तकतै। खौंझा कऽ कनियाँ बुआसीन चुल्ही लग जा दूध औंटऽ लगतै। दूध उधिया जेतै। अन्हार भऽ जतै। अनठा दै छै कनिए काल कनियाँ बुआसीन। फेर उतारि दै छै लोहिया। सकुन्ती पछबरिया घरक असोरापर खाम्हमे ओंगठि कऽ ओंघाइत रहै छै। जोगिया सभटा देखैत रहैए।

—सकुन्ती, सोहारी भऽ गेलनि ?

—आब चारिए टा गुलिया रहि गेलइए बुआसीन ! भइए जेतै।

—सोहारी पका कऽ कने तरकारी धो दिहथि।

—रे जोगिया ! कने तोंही तामे जो तँ तरकारी धो लाऽ तँ।

—नै, नै, जोगिया बूते नहि हेतै। आलूमे बड़ माटि रहै छै।

—से किए बुआसीन ? आब तँ बलू बारह बरखक भेलइ छँउड़ा। वियाह भेल रहितइ तँ बाप बनल रहितए। तरकारी धोअल नहि हेतै ? कहू तँ भला ? लाजे कठौत भऽ गेल जोगिया। कनियाँ बुआसीन 'धौर' कहि कऽ जे हँसऽ लगलै से हँसिते चल गेलइ।

हीं···हीं··हीं। सकुन्ती सेहो हँसऽ लग लै। हाँ···हाँ··हाँ···। जोगियाकें हँसी लागि गेलै। खीं···इ···इ···।

—रे, किए एत्ते ठिंठिआइ जाइ छै ? जोगिया।

भानस-भात नहि भेलइए ? बच्चा मालिक आबि गेल रहै। आब समाचार सुनतै। भानस-भात हेतै। ठाँवपीढ़ी हेतै। बूढ़ा गिरहत उठतै। बच्चा मालिक उठतै, पछबरिया घरक ओसारापर बैस कऽ भोजन करतै, किदन-कहाँदन बतिएतै।

—'नरही अबाद भऽ गेलह ?'

—कहाँ, पानिए ने घटलैए ।

—'आ चर ?'

—'परसू धरि भऽ जेतै । बड़ खढ़-पात छलइए । जऽन बेसी लगलै ।

—'एखन तँ हरोक काज बहुत बाँकिए हेतह ?'

—'हँ तँ ! पँच लिअऽ पड़तै । एक जोड़ा आर बड़द रहितए तँ…।'

—'तोहर ससुर तँ बियाहमे गछने रहथि मुदा देल पार नहि लगलनि ।'

—'दूर ! ओ की देताह ?'

—हँ ! से तँ सैह । मंगनीमे वियाह भऽ गेलनि । जकर माथपर पच्चीस बिगहा खेत । तकरा खाली पचास हजार ! खैर, छोड़ह । आब जे भेलइ से भेलइ । बड़का गाम बला ओझा किएक आयल छलाहे ?'

—'बेटी बियाह लेल । मुखिया जी ओठिाम कथा छनि । एक लाख मंगै छथिन । तैं परसँ बरियातीक नीक स्वागत…।'

—'ऐं ? एक लाख—। जेकरा जत्ते, तकरा तत्ते—।

—एक लाख कतऽसऽ देथिन ओझा । ओ की कोनो दू नमरी कमाइ छथि ।

—सैह तऽ—। नहि शक्क भेलनि ।'

—बच्चा लहेरियासराय कहिया जेबहक ? बुआसीनकें देखा दहुन । तीन बरख भऽ गेलह बियाहक, माय जीबैत रहितथुन तऽ कत्ते कबुला-पाती केने रहितथुन ।'

बच्चा मालिक गुम्मी लाधि लै । ठकमूड़ी लागि जाइ मने । बूढ़ा गिरहत खोंझा उठै । कनियाँ बुआसीन केबाड़ लगसँ सभटा सुनै । जोगिया लालटेनक इजोतमे कनियाँ बुआसीनक मुँह देखैत रहय । बुआसीनक आँखिमे नोर हुलुक-बुलुक करैत रहै । फेर सुतली रातिकऽ दुनू बेकतीमे झगड़ा होइ । काना-खिझ्झी होइ । झनक-पटक होइ । मुदा बच्चा मालिक बुआसीनकें लहेरियासराय नहि लऽ जाइ । बुआसीन कहियोकें बड़ मानइ जोगियाकें । साबुन दै नहाइ लेल । गमकौआ तेल दै । केश थकरि दै अपन ककबासँ । बड़ मोलायम लगै है कनियाँ बुआसीनक हाथ । माय मोन पड़ि अबै । मुदा मायक हाथ तऽ खर-खर लगै ओकरा । सम्बन्ध कऽ लेलकै । उत्तरबारि टोलमे रामचन्नर कक्का संगे । कक्काक बहु मरि गेलै तेसरा । ओहि टोलमे रहै छै माय । कहियो काल एहि टोल अबै छै तऽ भेँट कऽ जाइ छै । जोगियाकें कहियो ने पसिन्न पड़लै रामचन्नर कक्का । ओकर घरोने कहियो नीक

लगै छै। अपने बाउके घर पसिन्न छै जोगियाकें। आब ओहिमे मौसा रहै छै। मौसी रहै छै। जोगिया कखनोकें जाइए अपन अङना। अङनामे नहि नीक लगै छै ओकरा। बापक मुइल मुँह मोन पड़ै छै। कन्हापर बैसाऽ कऽ हाट-बजार बुला आनै। चीज वस्तु कीनि दै। नाच देखा दइ।

झन—न—न—नझनक।

गड़ गड—,ड़—ड़—ड़—गड़ाक्।

नचैत नटुआ मोन पड़ै छै जोगियाकें। नचैत—नचैत—आहिरे बा कनियाँ बुआसीन? अहाँ—?

'एह, ई रछसनिया मरियो ने जाइए। जीवन नरककऽ देलकए। जेहने बाप, तेहने बेटी—।'

—'हँ, हँ, छुट्टी पाबि लिअऽ हमरासँ। गर्दनि दबा दिअऽ हमरा। सभटा हमरे दोष—। हमर बाप खाली एक जोड़ा बड़द नहि देलनि तऽ दूरि गेलाह। एकटा मोटर साइकिल नहि देलनि तऽ बेजाय भऽ गेलाह। कोनो धारने छलाह की?

—इह, बेसी लबर-लबर नहि करू। जीह पकड़िकें घीचि लेब। बाँझ नहितन। कोन जनमकें पाप भोगि रहल छी हे भगवान?

बच्चा मालिक देबालपर माथ पटकऽ लगै। धड़ाक-धड़ाक—। मुदा कपार कहियोने फुटलै। कनियाँ बुआसीनकें तड़ातड़ चाट लगा दै। बुआसीन चौखाट लग बैसि कऽ घौना करइ। जोर-जोरसँ चिकड़इ। जोगिया डरे सर्द रहय। एहिना समय बितै। दिनपर दिन। रातिपर राति।

—जोगिया एम्हर आ तऽ। एहिठाम बैस। खिस्सा अबै छौ तोरा?

—'खिस्सा? हँ, अबैए बुआसीन।

—कोन खिस्सा अबै छहु?

—मच्छर बला।

—कह तऽ—।

—एकटा रहय मच्छर। ओकरा दु टा बहु रहै। छोटकी बहुकें बड़ मानइ। जेठकी तँ बिगड़ल रहइ। एक दिन मच्छर गेल घराउर करऽ। छोटकी बाट देखैत रहै। कहलकै, सुइ सन मुँह चनन सन काठी कखन औता रे की? बड़की खौंझा गेलइ।

बिगड़ि कऽ कहलकै, चट दऽ बैसथिन, पट दऽ मारथिन, दाँत निपौड़ने जएता रे की। हीं—हीं—हीं—हीं—हँसऽ लागल जोगिया। कनियाँ बुआसीन हँसऽ लगलै। हँसैत-हँसैत जोगियाके गालमे चुम्मा लऽ लेलकै। लजा गेल जोगिया। कनियाँ बुआसीन आर जोरसँ हँसऽ लगलै। हँसैत-हँसैत कखनोके कानऽ लागै। जोगियाक मोन कोनादन करऽ लगै। निकलि पड़य आङनसँ। बाध-बोन बौआइत रहय, एम्हर गिरहत, बच्चा मालिक तकैत रहै। चिचिआइत रहै। जोगिया! जोगिया!! मुदा जोगिया रहै तखन ने बाजय। आबए तऽ छरपिटा दै बच्चा मालिक।

—खच्चर नहितन। कतऽ पड़ा जाइ छें रौ? हरामी। हमर गंजी नहि भेटि रहलए। एक घंटासँ परेशान छी आ ई लाट साहेब टिर्री मारैत रहता। ला ताकि कऽ। जोगिया तुरंते गंजी ताकि कऽ दऽ दै। एहि काज लेल कनियाँ बुआसीनके नहि कहइ बच्चा मालिक। मुहाँबज्जी बन्द छलै। बच्चा मालिकक हाथ सक्कत रहै। पीठ बड़ी काल धरि दुखाइ। आँखिमे नोर भरि अबै। बाप मोन पड़ै।

—हमर हाथमे की हइ?

—वस्तुनमा।

—के खेतै?

—हम खेबै?

—बौआ मुँहमे टुप्प। बाप हाट-बाजार जाइ तऽ ओकरा लेल लमनचूस आनै। हवाइ मिठाइ लाबै। गुलाब छड़ी आनै। गुलाब छड़ी कड़-कड़ बोलए। सभ लड़िका के मनमा डोलए। जोगियाक मुँहमे गुलाब छड़ीक स्वाद भरि अबै छै। कनियाँ बुआसीनक चुम्मा मोन पड़ै छै। इस्स पीठ परहक मारि बिसरि जाइए। फेरसँ वैह रामा, वैह खटोला। गिरहत, बच्चा मालिक, कनियाँ अबुासीन, सकुन्ती, मौसा आ हँ। माय?

—जोगिया कत्ते दिन रहबे एनाऽ? चल हमरा जऽरे। आब तँ पैघ भेलें।

—बात बुझही। परमान्द बाबूक कोठा बनै छइ। रेजामे रहिहे। दू पैसा कमा लेबै तऽ अबलम्ब हेतौ। राम चन्नर कका कहै छै। बुझाके थाकि जाइ छै। मुदा जोगिया राम चन्नर कका संगे नहि जाइए। एकोरत्ती नहि सोहाइ छै ओ। मायो के कहियोके झाड़ि दै छै।

—तूँ कथीके सिनेह देखबै छें। जो राम चन्नर कका संगे। हम कत्तौ नहि जेबौ। माय खौंझा जाइत छै। खौंझाइत रहै छै। घौना पसारि दै छै। कनियाँ बुआसीनके गाड़ि दिअऽ लगै छै।

—कनियाँ बुआसीन एहि छौड़ाके नोन चटा देलकैए। मंतर फूकि देलकैए। डाइन छै डाइन। निपुतरी के कोन दया-माया छै? एकर खून पी कऽ रहतै। चुरैन जकाँ लागि गेलैए जोगियाक देहमे। कनैत-कनैत बिदबिदाइत चल जाइ छै। जोगिया सुनैत रहैए। मुदा टससँ मस नहि होइए। मूँहमे थूक भरि अबै छै। बैसल-बैसल फेकि दइए।

—कनियाँ बुआसीन, ई चुरैन ककरा कहै छै? की करै छै चुरैन?

—चुरैन लोकक देहमे लगै छै। जाहि मौगी के धिया-पुता नहि होइ छै। इच्छा पूर नहि होइ छै। ओ जवानीमे मरै छै तऽ चुरैन होइ छै। जेकरा जीबैतमे पसिन्न करै छै। मुइलापर चुरैन भऽ के ओकरे देहपर अबै छै। जेकरापर खिसियायल रहै छै ओकर खून पीबि जाइ छै।

—हमरा तऽ अहाँ बड़ मानइ छी बुआसीन।

—हँ, रे तों हमरा बड़ नीक लगै छें। मुदा हम मरब तऽ चुरैन नहि हेब। यदि हेबो करब तऽ तोरा बकसि देबौ। तोरा किछु नहि करबौ। कहि कऽ हँसऽ लगलै कनियाँ बुआसीन। हँसिते रहलै। जोगिया के हँसी नहि लगै छै। कठहँसी हँसैए ओ।

आइ-कालिह एहिना कखनो कनैत रहै छै। कखनो हँसैत रहै छै। किदन-कहाँदन बजैत रहै छै। सुन्न दिस तकैत रहै छै। सुतली रातिके भोकाड़ि पाड़िके कनै छै। रातिकऽ नीन्न नहि होइ छै कनियाँ बुआसीनकें। बच्चा मालिक जौरे नहि सुतइ छै। भगवती घरमे भुइयाँमे शीतलपाटीपर ओंघरायल रहै छै। कत्ते राति जोगियाकें अपन लग बैसा लै छै। जोगियाक कोरामे माथ दऽकें हिचुकैत रहै छै। बच्चा जकाँ तकैत रहै छै ओकरा दिस। एकदम नान्हि टा भऽ जाइ छै।

—जोगिया, खिस्सा कह तऽ।

—नहि बुआसीन, अहाँ सूति रहू।

—नहि हमरा खिस्सा सुना।

—खिस्सा सभटा भूइल गेलिअइ। एक्कोटा मोन नहि पड़ैए।

—खिस्सा नहि सुनेबें तऽ एकटा काज करबे?

—की? कोन काज, कनियाँ बुआसीन?

—हमरा कनियाँ बुआसीन नहि कह।

—तऽ की कहू?

—माँ कह। माँ कह हमरा।

—माँ!

—बेटा हम बड़ गुन मानबौ। एकटा काज कर। कत्तौ लऽ चल हमरा। भागि चल एहिठामसँ। एहि नरकसँ निकालि ले हमरा। मायक एकटा उपकार कर बेटा…। कनियाँ बुआसीन!!! बँसबिट्टीक झोंझमे बैसल जोगियाके सभटा मोन पड़ै छै। ओकरा ने कानल भेलइ। ने बाजल भेलइ। भोरहरबामे बच्चा मालिक जोर-जोरसँ चिकड़य लागल रहै। माथ-कपार फोड़य लागल रहै। सौंसे दुनियाँ के कह' लागल रहै जे कनियाँ बुआसीनकेँ साँप काटि लेलकै। रातिमे घरसँ बाड़ी गेल रहय। मुदा जोगियाकेँ सभटा बुझल छै। भरि-भरि राति की सभ होइत रहलैए। बच्चा मालिकक दोसर बियाह कऽ लेबाक निश्चय। कनियाँ बुआसीनकेँ मारब, पीटब। कनियाँ बुआसीनक बपहारि तोड़ब। भरि घर औनायब। पानिसँ निकालल माछ जकाँ तड़पब। तड़पि-तड़पिकेँ मरि जायब। जोगियाकेँ होइ छै जोरसँ चिकड़ि-चिकड़ि कऽ सौंसे गामकेँ कहि दै। बच्चा मालिक कनियाँ बुआसीनकेँ मारि देलकै। ओ जीबऽ चाहैत रहै! ओ मरऽ नहि चाहैत रहै। मुदा बच्चा मालिक ओकरा मारि देलकै। मुदा जोगियाक बकारे बन्द भऽ गेल रहय। बौक भऽ गेल छल ओ। हबेलीपरसँ पड़ा कऽ बँसबिट्टीमे नुका रहल छल। पानि टिपिर-टिपिर पड़ि रहल छलै। सुरुज भगवान नहि उगल रहथिन। बहुत लोकक आवाज सुनाइ देलकै ओकरा। कनियाँ बुआसीनकेँ सभ जरबऽ लेल लऽ जा रहल छै। चचरीपर मुइल पड़ल कनियाँ बुआसीन। आगू-आगू बच्चा मालिक कोहा लेने। कोहामे आगि। पाछू-पाछू मूड़ी झुकौने चलैत लोक। जोगियाकेँ बाप मोन पड़लै। बापक मुइल मुँह मोन पड़लै। कोहा महक आगि मोन पड़लै। कनियाँ बुआसीनक कहल बात मोन पड़लै। "लऽ चल हमरा। भागि चल एहिठामसँ। एहि नरकसँ निकालि ले हमरा। एकटा उपकार कर बेटा।" चिचिया उठल जोगिया। माँ…आ…आ। आगूमे पड़ल रोड़केँ उठा लेलक। समधानिकेँ मारलक। बच्चा मालिकक कोहामे लगलै ठक्। आगि छिड़िया गेलै। जाबत् लोक बुझय, जोगिया यैह ले बैह ले पार। ठीके ओहि दिन सुरुज भरि दिन नहि उगलै। पानि टिपिर-टिपिर पड़ैत रहलै।

मिथिला मिहिर
फरवरी, १९८९

सरिसवक साग

—'तरकारी लेबै मलिकिनी।'

तरकारी बला टाहि देलक। चाहक कप मुँहसँ सटौनहि रही। जाड़ मासक चाह। एहि कनकनीमे तुराइ तरमे बैसिकऽ चाह पीबामे बड़ मोन लगै छै। तेँ दुनू बेकती तुराइए तरमे बैसि कऽ चाह पीबै छी। पहिल-दोसर घोंट पीलहुँ दुनू गोटा। आह, टटका चाह, असली चाह।

—'तरकारी लेबै!' आब तरकारी बला केबार लग आबि गेल रहय। मोन भेल कहि दिअइ, 'जाह नहि लेबै। बादमे अबिहऽ।' मुदा ताबत् प्रभा बाजि उठलीह,—ठहरह, अबै छी। ओ सुर्र···सुर्र···जल्दी-जल्दी चाह पीबऽ लागल रहथि। हम भफाइत चाह आ प्रभाकेँ देखऽ लागल रही। 'दुर, छोड़िने दिअऽ एखन। स्थिरसँ चाह पीबू। कहियौक बादमे आओत।' हमरा एखन प्रभाक उठि जायब नहि नीक लागि रहल छल। नहि, नहि! सरिसबक साग अनने हैत। कहने रहिअइ।' कहैत ओ कप राखि कऽ फुर्र भऽ गेलीह। हम चाहक घोंट लैत रहलहुँ। कप आधा खाली भऽ गेल छल। भेल जेना एहि कपमे बड़ चाह अँटै छै। खिड़कीसँ बाहर नजरिकेँ फेरलिअइ। कुहेश पूरा नहि छँटल छलै।

—'एत्ते भोरे कोना ई तरकारीबला पहुँचि गेल? एकरा सभकेँ रातिमे निन्न नहि होइत छैक। खाली तरकारी बेचबाक चिन्ता। धन्य कही एकरो सभके।' मोन पड़ल जखन आनन्दपुरीमे डेरा रहय। किरासनबला अहल भोरे टाहि मारय। कतेक निन्न ओकरे आवाजसँ टूटै। किरा···सन···तेल। मोन खौंझा जाय। भोरे-भोरे किरासन तेल। एक दिन तऽ सुनील धड़फराकेँ उठि तड़तड़ाकेँ चारि चाट लगा देलकै। 'हे, कहि दै छिअह। फेर काल्हिसँ जँ भोरे-भोरे टाहि मारबह तऽ बेजाए बात भऽ जेतह। एहि गलीमे नहि आबि सकैत छह।'

पता नहि किएक बिरासनबला चुपचाप रहि गेल रहय ! बड़बड़ाइत घूरि गेल ठेलागाड़ी लऽ कए। सरिपहुँ, फेर अहल भोरे नहि आयल। भरिसक सुनीलक कठमस्त देह आ खादीक कुर्त्ता-पैजामाक प्रभाव पड़ि गेल हेतै। खादीसँ आइ-कालिह बड़ रोब पड़ै छै। जे रोब जीपसँ पड़ै छै सैह खादीसँ पड़ै छै। ओना तऽ आब रोबो रेशमी भऽ गेलैए। खरखर नहि रहलइए। मारुती जीप आ भागलपुरी सिल्कक कुर्त्ता, बण्डी। हाथमे पाँच सए पचपन सिगरेट....। इस्स....। रोब एकरा कहैत छै। सोना-चाँदीक स्टार आ अशोक चिन्ह सभ फीका पड़ि गेल छै। पहिने एकटा लाल-मुरेठा गाममे आबइ तऽ पड़ाइन लागि जाइ। मुदा आब ? एस. पी. संगे बतकुट्टनि करबामे बड़ मोन लगै छै। बरदीक रोब एकदम सिमसिमाह भऽ गेलैए। चबश...! तैं' रोब लेल बरदीबला बलात्कार करैए। 'एँह, बूझाइल फेर...अंगरेज जमाना माफिक पड़ाइन लागि जायेगा। सालला कोइनो रोबे नइ मानता था...।'

मुदा ई तरकारीबला ? खिड़कीसँ देखलहुँ। सड़कपर ठेला लग प्रभा ओकरासँ गप्प कऽ रहल छलीह। आइ कालिह एहि कलोनीक बेसी गृहणी एही तरकारीबलासँ तरकारी कीनै जाइ छथि। गप्प करबामे एकदम ओस्ताद अछि ई। आँखिकेँ तेना उपर-नीचा, बामा-दहिना घूमाकऽ गप्प करत जे...। ताहिपर सभ घरबालीकेँ एकरा संग एखन विशेष सहानुभूति भऽ गेल छै। किएक तऽ तरकारी बलाकेँ घरबाली एखन घरसँ निकालि देने छै। ओहि दिन प्रभा कहने रहथि— बेचारा कत्तहु कोनो दोकान लग सूति रहैए आइ कालिह। ठेला परहक तरकारियो छौंड़ा सभ चोरा लैत छै। एहन जाड़मे कत्ते कष्ट होइत हेतै। केहन बहु छै से नहि जानि !' पत्नी प्रताड़ित तरकारीबलाक प्रति कलोनीक सभ घरबालीक सहानुभूति आइ-कालिह उमड़ल छै।

'सार, खूब गरदनि कटैत हैत सभहक ! दुखनामा सुना-सुना कऽ एक-कऽ-दू करैत हैत।' गरदनि घुमाकेँ तकलहुँ। प्रभा एकटक तरकारीबलाक गप्प सुनि रहल छलीह। ई तरकारी कीनऽ जाइत छथि कि गप्प सुनऽ...। चाहक सुआद बदलल बुझायल। इह, कहैत छियनि टाटा चाह नीक नहि होइत छै। मुदा ई मानतीह तखन ने। टाटे चाह अनतीह। अमजद खाँपर लट्टू भऽ गेल छथि। ई टी० भी० जे ने करय। धियो-पुता सभ टी० भी०क विज्ञापन सुनि कऽ फरमाइश करैए। हमर छोटकी बेटी आब टौफी नहि सनेशमे स्वाद मँगैए...। ओहि दिन

चौधरी जीक छोटका बेटाकेँ कहैत रहै—"शादी और तुमसे" कभी नहीं"। ई टी० भी०क ललिताजी सभ गृहणीकेँ फोरबाड बना देलथिन अछि। बाजारमे घूमि-घूमिकऽ खरीददारीमे बेसी बुधियारी बुझाइ छै। मुदा मोल-भाव करबामे मोन नहि लगै छै। दू पाइ बचा कऽ काज करब से कतऽ? टी० भी०मे देखौलक कि भऽ गेलहुँ घिरनी""। कँमी ग्लोरी साबुन चाही। डिंपल कापड़िया लगबै छै तैं। इह, यैह प्रभा जहिया आयल रहथि पटना, घरसँ बाहर पयर नहि देथि। की तऽ लाज होइए। डर होइए। लोक देखि लेत। अनठिया सभ टुकुर-टुकुर तकैए। रातिमे आबी सात बजे आफिससँ। तखन जाइ किरासन अनै लेल। तरकारी अनै लेल। चाहक पत्ती अनबाक हेतु। कत्तहु चारि दिन टूरपर जाइ तऽ सभ समान जुटा कऽ जाय पड़य। तैंयो मोन टाँगल रहैत छल। आबी तऽ प्रभाकेँ एकदम हताश देखियनि। एकदम उज्जर मुँह! रंग उड़ल। की तऽ हमर परोछमे डरे सकदम रहै छलीह। केबाड़ खोलि कऽ बाहर नहि निकललीह। अमूल सधि गेल छलनि। कीनिकेँ नहि आनि सकलीह। बच्चा दूध लेल बेलल्ल छल।

'इह, बगलेमे तऽ दोकान छै। जा कऽ आनि लितहुँ। कथीकेँ डर? क्यो खा जइते!' तामससँ हमर माथ गरम भऽ जाय। एकदम कूपमंडूक छी अहाँ। कतऽसँ बथा गेलहुँ से नहि जानि! कोन पाप केने छी जकर सजाय भेटि रहलए।' हमर झनक-पटक शुरुह भऽ जाय। किचकिचा जाय मोन। तामसे किदन-कहाँदन बाजऽ लागी होश खतम भऽ जाय। विवेक नष्ट भऽ जाय। प्रभा कानऽ लागथि। हिचुकऽ लागथि। एक बरखक बेटा दुनू गोटाकेँ टुकुर-टुकुर ताकऽ लागए। मोन पड़ि जाइथ यशोदा भाइ। गामसँ विदा हेबा काल कहने रहथि। 'हे, कनियाँकेँ किचकिचाकऽ कोनो बात नहि सिखबियह। किचकिचायल तामस बड़ खराब होइ छै। एकदम असरि कऽ जाइ छै। बादमे बड़ पश्चाताप हेतह।' मुदा यशोदा भाइक सभ शिक्षा घोसड़ि जाय। माथ जखन सन-सन करऽ लागय तऽ की बाजी बादमे अपनहुँ मोन नहि रहय।

हँसीक खिल-खिल स्वर सुनाइ देलक। प्रभा हँसि रहल छलीह तरकारीबला हँसि रहल छल। खिड़की बाटे देखलहुँ दुनू प्रेमसँ गप्प कऽ रहल छथि। तरकारी बला तराजूपर सरिसवक साग रखने छल।

'सार, अपने बहुसँ लड़ि अनकर बहुसँ गप्प लड़बैए। जरूर एकर चालि नीक नहि हेतइ।

ओहिना नहि बैलौने हेतै घरसँ एकरा। कोना हँसि-हँसि कऽ गप्प करैए। हमरा भेल जे जाइ कोनो व्याजें जा कऽ दू थापड़ जड़ि दिअइ ओकरा। घेंटकट्टा !' एत्ते महग क्यो तरकारी बेचय। खाली झूठ-फूसकें गप्प लड़ाकें मौगी सभकें ठकैए ई ठकजरूआ। काल्हिसँ एकरा कलोनीमे टपऽ नहि देब। दूरि कऽ देत सभकें ई। ताबत् प्रभा पनपथिया लेबाक हेतु घरमे अयलीह। लऽ के विदा भऽ गेलीह। नजरि मुसकुराइत हमरापर फेकलनि। मोन भेल कहियनि, तऽ छोड़ि दिअउ साग-ताग। कोनो काज नहि छै। सरिसवक साग नहि खायब की मरि जायब। लीखि देबनि भाइकें गामसँ क्यो आबऽ लागइ तऽ पठा देताह। मुदा जावत् किछु बाजी, प्रभा हवा भऽ गेलीह। चाह एकदम सेरा गेल छल। सेरायल चाहक एक घोंट लेलहुँ। कंठमे काँट उगि गेल रहय। से कने मोलायम भेल।

खिड़कीसँ बाहर तकलहुँ। प्रभा पथियामे साग राखि रहल छलीह। बुझायल जेना दू-तीन सेर किनलनि अछि। बड़ क्रोध भेल। निरर्थक पाइ खर्च करैत रहैत छथि। एत्ते साग लऽ के की हेतै? तैं परसँ एत्ते महगोरिया तरकारीबला। आइ नीक जकाँ मूड़ने हैत हिनका। अपन बहुक संग झगड़ाक गप्प सुना-सुना·····। प्रभा पथिया उठा घरमे आबि गेल छलीह। रहल नहि गेल। तामसे पूछि देलियनि,—एत्ते साग लऽ के की हेतै? कोनो भोज-तोज छै की? अनेरे पाइ खर्च करै छी। प्रभा पथिया राखि कऽ हमरा लग आबि गेलीह।

बूबूक माय सेहो कहने छलीह जे हमरा लेल एक सेर कीनि लेब। तैं कीनलियै। एहि सभमे नहि भेटै छै। अन्टाघाटसँ के आनय? कहि कऽ फेरसँ तुराइ तरमे घोंसियबाक चेष्टा करऽ लगलीह। हमर मोन ओहिना जरले छल। जाह, एखन धरि चाह पड़ले अछि अहाँकें? हऽ···हहऽ कत्ते काले पीबै छिअइ। सेरा कऽ पानि भऽ गेल हैत। कहि कऽ हँसैत प्रभा हमरा लग सहटि अयलीह। हमर मोन किचकिचा गेल। यशोदा भाइकें बिसरि गेलियनि। एकटा झटहा फेकलहुँ।

जाउ ने! एतऽ किए अयलहुँ अछि? तरकारीबलासँ हँसि-हँसिकें गप्प करू ग'ने। हमरा लगमे की राखल छै? बड़े हँसि-हँसि कऽ गप्प करैत छलहुँ। प्रभा भभाकें हँसि देलनि। हमर हाथसँ बलजोरी कपकें छीनि रखैत

बजलीह—लगैए चाह सेराएल छल, मुदा अहाँ गरमायल छी। एकटा बात बुझलियै। हँसिकऽ गप्प कयलापर तरकारीबला सस्तो दैए आ नीक जकाँ तौलबो करैए। देखियौ ने दूइए टके किलो सरिसवक साग देलक अछि। कहि कऽ प्रभा हमर जाँघपर अपन हाथ राखि देलनि। हम एक बेर नीचा राखल कपमे सेरायल चाह दिस तकलहुँ आ तकर बाद प्रभाक प्रभामण्डलमे ओझरा गेलहुँ।

●

मिथिला मिहिर
फरवरी, १९८९

धरती गोल छै...

तपनकें लाज भेलै। डर भेलै। फेरसँ अपन आँखि मूनि लेलक....। मास्कोक एकटा साँझ रहए ओ। सोहाओन साँझ। आठ बाजि गेल रहै। मुदा सूर्य अस्त नहि भेल छलाह। बसंत ऋतु आबि गेल रहए। बर्फ पघिलि गेल छल। रास्ता पेड़ा एकदम साफ भऽ गेल छलै। एकदम धोअल-पोछल। मास्कोक उपनगर प्रेलोसकायाक रास्तापर तीनू संगीक ठहक्का एक बेर गूँजि उठलै। चलैत लोक सभ घूरि कऽ तकलक। किछु मुसकुराएल। एक-दू गोटा हाथ हिलौलक—इंडस्की... इंडस्की....। मनोज, सुधाकान्त आ तपन तीनू संगीकें खुशी भेलै। एहिठामक लोक छनेमे चीन्हि जाइ छै ओकरा सभकें। तीनू संझुका टहलानमे निकलल रहए। कोनियक तीन पेग चढ़ा चुकल छल। मस्त रहए। मस्तीमे गप्पक फुलझड़ी आ हँसीक अनार। होइ छलै जेना चलि नहि रहलए। कनिएँ-कनिएँ उड़ि रहलए। स्वछन्द वातावरण। नोन-रोटीक चिन्तासँ मुक्त आ कोनियकक निशा।

'आह' भाग्य एकरा कहैत छै। एखनो विश्वास नहि होइए जे हम सभ अपन देशसँ एते दूर मास्कोमे छी। लगैए जेना सपना देख रहल छी।' मनोज बाजल तऽ सुधाकान्त फेर हँसि देलकै। सुधाकान्तकें हँसी बड़ लगै छै। सभ बातमे हँसी। अपन देशमे कमसँ कम एते हँसी नहि लगै छलै। हँसैत कहि उठल, 'बड़ बूड़ि छह तों। हरदम सपनाइत रहै छह। एते सपना नहि देखी बाउ।' कहि कऽ फेर ठहक्का देलकै। ताबत् आगूसँ एकटा छौंड़ीकें अबैत देखि लेलक तपन। ओ खाली एही फेरमे रहैए। हरदम छौंड़ी सभकें ठिकियबैत। ओकरे गप्प। वियाह भऽ गेल छै। दू टा धिया-पुता छै। मुदा एतऽ आबि कऽ एकदम कुमार भऽ गेलए। चिर कुमार...।

'रौ, मूर्ख सभ ! निरर्थक सपनामे की बौआइ छें। देखह...देखही... सद्य: सपना आबि रहल अछि। कते कटगर छै मुँह। ऐनमेन जोतखी जीक बेटी पुष्पा सन लगैए। खाली उजरी चाम चढ़ि गेलैए...। पोशाक बदलि गेलैए।'

कहि कऽ तपन गरम साँस बाहर करऽ लागल छौंड़ी खट-खट करैत बगल दने निकलि गेलै। तपन घूमि कऽ ठरल साँस छोड़ए लागल। मनोज खींचि कऽ आगू बढ़ौलकै ओकरा। थोड़ेक दूर आर बढ़ल। बीयरक दोकान लग थोड़ेक भीड़ देखाइ देलकै। किछु हलचल बुझेलै। उत्सुकतासँ लग गेल तऽ तीन चारि गोटा गुत्थम-गुत्था रहए। सभहक देह, कपड़ामे माटि लागल। ठोर आ नाकसँ खून बहैत। सभ पीने बुत रहए। बात की भेल रहै से तऽ नहि बूझि सकल। मुदा ई तथ्य देखि कऽ सभकेँ अपन शहर जरूर मोन पड़ि गेलै। आश्चर्य लगलै एतौ एहिना होइ छै। पी-पा कऽ मारि-पीट····। अचंभित भेल पाछू घूरल तीनू दोस की एककहि बेर हुर्रा····हुर्रा··· कहि कऽ बुढ़बा इबान आबि गेलै। एहि बुढ़बा इबानसँ तीनू गोटा परिचित भऽ गेलए। कतहु-कोनो दोकान लग भेटि जाइत छै ओ। अस्सी तर···। फाटल-चीटल बेढंग ड्रेस पहिरने। लाल टरेस सूर्यास्त सन आँखि आ लाल मुँहपर पसीनाक चुहचुही। एकरा सभकेँ देखिते नाचऽ कुदऽ लगै छै। आइयो नाचऽ लागलै। हुर्रा··· हुर्रा···रूस्की··· इन्डीस्की··· हुर्रा··· हुर्रा···। नाचय-कूदए आ हल्ला करए। सुधाकान्त मनोजकेँ इशारा केलकै। मनोज दोकानमे जा कऽ एक मग बीयर लऽ अनलक। बुढ़बा इबानकेँ देलकै। ओ आर प्रसन्न भऽ गेल। एक साँसेमे पूरा बीयर पीबि गेल। मुँहमे लागल फेन अपन बाँहिसँ पोछलक। दसविदानियाँ कहैत भीड़मे गुम्म भऽ गेल।

तीनू दोसकेँ सेहो बीयर पीबाक इच्छा भेलै? 'चल, एक-एक मग भऽ चलै!' मनोज प्रस्ताव रखलक। असहमतिक कोनो प्रश्ने ने छलैक। दोकानक भीतर ढूकि गेल तीनू गोटा। तीस कोपेकमे एक। बड़का मगमे फेनाएल बीयर। तीनू लऽ केँ मुँहसँ सटौलक। वातावरणकेँ एक नजरि देखलक। सभ बीयर पीबामे मस्त छल। टेबुल पर मालीमे नोन राखल रहै। सुधाकान्तक ध्यान गेलै। देखलक सभ नोन छीटि कऽ बीयर पीबि रहलए। ओकरो आइ मोन भेलै।

एक चुटकी नोन लेलक आ छीटि देलकै। एकटा हलचल भेलै बीयरमे। सुधाकान्त लेलक एकटा चुस्की। आह,··· की बात छै? कहलकै मनोजकेँ 'रौ, लऽ ले मजा। जते लेबेँ···लऽ ले। बाप जनम कहियो बीयर तऽ नहि देखने रहेँ। अपन देशमे एना पीबि कऽ बौअएतेँ तऽ धर्मशास्त्री तोहर बाप घरसँ निकालि दितथुन। वाह, ब्राह्मण देवता। पीने जाऽ····।' कहि कऽ फेर जोरसँ हँसि पड़ल। मनोजकेँ कने नीक नहि लगगै। सुधाकान्तक गप्प। ओहो जड़ि

देलकै, 'हँ, रे बच्चा ! तुलसीक कंठी पहीरनिहार आ टेढ़का चानन लगौनिहार बापक बेटा खूब गप्प छाँट एहिठाम। अपन देश नहि नै छियौ ई। नहि तऽ देबानजी बनल कतहु खाता-बही पसारने रहितें। लऽ ले मजा। गदहा जनम तरि गेलौ।' सुधाकान्त तइयो ठिठिआइते रहलै। तपन दोकानमे बीयर पीबैत एकटा मौगीकें देखैत रहल ! देखैत-देखैत अकस्मात घूमल आ कहि उठल, 'छोड़, नहि ई सभ गप्प…। देखही ई मौगी केहन लगै छै। ऐनमेन हमर गामक मोदिआइन सन मुँह छै एकर। एकदम ऐन-मेन। खाली चमरी छै लाल। कमालकें मैजिक छै रौ।' मनोज सेहो आब ओकर रिसर्चपर ध्यान देलकै। ध्यान दऽ कए बाजल, 'ठीक कहै छें तों। हमरा तऽ एहिठामक कते मौगी आ पुरुख एकदम अपना शहर-गामक बुझाइए। मुँह-कान एकदम मिलै छै। खाली चमरी उज्जर आ लाल छै। पोशाक दोसर ढंगक छै बस।' तावत् ओ मौगी एकरा सभकें अपना दिस तकैत देखि मुसकुरा देलकै। हाथसँ 'हेल्लो' केलकै। लजा गेल तीनू गोटा ! भेलै जे आब ओ मौगी सहटिकें एकरा सभहक लग औतै। बढ़बो केलै ओ। ई सभ चट्टसँ घूमि गेल। जल्दी-जल्दी बीयर खतम केलक। मग राखि केबाड़ ठेलि निकलि गेल। बाहर कने जड़ौन बुझेलै। कालर ठाढ़ कऽ लेलक मनोज कैपसँ कानकें झँपि लेलक। मुदा सुधाकान्त लेल धनि सन…। ओ ओहिना चलैत रहल। किछु दूर आर आगू बढ़ल तीनू गोटा। अगल बगलसँ कखनो एक-दोसराक बाँहि पकड़ने पति-पत्नी वा प्रेमी-प्रेमिका निकलि जाइ।

तपन ठिकियाबऽ लागल। मोन होइ जे ओकरो बाँहिमे जँ आइ कोनो छौंड़ीक बाँहि रहितइ ? मुदा कोनो छौंड़ी दिस बढ़बाक हिम्मति नहि होइ। मनोजकें अपन स्त्री मोन पड़ए लगलै। जे भारत देशमे मिथिलाक एकटा गाममे रहैत छै। एहिठामसँ बहुत दूर बहुत दूर…। काल्हिए ओकर चिट्ठी अएलैए। मनोजक वापस अएबाक प्रतीक्षा कऽ रहल छै। जेठका पाँच बरखक बेठाक दुखीतक समाचार लिखलकैए। हँसी, चौल केलकैए। 'देखब कोनो मेमक फेरमे नहि पड़ि जाएब। सुनै छी ओतऽ बड़ सुविधासँ भेटि जाइ छै। छोटका बाबू कहैत छलाह जे मनोज भाइकें एखन पौ-बारह छनि। जँ चाहथि तँ सभ साँझ कोनो नवकें चुनि लेथि। हमरा नहि नीक लागल हुनकर गप्प। एकदम असद्ध सन…।' एहि असद्ध शब्द पर मनोजकें मोने-मोन हँसी लागि गेलइ। ठोर कने पसरि गेलइ। सुधाकान्त दिस तकलक। कहीं देखि तऽ ने लेलकै। सुधाकान्तकें चुप्प-चाप चलैत देखि आश्वस्त भेल। सुधाकान्तकें अपन बूढ़ बाप मोन पड़ि आयल छलै। भरि जीवन रजिस्ट्री आफिसमे ताइदक काज कऽ कऽ आब अशक्क भऽ गेल छै। सभटा भरोस

सुधाकान्ते पर लगौने रहए। सुधाकान्तो निभरोस नहि केलकै। योग्य बेटा निकलल छै। नीक नोकरी छै। ट्रेनिंगमे एखन छह मास लेल मास्को आएलए। मनोज आ तपन दुनू सहकर्मी छै ओकर। भारतोमे तीनूके बड़ संगितारए। संयोगसँ मास्को सेहो आएल तीनू संगहि। बापक मादे सोचि कऽ सुधाकान्त गम्भीर भऽ गेल छल। माए मरि गेल छै ओकर। बाप असगर रहै छै। बियाह देरीसँ केलक। एहि बेर दुरागमन हेबाक लेल रहै। मुदा मास्कोक दुआरे नहि भऽ सकलै। आब परूँका जा कऽ हेतै।

तपन एक बेर अपन दुनू संगी दिस तकलक। दुनू गम्भीर छलै। ओकरा अनसोंहाँत लगलै। आब तीनू लग आबि गेल रहए। नीचा दए नदी बहै छै। पुलपर आबि तपन ठमकि गेल। पुलक बाद एकटा बड़का डिपार्टमेंटल स्टोर छै। तकर बाद एकटा नीक सनके पार्क बड़ सुन्दर लगै छै एकरा सभके। अक्सर टहलैत-टहलैत पार्क धरि पहुँचि जाइए। पार्कमे बैसि कऽ गप्प लड़बैए··। छौंड़ी सभके ठिकियबैए। हँसी····चौल····करैए। आब नौ बाजि गेल रहै। सूर्य अस्त भऽ गेल छलाह। ठाम-ठामपर उज्जर रोशनी पसरि गेल छल। तपन ठमकि कऽ पूछि बैसल, 'बड़ गुम्म भऽ जाइत गेलै तोँ सभ ? की बात छै ? देश मोन पड़ि गेलौ की ?'

'हँ भाइ, अपनाके बहलौने तऽ रहै छी मुदा कखनहुके मोन कोनादन करऽ लगैए। होइए जे कत्ते दूर आबि गेल छी।' कहि कऽ मनोज चुप्प भऽ गेल। सुधाकान्त सेहो एकदम भावुक भऽ गेल रहए। तपन ! दादा कोना रहैत हेताह ? यदि किछु भऽ गेलनि तऽ हम कोना पहुँचि सकब ? कखनहुके बड़ डर हुअऽ लगैए जेना एक्कहि बेर कलेजासँ सभटा हवा निकलि गेलए।' सुधाकान्तक गप्पपर तपन एकटा ठहक्का लगौलक। एखन हँसबाक ओकरे पारी रहै।

'बूड़ि छैं तोँ सभ ! भावुक मैथिल सभ ! अनेरे अपन मोन घोर कऽ लैत छैं। स्मृतिजीवी नहितन····। लगैए कोनियकक निशाँ उतरि गेलौए। चल कलेजामे हवा भरि दैत छियौ। चल, चल आइ पार्कमे बैसि कऽ बोदकाक एक बोतल खतम करी। आइ बिना बोदकाक काज नहि चलतौ····।' कहि कऽ दुनूके ठेलि देलक तपन। मनोज तऽ खसैत-खसैत बचल। सुधाकान्त खिसिया गेलै। 'बूड़ि तऽ छें तोँ। किदन एकटा कोनियक पीआ देलें। एक्कोरत्ती निशाँ नहि भेल। एकदम बोर···। कहि कऽ सुधाकान्त मुसकुरा देलकै। तीनू संगी भभा कए हँसि पड़ल। वातावरण हल्लुक भए गेल रहए।

डिपार्टमेंटल स्टोरसँ एक बोदकाक बोतल आ पावरोटी, अण्डा, मक्खन लऽ कए ओ सभ पार्कमे प्रवेश कऽ गेल। एकटा अनचिन्हार ललकी फूलक झौंझमे बैसि रहल। बोदकाक घोंटक संग पावरोटीक टुकड़ा, मक्खन ओ उसनल अण्डा चलऽ लगलैक। चलऽ लगलैक गप्प····गप्पपर गप्प··। हँसी····ठहक्का····। बिसरि गेल जे ओ सभ भारतसँ ट्रेनिंग लेबाक लेल एतऽ आएल अछि। बिसरि गेल जे भारतमे नीक पदपर नोकरी करैए। समाजमे इज्जति छै। प्रतिष्ठा छै। अपन समाज छै···· लोकवेद छै····। एहि देशक पाहुन अछि। सभ बिसरि गेल। सभके बिसरि गेल। मोन रहलै तऽ खाली पार्क पार्कक अनचिन्हार फूलक झोंझ, वोदकाक बोतल, पावरोटीक टुकड़ा··। बस··। होश कखन खतम भेलै किछु नहि बुझि सकलै। बैसल नहि रहि सकल ओ सभ। आँखि मुनाए लागल छलै। पड़ि रहल घासपर तीनु गोटा। समय बीतल गेलै। ठंढ बढ़ल गेलै। मुदा तीनू बेहोश पड़ल रहल··।

होश भेलै सभसँ पहिने तपनके। होश की भेलै? क्यो बाँहि पकड़ि कऽ उठा रहल छलै। ककरो हाथ मूड़ी तरमे बुझेलै। आँखि तकलक तऽ सामने एकटा बुढ़ियाके ठाढ़ देखलक। रूसी भाषामे किछु कहि रहल छलै। किछु बुझि नहि सकलै तपन। बुढ़िया दिस तकलक तऽ लगलै जेना भेस बदलि कऽ ओकर माए ठाढ़ होइ। ऐनमेन अपन माए सन बुझि पड़लै आ तपनकेँ लाज भेलै। डर भेलै। फेरसँ अपन आँखि मूनि लेलक···।



भाखा
मार्च, १९८९

ओहि रातिक भोर

रातिक दस बाजि गेल रहैक। अन्तिम बससँ गाम घुरैत हीरा औंघाय लागल छल। भरि दिनक थकनी देहपर सवार भऽ गेल छलैक। जाड़ मासक रातियो बेसी गढ़गर होइत छैक। सौंसे कारी मोसि सन अन्हार...। चाहियो कऽ हीरा मधुबनीसँ जल्दी नहि बिदा भऽ सकल रहय। कचहरीक बाद ओकीलक चक्कर। चक्कर पर चक्कर...। झूरझमान भऽ गेल। सहसा बस रुकि गेल छलैक। पाही गाम छल। किछु लोक उतरल। हड़हड़ा कऽ बस फेर चलि रहलै-ए। चौधरी कम्पनीक बस ....। सभसँ पहिने यैह बस चलौने रहय चौधरी एहि रोडपर। खूब आमदनी भेलैक। पहिने मधुबनीक बारह आना लगैक। आब तीन रुपैया लैत छैक। तीस टा बसक मालिक भऽ गेल-ए चौधरी आब। हीराकेँ मोन छैक जहिया पहिल बेर चढ़ल रहय बसपर। अपन बाबूक सङ। मधुबनी जयबाक रहैक। न्योतामे। ओहि बरख सतमा किलासमे फस्ट कयने रहय ओ। ओकर बाबू गद्‌गद् रहथिन सभकेँ कहने घुरथिन हीराक रिजल्टक मादे। विकास बाबू सेहो रहथि ओहि दिन बसमे। तहिया एम० ए०मे पढ़ैत रहथि। परोपट्टामे तेजगर विद्यार्थी मे नाम रहनि। सभ किलासमे फस्टे करथि। भविष्णु मानल जाथि। भेबो कयलाह। गामक नाम उजागर कयलनि। आई० ए० एस० भेलाह। आब तँ कमिश्नर छथि। मोन पड़ैत छैक हीराकेँ। ओहि दिनुका पहिल बस यात्रा....। बाबू प्रसन्नतासँ कहने रहथिन, विकास बाबूकेँ हीराक रिजल्टक खबरि। गद्‌भद् भऽ बाजल रहथिन, 'हीरा अहीं सभक रस्तापर चलि रहल-ए।' आँखिसँ एक अजगुत सपना जेना चुअल जाइत रहनि। विकास बाबू पीठ ठोकने रहथिन। हीरा रोमांचित भऽ गेल छल। ओहि दिनुका पीठ परक हाथ आइयो धरि मोने छैक। ओहन स्नेहसँ फेर कहियो कयो शाबसी नहि देलकैक। हीराक मादे बाबूक अजगुत सपना बहुत दिन धरि हुनका बहलौने रहलनि।

बी० ए० कयलाक बाद जीविकाक मृगमरीचिकामे अपना सङ बाबूओकेँ टभकौलक ओ। कत्ते आस आ उत्साहसँ बाबू ओकरा लऽ गेल रहथिन

महरानी ओहिठाम। हीराकेँ मोन पड़ैत छैक सभटा… विश्वविद्यालय नबे खुजल रहैक। बहाली होइत रहैक ओतऽ। महारानी साहेबक सिफारिशपर बहाली भऽ सकैत छलैक। महरानी माने भूतपूर्व महराज वीरेन्द्र बहादुर सिंहक स्त्री। महराजक मूइलाक बाद हुनकर उत्तराधिकारिणी, राजे खानदानक एक मंदिरक पुजेगरी रहथिन ओकर बाबू। ईमानदारीक एवजमे अपन बेटा लेल एक छोट-छीन नोकरी चाहैत छलाह। भरि रास्ता राजा खानदानक प्रशंसामे अनेक गप्प कहैत गेलथिन। अपन नोकरीक अनेक अविस्मरणीय प्रसंग सुनबैत गेलथिन। मुदा बाबूक सभ आशा, आकांक्षा भरभरा कऽ खसि पड़लनि। महरानी अपन हीरा जवाहरात बेचबाक लेल देश भरिसँ आयल जौहरी सभसँ भेंट करैत रहलीह। मोल-भाव चलैत रहल। मुदा भिनसरसँ साँझ धरि बैसल अपन निष्ठावान सेवक लेल पाँचो मिनटक फुर्सति नहि भेटलनि हुनका। महरानीक क्यो भातिज बाबूक हाथसँ दरखास्त लऽ फेर दोसर दिन अयबाक लेल कहलथिन। अपन सत्तरि बरखक बूढ़ बापक हताश घुरैत डेग देखि हीराकेँ बड़ ग्लानि भेल रहैक। 'आइ हमरा दुआरे हिनका की-की ने सहऽ पड़ैत छनि? एहन नोकरी लऽ कऽ की?' ओ सोचने छल। आ तहिये निश्चय कयने रहय जे ओ नोकरी नहि करत। कोनो नोकरी नहि करत……। गामक चौकपर पानक दोकान करत ओ। आ हीरा से कयलक। कहुना टाका-पैसाक जोगार कऽ एकटा कठरा बनबा पानक दोकान खोललक ओ। क्रमात् चलऽ लगलैक दोकान। थोड़ेक दिनक बाद पुलकित हीराक बगलमे चाहक दोकान सेहो खोलि लेने रहय। चाह आ पान……। खूब चलऽ लगलैक। गामक लोककेँ आदति पड़ल गेलैक। भोरेसँ भीड़ लागि जाइक। थोड़ेक उधारीक समस्या बनल रहलैक। मुदा तैयो कोनो बेजाय कमाइ नहि भऽ जाइक। गुजर चलि जाइत छलैक। वियाह-दान भेलैक। धीया-पूता भेलैक। सुखसँ दिन बीतल चल जाइक। पुलकित ओकरा सङ मैट्रिक धरि पढ़ने रहैक। तेँ सङीए रहैक ओकर। दुनूमे बड़ मेल। पुलकित अमात रहय आ हीरा ब्राह्मण।

मुदा जाति दुनूक दोस्तीक बीचमे कहियो नहि अयलैक। जहिया अयलैक तहिया तँ कुकाण्डे भऽ गेल रहैक।

बस रूकि गेल छल। गामक चौक आबि गेल रहैक। उतरि गेल हीरा। चौकक सभ दोकान बन्द भऽ गेल छलैक। हीरा अपन कठरा दिस तकलक। आइ छह माससँ बन्द छैक। पुलकितक चाहक दोकान दिस देखलक। ओहिना

जाफड़ी लागल बन्द……। चाहोक दोकान छह माससँ बन्दे छैक। जहिना दुनू दोकान बन्द छैक, तहिना दुनूक बीच बाजाभुक्की……। 'एह! कोन दुरमतिया घेरलकैक ओकरा? किए' अपन देयादबादक उसकौलापर आबि गेल ओ? एहि भोट-तोटसँ ओकरा कोन मतलब छलै'।' हीरा मोने-मोन सोचैत रहै-ए। सोझे उत्तर माथे अपन घर दिस बढ़ैत जाइ-ए। 'बसातमे कनकनी बढ़ि गेल रहैक। दू-सूती मोटका ओढ़ना ओढ़ने रहय हीरा।' मुदा तैयो जाड़ बुझयलैक। सर्द भऽ गेलैक शरीर। झटकारि कऽ आगाँ बढ़ल। दुनू हाथकेँ पेंटक जेबीमे घऽ लेलक। नवटोलिया लग एकटा कोनो कुकूर भुकलैक। हीरा दबारि देलकैक। गामक सभ कुकूर चीन्हि गेल छैक ओकरा। राति-बिराति एही रस्ते अक्सर ओ गामपर जाइए। नवटोलियाक बाद थोड़ेक दूर फाँक पड़ैत छैक, तकरा बाद नवका बनल हाइ स्कूलक खपड़ा बला घर……। ओह, एहि स्कूलकेँ बनेबामे ओ आ पुलकित कत्ते मेहनति कयने रहय! जहिया स्कूलक घर बनैत रहैक जऽन सभकेँ दू बेर कऽ चाह-पान कराबय दुनू गोटा। अपन धीया-पूताकेँ आब एही स्कूलमे पढ़ाओत। गाममे। मुदा जहिना ई स्कूल नहि चलि सकलैक, तहिना दुनूक दोस्तीओ नहि चलि सकलैक। मुखिया भोट दुश्मनी करा देलकैक दुनूमे। मुखिया लेल सुबोध मिसर आ रैमाक सत्तन मंडल उम्मीदवार रहथि। जँ-जँ भोटक दिन नजदीक अबैत गेलैक वातावरण एकदम विषाक्त होइत गेलैक। जातीय कटुता बढ़ैत गेलैक। दुनू जातिक नेता सभ चौकपर जमऽ लगलाह अधिक काल। पुलकित दोकानक चाह आ हीराक पान खूब चलैक। मुदा किछु-किछु जातीय गरमी सेहो चढ़ऽ लगलैक दुनूकेँ। एहि ज्वरमे तपैत चल गेल। वातावरणो एकदम गरम भऽ गेल रहैक। एक दिन बात-बातमे हीरा बाजि देलकैक जे, ब्राह्मणक गाममे कत्तौ राड़ पजियार होअय। सत्तनकेँ की ओकाति छै जे ओ मुखियागिरी करत?' एहिपर पुलकित सहि कऽ रहि गेल रहय। किछु बाजल तँ नहि मुदा बड़ क्रोध भेलैक। सत्तन ओकरे जातिक रहैक।

एहि बातकेँ ओ अपन अपमान बुझलक। एहिना एक बेर पुलकित घृणासँ थूकैत बाजि देने रहैक जे सुबोध मिसर सनक चोर-लुच्चा की मुखिया हैत? बाभन भेने की हेतैं'? बाभनक किरिया तँ एक्को टा नहि छै।' एहिपर हीराक सङ मारि कऽ बैसल। अपन एक नीक दोस्तक सङ भयंकर शत्रुता कऽ लेलक। दुनू दिससँ खूबि मारि भेल रहैक। घृणाक अपूर्व तांडव भेल। थाना-पुलिस भेलैक। हीरा आ पुलकितक सङ दस-बीस गोटाकेँ आर पकड़ि

कऽ लऽ गेलैक पुलिस। भयंकर तनाव भऽ गेल रहैक। सरकारकें चुनाव रोकऽ पड़लैक। मुदा हीरा आ पुलकित एहिमे पिसागेल। तीन मास धरि क्यो जमानतियो नहि करौलकैक। जहलसँ छुटि कऽ आयल तँ कचहरीक चक्करमे, ओकीलक चक्करमे, थानाक चक्करमे समय बीतैत चल गेलैक। जीविका बर्बाद भऽ गेल छलैक। दोकान उखड़ि गेल छलैक। कर्ज बढ़ल गेलैक। हीराकें तँ आमक गाछी बेचऽ पड़लैक। बाबू मरि गेल छलथिन। बाबू जीबैत रहितथिन तँ किन्नहुँ नहि बेचऽ दितथिन। पितामहक लगौल रहनि। पुलकितकें ओहो। सत्तन मण्डलसं कर्ज लेबऽ पड़लैक। बिआयल महींस सत्तनक हाथे बेचऽ पड़लैक। दुनू बर्बाद भऽ गेल छल।

हीरा झटकारि कऽ घर दिस बढ़ल जाइत छल। घड़ी देखलक एगारह बाजि गेल छलैक। स्कूलक गाछ लग एकटा मनुक्खक आकृति बुझयलैक अकस्मात् ओकरा। हीराकें एक छन लेल डर भेलैक। के छी ? जोरसँ बाजल, के छी ? के छी गाछ लग ?' आकृति कोनो जबाब नहि देलकैक। मुदा हिललैक। हीरा दिस बढ़ऽ लगलैक। हीरा रूकि गेल। सावधान भऽ गेल। आँखि गुड़ारि कऽ तकलक। सामनेमे पुलकित ठाढ़ छलैक। हीरा अपनाके तैयार कयलक। थोड़े काल दुनू एक दोसराकें तकैत रहल। हीरा तखन बाजल।

'हमर रास्ता छोड़ह। मारबह की ? मोन नहि भरलहहे।'

—'मोन ? मोनक तँ मारल छी……। आब मारि की करब ? एक बेर मारि केलहुँ तँ……' पुलकितक कण्ठ गद्गदित भऽ गेल छलैक। हीरा ओकर आँखिमे तकलक। मोन कोनादन करऽ लगलैक।

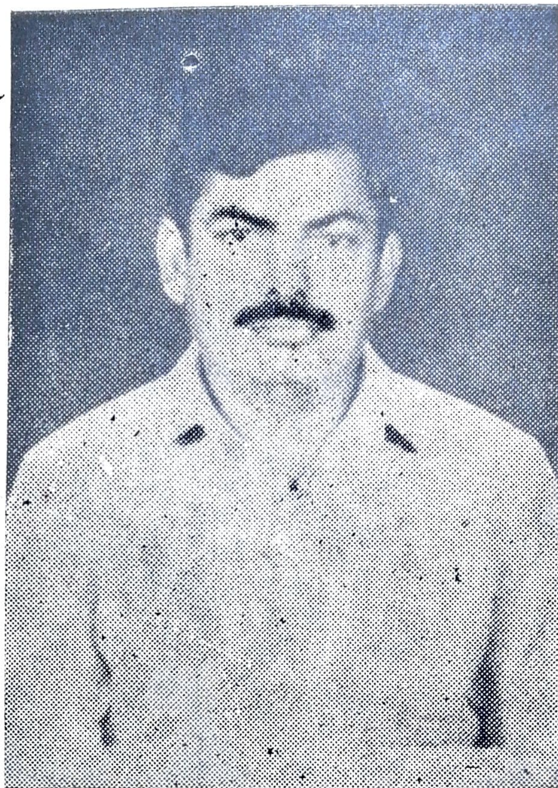
हीराकें लगलैक जेना एहि निशाभाग रातिमे भिनसुरका बसात सिहकि उठलै-ए। बाजल—

'हमरा माफ कऽ देह पुलकित ! मारि तँ हमही शुरू केने रही…। अनेरे…। हम आ तों दू जातिक कहाँ छी। चाह-पान दोकानदार तँ एक्के जातिक भेलहुँ। हमरा क्षमा करह…।' हीराक आँखिमे नोर भरि आएल रहै। दुनू दोस्त एक दोसराक हाथ कसि कऽ पकड़ि लेने रहय।

भोरे लोक देखलक। दुनू अपन-अपन दोकान के फेरसँ साफ-सुथरा कऽ रहल-ए……।

●

वैदेही
मई, १९८९



रचनाकार

.......हीरा कें लगलैक जेना एहि निशाभाग रातिमे भिनसुरका बसात सिहकि उठलैए। बाजल, 'हमरा माफ कऽ दैह पुलकित ! मारि तऽ हमही शुरू केने रही.......। अनेरे.......। हम आ तों दू जातिक कहाँ छी। चाह-पानक दोकानदार तं एक्के जातिक भेलहुँ। हमरा क्षमा करह.......।' हीराक आँखिमे नोर भरि आएल रहै। दूनू दोस्त एक दोसराक हाथ कसि कऽ पकड़ि लेने रहय।.......

—एहि पोथी सँ